नमूने का गाँव
और
मिट्टी के सुखदायक घर

लेखक

एक जानकार

प्रकाशक

हिन्दी-मन्दिर
प्रयाग

दूसरा संस्करण (संशोधित) } जुलाई, १९४० { दाम, एक रुपया

पहला संस्करण : जून, १९३९ : १०००
दूसरा सस्करण : जुलाई, १९४० : १०००

Printed & Published by R N Tripathi at The
Hindi Mandir Press, Allahabad
July, 1940 1000 Copies

भूमिका

यह पुस्तक हिन्दी ही में नहीं, हिन्दुस्तान मे भी अपने विषय की पहली होगी। अँग्रेजी मे तथा हिन्दुस्तान की और भी कई भाषाओं मे पक्के मकानों के बनाने और सजाने की विधियाँ बतानेवाली बहुत-सी पुस्तके है, पर मिट्टी के सुखदायक घर बनाने की विधि बतानेवाली यह पहली ही पुस्तक है जो हिन्दुस्तानी भाषा मे लिखी गई है।

आजकल प्रायः हिन्दुस्तान के हर सूबे की सरकारें और देशी रियासतें भी अपने-अपने गाँवों की हालत सुधारने मे काफ़ी दिलचस्पी लेने लगी हैं। कितनी ही नई स्कीमे बन रही है; कुछ चल भी रही हैं और कुछ निष्फल भी हो रही है। पर अभीतक गाँवों के घरों को दुरुस्त करने की कोई स्कीम कहीं चलती हुई नही दिखाई पड़ती। अतएव इस दिशा मे इस पुस्तक के लेखक का यह पहला कदम है।

गाँववालों के प्रश्न को उन्हीं की दृष्टि से लेना होगा, तभी उन पर कोई स्कीम सफल हो सकेगी। जैसे, ग़रीब मज़दूरों के महल्ले मे स्वास्थ्य-विभाग का यह नोटिस बँटवाना कि सबेरे खाली पेट घर से न निकलो, उनकी गरीबी पर एक मज़ाक़-सा है। ऐसे ही सुधार की कोई स्कीम, जो गाँववालों के जीवन के ढाँचे मे बैठ न सकेगी, उनके लिये एक बोझ-सी होगी और उसमें उनका सहयोग मिलेगा भी नहीं।

इस पुस्तक में घरों के सुधार के बारे में जो तरीक़े बताये गये हैं, वे गाँववालों के लिये नये नहीं हैं, बल्कि क़रीब-क़रीब उन्हीं के जाने हुये तरीकों और उन्हीं के आसपास मिलनेवाली चीज़ों के इस्तेमाल से उनके घरों के सुधार की तरकीबे नये-ढङ्ग से उन्हें सुझाई गई है। अतएव हमें

विश्वास है कि लेखक की बातों पर वे बड़ी गंभीरता से विचार करेंगे और नतीजा यह होगा कि उनके अन्दर ख़ुद अपने घरों के सुधार की भावना का विकास होगा।

इस पुस्तक के लेखक गाँववालों की रहन-सहन और उनकी मौजूदा ज़रूरियात से अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं, और घर बनाने की कला के भी अच्छे जानकार हैं। उन्होंने देश और विदेश के घरों की बनावट का काफ़ी अध्ययन करके, गाँव के घरों के नये नक़्शे ख़ुद बनाये हैं, जो इस पुस्तक में दिये गये हैं।

उम्मीद है, सरकार और जनता दोनों शीघ्र ही इस विषय को हाथ में लेंगी और यह पुस्तक उनको सहायक होगी।

पुस्तक के अख़ीर में 'आओ और जाओ' की एक कहानी दी गई है, जो हरएक किसान को जाननी चाहिये। यह कहानी किसान को उसके खेत की पैदावार के बढ़ाने में बहुत मदद देगी, और तब वह नया घर बनवाकर उसमें रहने का हौसला अपनी ही जवानी में पूरा भी कर लेगा।

प्रकाशक

सूची

नमूने का गाँव —

चित्रों की सूची

गोसाईं का मन्दिर, बनारस

इसके खम्भों पर हाथ की कारीगरी देखकर दर्शक चकित हो जाते हैं।

कुतुब-मीनार
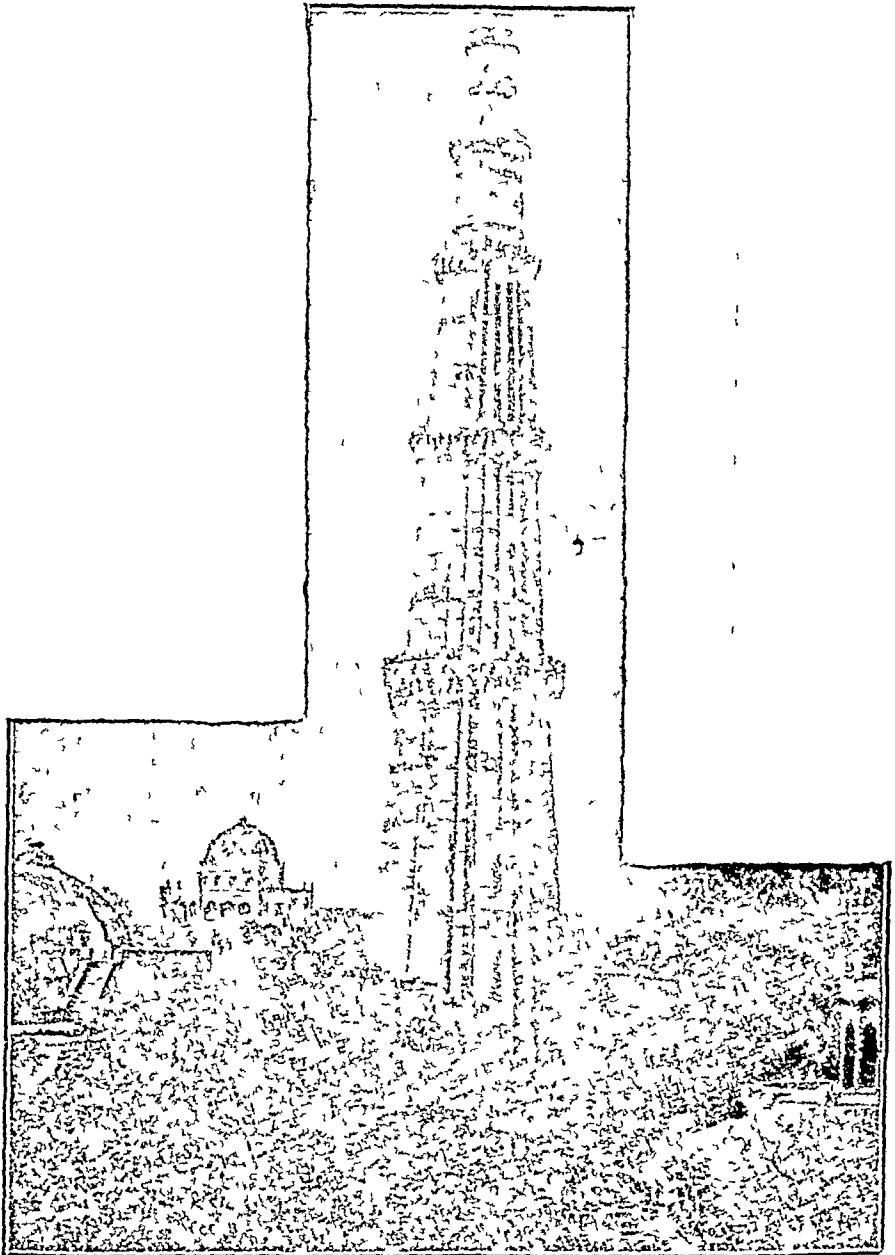
हिन्दुस्तान की कारीगरी का एक संसार-प्रसिद्ध नमूना

नमूने का गाँव

प्रस्तावना

आजकल के हमारे गाँवों की हालत देखकर हरएक समझदार आदमी को दुःख हुये बिना न रहेगा। गाँवों की चर्चा को अलग रखकर अगर हम सिर्फ उनके घरों और झोपड़ों की बात ले तो उनमे से बहुत-से तो ऐसे मिलेगे, जिनसे जानवरों की माँदें और चिड़ियों के घोंसले कही अधिक सुन्दर और सुखदायक होंगे।

यह हम जंगली लोगों की बात नहीं कह रहे हैं, बल्कि उन लोगों की बात कह रहे हैं जिनका सम्बन्ध दो ऐसी बड़ी जातियों से, यानी हिंदू और मुसलमान से है, जिनके पूर्वजों ने ऐसी-ऐसी आलीशान इमारतें बनाकर दुनिया के सामने छोड दी हैं, जिनकी कारीगरी को देखकर आज के होशियार से होशियार इञ्जीनियर भी दाँतों-तले अँगुली दबा लेते हैं। क्या यह खेद की बात नहीं है कि आज उनकी संतान फूस के सडे-गले छप्परों के नीचे, खँड़हरों के अन्दर, घूरे से भी बदतर गन्दे घरों मे और जानवरों से भी बुरी हालत में अपने दिन बिता रही है?

हमारे गाँवों और घरों की हालत देखकर कोई अजनबी आदमी यह सोचे बिना नहीं रह सकता कि इस मुल्क के लोग अभी तक घर बनाने की कारीगरी से वाकिफ नहीं है। पर जब उसे मालूम होगा कि यहाँ के लोग उन कौमों के प्रतिनिधि है, जिन्होंने बड़े-बडे किले, हाथ की कारीगरी से लदे हुये विशाल मन्दिर और ताजमहल आदि मकबरे, कुतुब-मीनार तथा आँखों को लुभानेवाले राजमहल आदि आश्चर्यजनक इमारतें

बनाईं, तथा दिल के भावों को आँखों और ओठों पर उरेह देनेवाली मूर्तियाँ गढ़ीं और चित्र बनाये, तब वह हमारी अधोगति पर एक गहरी साँस लेगा और हमारी मनुष्यता से घृणा करने लगेगा।

हमारे गाँवों और घरों की ख़राब हालत की असली वजह ग़रीबी है। ग़रीबी के कारण हमारे दिलों से सफ़ाई और सुन्दरता की भावना ही निकल गई है। सडे-गले झोपडों के नीचे रहने मे हमे अब लज्जा ही नहीं आती; बिखरी हुई चीज़ों के अन्दर पडे रहने मे हमे घबराहट ही नहीं होती; और लिपे-पुते और सुन्दरता से सजे हुये घरों का शौक ही हमारी नज़रों से ग़ायब हो गया है।

जिस कौम के देवताओं और राजाओं के चित्रो मे उनके एक हाथ में फूल का चित्र बनाकर फूलों के प्रति इतना प्रेम प्रकट किया गया था, आज उसके घरों में फूल कभी साल मे, एक-दो बार, किसी पूजा-पाठ के दिन ही नजर आते हैं। ऐसा भयानक पतन, शोभा-शृङ्गार की ऐसी उपेक्षा, भगवान अब किसी कौम को न दें।

संसार तो बड़े वेग से आगे बढ़ता चला जा रहा है। जो लोग अभी कुछ सदियों पहले जंगलियों की तरह पेड़ों पर या झाड़-झंखाड के झोपड़ों मे रहते थे, आज वे गगन-चुम्बी इमारतों मे, रात में बिजली की रोशनी से जगमगाते हुये कमरों मे, सुख से रहते हैं। सुन्दर-से-सुन्दर और सब प्रकार के सुखों से भरे-पूरे घरों मे उनको रहते हुये देखकर भी हममें स्पर्धा नहीं उत्पन्न होती, इससे प्रकट होता है कि हम भीतर-ही-भीतर बुझ गये हैं।

मान लीजिये कि ग़रीबी के कारण गाँवों के लोग पक्के घर नही बना सकते, पर उनमें सुख और सुन्दरता का शौक हो, तो क्या वे झोपडों को आकर्षक नही बना सकते? हमारे ऋषि-मुनि तो झोपडों ही में रहते थे;

पर उनके आश्रमों की सफ़ाई और सादगी देखकर उनमे टिकने के लिये उनके ज़माने के राजा-महाराजा ललचाया करते थे।

संसार की अनेक जंगली जातियों के लोग फूस के सुन्दर-सुन्दर झोपडे बनाते हैं। उसी तरह हमारे गाँवों के लोग भी सुन्दर आकार वाले फूस के झोपडे बनाकर उनमें रह सकते हैं। पर असल बात यह है कि सदियों से दु:ख भोगते-भोगते वे दु:ख को दुःख ही नहीं समझते; सुख की याद ही उनको नही रह गई है। उनका मन मर गया है और वे जीने के लिये लाचार होकर जी रहे हैं। किसी तरह दिन काटकर, किसी तरह रात काटकर वे अपनी ज़िन्दगी का पड़ाव पूरा कर रहे है। कैसी शोचनीय दशा है !

पर कोई अच्छी गवर्नमेंट अपनी प्रजा की ऐसी हालत बर्दाश्त नही कर सकती। इस वक्त हमारी गवर्नमेंट की इच्छा है कि देश के लोग, ख़ासकर किसान वर्ग के लोग, पढ़-लिखकर, अपनी माली हालत दुरुस्त करके, अच्छे घर बनाकर, और अच्छे गाँव बसाकर, सुख से रहे और अपनी अगली पीढी के सामने सुख से रहने का ऊँचा आदर्श क़ायम करें। इसलिये यह ज़रूरी है कि उनके सामने उनके काम की बातें रक्खी जायँ, जिनपर वे ग़ौर करें और अपना लाभ समझकर उनपर अमल करें। उनके गाँवों और घरों के बारे मे यह पुस्तक इसी ग़रज़ से लिखी गई है।

इस पुस्तक में नमूने का गाँव बसाने और मिट्टी के सुखदायक घर बनाने की बातें बडी खोज और जानकारी से दी गई हैं।

जबतक ग़रीबी है, तबतक गाँवों के लोग पक्के मकान नहीं बना सकते। इससे मिट्टी ही के सुन्दर और सुखदायक घर बनाने के तरीके

इस पुस्तक में लिखे गये हैं। उम्मीद है कि गाँवों के लोग इनसे लाभ उठायेंगे, और हमारी सरकार भी उनको मदद पहुँचायेगी।

हमारी सरकार अगर हरएक ज़िले में और ज़मींदार लोग भी अपनी-अपनी ज़मींदारी में एक-एक नया गाँव बसा दें, तो गाँव का मुरझाया हुआ जीवन फिर पनप उठे, और हमारे गाँव भी दुनिया के अच्छे-से-अच्छे गाँवों का मुकाबला करने लगें।

गाँवों की हालत कैसे बिगड़ी ?

पुराने ज़माने मे, जब इस मुल्क के लोग ज़्यादा ख़ुशहाल और आज़ाद थे, लोग घनी बस्तियों में रहना पसंद नही करते थे और दूर-दूर पर घर बनाकर रहते थे। धीरे-धीरे रहन-सहन मे जिस कदर ज़रूरतें बढ़ती गईं, वे सिमट-सिमटकर नज़दीक बसते गये।

पहले गाँव ज़्यादातर छोटे और लम्बे बसे हुये होते थे, जैसे पटना। जब दुश्मनों के हमले ज़्यादा होने लगे और चोर-डाकुओं से भी लगातार ख़तरा रहने लगा, तब लोग एक दूसरे की मदद के लिये पास-पास आ बसे और गाँव भी गोल होते गये। अपने घरों को भी उन्होंने बिना खिडकियों के और भद्दे-से बना लिये, ताकि किसी दुश्मन या चोर-डाकू को गुमान भी न हो कि उन घरों मे कुछ मालियत हो सकती है। गन्दे घरों मे और हमेशा डरे हुये रहने से उनमे रहनेवालों का दिमाग़ भी नरियल, डरपोक, सुस्त और भाग्य के भरोसे बैठ रहनेवाला हो गया। इस तरह आदमियों की दिमाग़ी हालत बिगड़ते-बिगड़ते उनके घरों और गाँवों की भी हालत बिगडती गई।

सुधार की ज़रूरत

पर जैसी हालत आज है, उससे ख़राब हालत और क्या होगी ? हमें अब यहीं उसे रोक देने की ज़रूरत है। हमारे ऊपर अगली पीढ़ी की

बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है, जिसे हम अपना सुख-दुःख सौंप जायँगे। हमें मुनासिब है कि हम अपने हाथों अपनी हालत ठीक कर जायँ, ताकि अगली पीढ़ी हमारी सुस्ती, लापरवाही और अज्ञान पर तरस न खाये और न दुनिया की उठी हुई क़ौमों के सामने हमारे लिये वह लज्जा से सिर झुकाये। इसलिये गाँववालों को आपस मे सलाह करके, एकमत होकर और एक दूसरे को मदद पहुँचाकर; अपने गाँव को ठीक-ठीक बसा लेना चाहिये। हरएक घर और हरएक गाँव को सरकार कहाँ तक मदद पहुँचा सकती है? इससे हमें अपना बोझ अपने ही कंधों पर उठा लेना चाहिये।

सुधार का तरीक़ा

पर गाँवों का उजाड़ना और बसाना क्या सहज काम है? पहली अड़चन तो यही है कि लोग अपना पुराना घर छोड़ेंगे कैसे? इसके लिये उनको समझाने की ज़रूरत है। जब लोग अपना लाभ समझ जायँगे, तब पुराने गाँव और घर को छोड़ने मे उन्हें आगा पीछा न होगा।

अगर गाँव घना बसा हो तो, कुछ लोगों को उसमे से निकालकर उनका एक गाँव अलग बसा दिया जाय। उनके बसने में जो ख़र्च पड़े, उसे गाँव के बाक़ी लोग चन्दा करके दें; क्योंकि उनके आराम के लिये ही कुछ लोग अपने बाप-दादों का घर छोड़ेंगे। सरकार ने गाँव-सुधार के लिये कई महकमे खोल रक्खे हैं, गाँव के लोगों को उन महकमों से भी सलाह और मदद लेनी चाहिये।

अगर किसी गाँव के लोग पसन्द करते हों, जैसा उन्हें करना ही चाहिये, कि उनका कुल का कुल गाँव नये सिरे से बसा दिया जाय, तो उन्हे पहले सरकार के सामने अपनी इच्छा ज़ाहिर करनी चाहिये; और

वह क्या और कितनी मदद दे सकती है, यह जानकर बाकी के लिये आपस मे इन्तज़ाम करना चाहिये ।

गाँव को नया करने के लिये सबसे पहले यह बात जरूरी है कि उस गाँव के आसपास कोई ऊँची और समथर जगह चुन ली जाय। पसन्द की हुई जगह के मिलने में दिक्क़त हो तो वहाँ के जमींदार और सरकार के अफ़सरों से मदद लेनी चाहिये ।

जगह का सवाल हल हो जाने पर गाँव का नकशा तैयार कराना चाहिये। सम्भव है, सरकार की गाँव-सुधार-सभा ऐसा नकशा तैयार करा दे। फिर उसी नकशे के अनुसार अपने-अपने मकान बनवाकर गाँववालों को उनमें जाकर बस जाना चाहिये। बस जाने के बाद पुराने गाँव को उजाड़कर उसे खेत बना लेना चाहिये। इस तरह लोगों की जायदादें भी कायम रहेगी और किसी को पुराना घर छोडने मे एतराज भी न होगा। हमारा खयाल है कि सरकार को सुझाया जायगा तो नया गाँव बसाने में जो लकडी लगेगी, उसे वह ज़मीदार से दिला देगी ।

गाँववाले मिलकर अगर ईंटें पथवा लें, या स्वयं पाथ ले और पजावे लगाकर उन्हे पका लें, तो अच्छे नमूने का गाँव बसाने मे उनको ज्यादा सहूलियत होगी और खर्च मे भी किफायत हो जायगी ।

ग्राम-सुधार-सभाओं के ज़रिये सरकार को कहा जाय कि वह लकड़ी के चीरने-चिराने का भार अपने ऊपर ले और हरएक घर बनाने वाले को चिरी-चिराई लकड़ी लागत दाम पर दे। हमारा ख़याल है, इस प्रस्ताव को मन्जूर करने मे सरकार को कोई आपत्ति न होगी। आज़माकर देखना चाहिये ।

नया गाँव

नया गाँव किस तरह बसाया जाय, इस मामले मे जानकार लोगों मे भी मतभेद हो सकता है। इससे उचित यह है कि गाँव जहाँ बसाया जाय, उसकी और उसके आसपास की जगह की हालत देखकर पहले नक़शा बनाया जाय। कुशादह जगह हो, जिसमे नया गाँव बस जाने के बाद खेलने-कूदने, मेला या देहाती बाज़ार लगाने के लिये काफ़ी जगह बची रहे, उसके पास ही छायादार पेड़ों के दो-एक बाग़ हों, कुछ दूर पर जानवरों के निकास का जंगल या चरागाह तथा नाला या ताल हों, वह जगह गाँव के लिये निहायत उम्दा मानी जायगी। दलदल, रेलवे लाइन या घने जंगल के नजदीक गाँव नहीं बसाना चाहिये।

अगर ऐसी जगह हो, जैसा हमने ऊपर बयान किया है, तो उसमें सब से ऊँची और चौरस जगह पर गाँव की नींव उस ओर डालनी चाहिये, जिधर से नाले की ओर ढाल हो, ताकि बरसात का और घरों की नालियों का पानी उसी ओर बह जाय।

बसने का पुराना तरीक़ा

पुराने ज़माने के बसे हुये गाँवों मे इस बात का काफ़ी खयाल रक्खा जाता था कि गाँव छोटे-छोटे हों और उनमे एक-से धंधे वाले लोग पास-पास रहे। अब भी ब्राह्मणों के पुराने गाँव अलग होते हैं। जैसे—मिसरौली (मिश्रों की बस्ती), पटखौली (पाठकों की बस्ती), दुबौली (दूबे ब्राह्मणों की बस्ती); इत्यादि। ठाकुरों के गाँव को सिंहौली (सिंहों = ठाकुरों की बस्ती); अहीरों की बस्ती को अहिरौली; चमारों की बस्ती को चमरौटी, केवटों की बस्ती को केवटान, भेंटों की बस्ती को भेंटौली और तुरकों की बस्ती को तुरकौली कहते हैं।

मुख्य-मुख्य पेशेवर भी सब अलग-अलग बसते थे। यह तरीक़ा बहुत ही अच्छा था। पर अब तो सब गड़बड़ हो गया है। जिसे जहाँ जगह मिली, वह वही बस गया है। नतीजा यह हुआ कि ब्राह्मण के पड़ोस मे क़साई, पंडित के पडोस मे ठठेरा, मोची और रँगरेज़ के पडोस में अत्तार या माली, और किसान के पड़ोस मे गड़रिया बस गया है।

नये गॉव के बसाने में इस बात का ध्यान रखना पड़ेगा कि भिन्न-भिन्न पेशेवाले लोग अलग-अलग महल्लों मे बसाये जायँ; ताकि हरएक को अपने पड़ोसी से मदद मिले। ठठेरा अगर किसी पंडित या भक्त के पड़ोस में होगा तो वह रात-दिन ठक्-ठक् लगाये रखकर किसी को भजन नहीं करने देगा।

गाँव का नक़शा

अब हम गॉव के नक़शे पर विचार करेंगे। हमारी राय में गाँव छोटे-छोटे बसाने चाहिये, ताकि उनको आसानी से साफ रक्खा जा सके और हरएक घर के लिए काफ़ी जगह दी जा सके।

हिन्दू-शास्त्रों मे गाँव को धनुष के आकार का बसाने की सलाह दी गई है। यह सलाह उपयोगी जान पडती है। इसके अनुसार गाँव को आधा गोल बसाना गाँववालों के लिये आरामदेह होगा। पर दूसरे मुल्कों में जो नये ढंग के गाँव बसाये गये हैं, वे भी काफ़ी आरामदेह साबित हो रहे हैं। यहाँ हम देशी और विदेशी दोनों तरीक़ों से लाभदायक बातें लेकर गाँव का एक नया नक़शा बनाकर आगे दे रहे हैं!

गॉव का नक़शा तैयार कराके, उसके मुताबिक महल्ले और घरों की जगहें अलग करके, उनकी हद बना देनी चाहिये। घरों के हरएक प्लाट बराबर बनाने चाहियें। उनमें बसनेवाले अपनी रुचि, ज़रूरत और शक्ति के अनुसार छोटे-बडे घर बना लेंगे।

पहले-पहल गाँव के बीचो-बीच चारों ओर से बराबर दूरी पर एक पक्का और बड़ा कुँवा बनवाकर तब आगे का काम शुरू करना चाहिये।

एक गाँव में कितनी तरह के पेशेवर एक साथ रहकर एक दूसरे को मदद पहुँचाते हुये सुख से रह सकते हैं, इसकी सूची आगे दी जाती है।—

किसान	लोहार	जोलाहा	धुनिया
धोबी	नाई	दरज़ी	तेली
वैद्य या हकीम	मज़दूर	धरकार (टोकरी बनानेवाला)	
अहीर	कोइरी	चमार	भड़भूँजा
मोची	बजाज	सोनार	कहार
रँगरेज़	हलवाई	बरतन बेंचनेवाला	माली
पंसारी	गड़रिया	बिसाती	मोदी

गल्ला बेंचनेवाला केवट (कुँवा खोदने और मिट्टी का घर बनानेवाला)
मल्लाह (बाध बनानेवाला)

ब्राह्मणों और ठाकुरों के अब अलग धंधे कुछ नहीं रहे, इससे इन्हें किसानो ही में गिनना चाहिये।

किसानों को गाँव के बिलकुल बाहर की तरफ़ पंचायत-घर के पास जगह देनी चाहिये। क्योंकि उनको और उनके जानवरों तथा उनके खलियानों के लिये खुली जगह की ज्यादा ज़रूरत होती है।

किसान ही इस मुल्क की रीढ़ हैं। इससे किसानों को अधिक से अधिक सुविधायें गाँव में देनी चाहिये। आगे के नकशे में किसानों के घर दूसरों से कुछ बडे बनाये भी गये हैं।

किसानों, बनियों, मज़दूरी पेशेवालों, नाइयों, धोबियों, और हलवाइयों के महल्ले अलग-अलग होने चाहियें। जुलाहे और रँगरेज़ को गाँव के बाहर जगह देनी चाहिये। क्योंकि जुलाहे को ताना-बाना फैलाने

के लिये और रँगरेज़ को कपड़े सुखाने के लिये ज़्यादा खुली जगह की ज़रूरत होती है।

अब नक़्शे को ग़ौर से देखिये :—
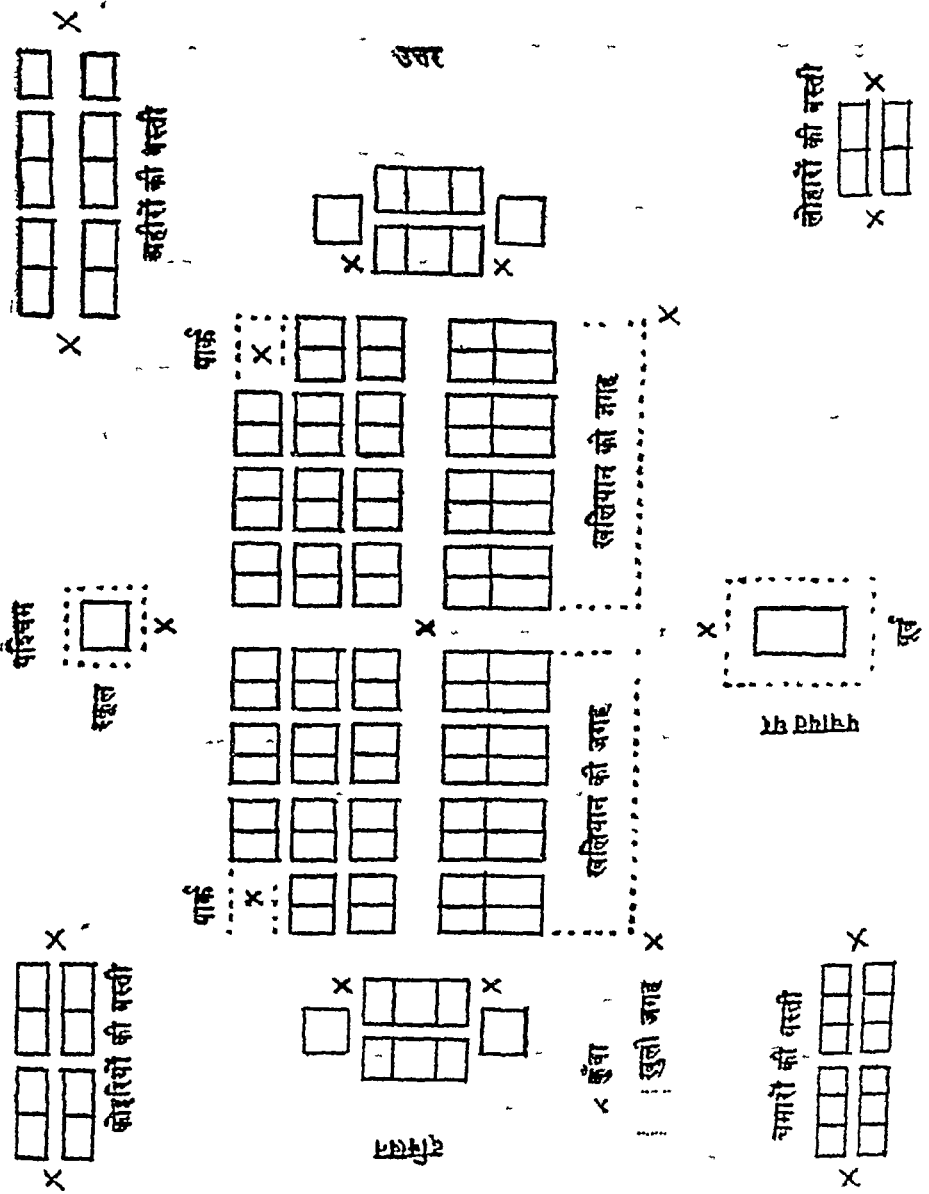
गाँव के बीचो-बीच एक दूसरे को काटती हुई दो सड़कें हैं जो, हरएक ६० फुट चौड़ी हैं। सड़कों के कटान पर एक पक्के कुवें का × निशान है। इस जगह पर कुवाँ होना बहुत ज़रूरी है।

ख़ास बस्ती में कुछ घर ऐसे हैं जो हरएक ४० फुट चौड़े और ६० फुट लम्बे हैं। इन घरों मे तिजारत पेशा के लोग आबाद किये जायँ।

बस्ती के पूरबी सिरे पर कुछ घर ४० फुट चौड़े और ८० फुट लम्बे है। ये किसानों के घर हैं। इनको अधिक जगह की ज़रूरत भी रहती है। इनके हरएक घर के सामने १२० फुट लम्बी और घर के बराबर चौड़ी जगह इनके खलियानों के लिये और दी गई है।

ऐसे × चिन्ह कुँवों के है। कुँवें गाँव के भीतर-बाहर चारों ओर ज़रूरत भर मे लिये काफ़ी तादाद में होने चाहियें। गाँव के चौराहे पर का कुँवा काफ़ी बड़ा और पक्का ही होना चाहिये। बाकी कुँवे यदि पक्के न हों तो उनकी जगत और मुँडेर तो पक्की रखनी ही चाहिये।

गाँव के पश्चिम तरफ लगभग दो सौ फुट के फ़ासले पर स्कूल की इमारत है। उसके पास भी एक कुँवे का चिन्ह है।

गाँव के पश्चिम और उत्तर के कोने पर एक फर्लाङ्ग की दूरी पर अहीरों की बस्ती है। इनके घरों के आसपास इनके जानवरों के निकास के लिये काफ़ी जगह छोड़ देनी चाहिये।

गाँव के पश्चिम और दक्खिन के कोने पर कोइरी लोगों की बस्ती है। ये लोग अपने घरों के पास ही ज़्यादातर साग-तरकारी की खेती करते हैं। इससे इनको गाँव के बाहर जगह दी गई है।

गाँव के दक्खिन और पूरब के कोने पर चमारों के घर हैं। इनके घर औरों की अपेक्षा कुछ छोटे हैं; क्योंकि ये ज्यादातर मज़दूर-पेशा के होते हैं। इनको ज्यादा जगह की ज़रूरत नहीं पड़ती।

गाँव के पूरब और उत्तर के कोने पर लोहारों के घर हैं। इनको असली

बस्ती से इसलिये बाहर रक्खा गया है, कि इनके काम का सम्बन्ध ज़्यादातर आग से होता है।

असली गाँव के दक्खिन तरफ़ घरों का एक गरोह जुलाहे, रँगरेज और धुनिये के लिये है।

असली गाँव के उत्तर तरफ़ भी घरों का एक गरोह है। इसमे घरकार (टोकरी बनानेवाला); माली, कहार, तेली और भडभूँजा को जगह दी गई है। इन घरों की लम्बाई-चौड़ाई कम और ज़्यादा है। इनको ज़रूरत के मुताबिक छोटा-बड़ा किया जा सकता है ?

भड़भूँजे को गाँव के बाहर ही, किन्तु नज़दीक ही जगह देनी चाहिये; क्योंकि भड़भूँजे की ज़रूरत बस्तीवालों को हरवक्त पड़ती रहती है।

गाँव के बीच के चौराहे के पास के घरों में बजाजों, पंसारियों, हलवाई, सोनारों, दर्जियों और लोहे और बरतन के दूकानदारों को जगह देनी चाहिये। ठठेरे को गाँव के बाहर के घरों में बसाना चाहिये; ताकि उसकी ठक्-ठक् से उसके पड़ोस के घरवालों को कष्ट न हो।

इतने बड़े गाँव मे नाइयों के तीन-चार घर ज़रूर होने चाहियें।

कहार और नाई को बस्ती के बीच में आसपास जगह देनी चाहिये।

बिसाती, पटवा और दर्ज़ी को चौराहे के कहीं आसपास घर देना चाहिये।

गाँव के पश्चिमी सरहद पर घरों की जो पंक्ति है, उनके उत्तर और दक्खिन छोर पर एक-एक फुलवाड़ी और उनके बीच में कुँवे होने चाहिये; जहाँ गाँव के लोग सुबह-शाम के वक्त दिल बहला सकें। उन्हीं के पास यदि, ज़रूरत हो तो, मन्दिर भी बनाये जा सकते हैं।

दो घरों से अधिक जुड़े हुये घर न होने चाहिये। अलग-अलग घर रखने से आग लगने का भय कम हो जायगा और हवा और रोशनी भी काफ़ी मिलेगी। इससे एक ब्लाक में दो घर से ज़्यादा न होने चाहियें।

नक़शे मे हरएक गली २० फुट चौडी रक्खी गई हैं। गलियाँ इतनी चौड़ी ज़रूर हों कि लदी हुई बैलगाडी उनमें से गुज़र सके।

स्कूल

स्कूल गॉव के पश्चिम तरफ़ रक्खा गया है। उसके आसपास खेल-कूद के लिये काफ़ी जगह छुटी रहनी चाहिये। स्कूल की इमारत के पास एक बाग़ का भी रहना ज़रूरी है। अगर पहले से न हो, तो नया बाग़ लगा देना चाहिये।

स्कूल का मकान डिस्ट्रक्ट-बोर्ड की तरफ से बनता है। इससे उसका नक़शा अलग बनाने की ज़रूरत नहीं।

दवाखाना

दवाखाना असली गॉव के बीच मे होना चाहिये, जहॉ चारों तरफ़ के लोग सुभीते से पहुँच सकें। गाँव के दवाखाने के लिये एक कोठरी, जो १९ फुट लम्बी और १२ फुट चौडी हो, और जिसके सामने इतना ही बडा बरामदा हो, काफ़ी होगी।

डाकघर

डाकघर भी असली गॉव के बीच मे होना चाहिये। इसके लिये भी दवाखाने के बराबर ही जगह की ज़रूरत होगी।

पंचायत-घर

ग्राम-सुधार के महकमे ने पंचायत घर का एक नक़शा बनाया है, उसी के अनुसार पंचायत-घर बनना चाहिये। पंचायत-घर गॉव के पूरब ओर रक्खा गया है।

पुस्तकालय

पंचायत-घर मे पुस्तकालय का भी एक कमरा होना चाहिये।

वाचनालय

वाचनालय असली गाँव के बीच में, चौराहे के आसपास, होना चाहिये। इसके लिये दवाखाने के बराबर का कमरा और बरामदा काफी होगा। वाचनालय मे कम से कम एक दैनिक, सप्ताहिक और एक मासिक-पत्र आने चाहियें।

मन्दिर और मसजिद

मन्दिर और मसजिद दोनों को गाँव के बाहर जगह देनी चाहिये; जहाँ एकांत हो और गाँव का गुल-गपाडा न पहुँचता हो। मंदिर उत्तर तरफ़ और मसजिद पश्चिम तरफ बनाई जाये।

कुँवें

हरएक दस घर-पीछे एक कुँवा सारे गाँव मे, आम-रास्तों पर, होना चाहिये। हरएक गरोह की वस्ती मे कम से कम एक पक्का कुँवाँ ज़रूर होना चाहिये।

पेड़

जो चौड़ी सड़कें गाँव को चीरती हुई बीचों-बीच गई हैं, उनके बीच मे, सीधी कतार मे, पचीस-पचीस फुट की दूरी पर छायादार पेड़ लगा देने चाहिये। बाकी हरएक किसान के घर के सामने दो-दो या एक-एक पेड़ अवश्य लगाने चाहिये। पेड़ ऐसे हों, जिनके फल, लकड़ी, फूल और पत्ते किसानों के काम आ सकते हों। इससे गाँव मे आने-जानेवालों को सुस्ताने के लिये छाया मिलेगी और गरमी में गाँव के भीतर ठण्डक भी रहेगी।

यूक्लिप्टस के पेड भी इधर-उधर लगा देने चाहिये। हवा साफ़ रखने के लिये यह पेड बहुत उपयोगी माना जाता है।

खलियान

खलियान की जगह हरएक किसान के घर के सामने होनी चाहिये; ताकि वह उसकी हरवक्त रखवाली भी कर सके और उसके काम में भी सहूलियत हो।

बाज़ार

असली गाँव के बीच में दक्खिन तरफ़, सडक के बीचो-बीच मिट्टी का १२ फुट चौड़ा, ५०-६० फुट लम्बा और एक फुट ऊँचा चबूतरा बनवाकर उस पर फ़ूस का छप्पर डलवा देना चाहिये। उसके नीचे हफ़्ते में एक या दो बार बाज़ार लगा करे। बाज़ार से गाँव की तरक्की होती है और गाँव वालों को दूर-दूर की चीजें घर बैठे मिलती रहती हैं।

बाजार हफ़्ते मे दो दिन, दोपहर के बाद, लगना चाहिये।

पार्क या बगीची

बनारस और राजपूताने के बडे शहरों मे शाम के वक्त बगीची जाने का बडा रवाज है। रवाज अच्छा है। हरएक गाँव में दो-एक बगीचियाँ ज़रूर होनी चाहियें, जिनमें शाम और सुबह के वक्त गाँव के लोग आकर दिल बहलायें और नहायें-धोयें भी। हरएक बगीची के बीच मे एक कुँआँ और उसके आस-पास अच्छी फुलवाडी होनी चाहिये।

नालियाँ

गाँव की नालियाँ उस तरफ़ को ढालुवाँ बनाई जायँ, जिधर गाँव भर का पानी किसी तालाब या नाले में बह जाय।

गड्ढे

गाँव के आसपास गड्ढे न होने चाहियें। गड्ढों में बरसात का

पानी जमा हो जाता है और सड़कर बदबू और मक्खी-मच्छर पैदा करता है, जिनसे बीमारियाँ फैलती हैं। किसानों के जानवर भी गड्ढे का गन्दा पानी पीने से कमज़ोर और रोगी हो जाते हैं।

घूर और खाद के गड्ढे

घूर को घर और कुँवे के नज़दीक कभी न रखना चाहिये। हरएक घर के अहाते में, रहने के घर से दूर वाले कोने में, १० फुट लम्बा, ५ फुट चौड़ा और ५ फुट गहरा एक गड्ढा खोदकर उसमें पक्की ईंटें जड़वा लेनी चाहिये। उसी मे घर का कूड़ा-करकट और जानवरों के नीचे की खाद डालते रहना चाहिये। जब वह भर जाय, तब खाद को निकालकर खेत में डलवा देना चाहिये।

जंगल और चरागाह

जंगल और चरागाह की ज़मीन नाले के किनारे हो तो जानवरों को चरने और पानी पीने, दोनों तरह के आराम मिल सकते हैं।

नया गाँव बसाने के बारे में यह साधारण सूचनायें हैं। बहुत-सी बातें गाँव बसाते समय सूझेंगी, उनकी पूर्ति उसी समय की जा सकती है।

मिट्टी के सुखदायक घर

दुनिया में मकान बनाने के हुनर में इतनी तरक्की हुई है और किस्म-किस्म की आलीशान इमारतें इतनी बन गई हैं कि उनके सामने मिट्टी के घर बनाने की चर्चा करते हुये शर्म आती है। पर इस वक्त हमारा मुल्क इतना ग़रीब है कि सबसे पहले उस पर नज़र डाले बिना और उसके सड़े-गले झोंपड़ों और खँडहर-जैसे घरों का सुधार किये बिना आगे बात करने की हम हिम्मत ही नहीं कर सकते।

पहले अपने गाँवों की हालत दुरुस्त करके तब हम अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस, रूस, इटली और जर्मनी आदि उन्नत देशों की इमारतों का स्वप्न देखने में कुछ रस ले भी सकते हैं। अभी उनका ज़िक्र छेड़ें, तो वही कहावत होगी कि—

रहें झोंपड़े में, ख्वाब देखें महल का।

इसलिये जबतक हमारे गाँवों की माली हालत दुरुस्त नहीं हो जाती और पैसों की अधिकता से गाँव वालों के दिलों में सुन्दर खिलौने-जैसे घरों में रहने का हौसला नहीं पैदा होता, तबतक हमें अपने मिट्टी ही के घरों से संतोष करना होगा और उन्हीं को सुखदायक बनाने में हमें लग जाना होगा।

अतएव आइये, पहले हम लोग अपने घरों की हालत पर ग़ौर करें और देखें कि उनको हम कहाँ तक सुधार सकते हैं।

गाँवों में ग़रीबी अब इतनी ज़्यादा बढ़ गई है कि अब उसका हद-हिसाब ही नहीं रहा। बड़ी मुश्किलों से पाई-पाई जमा करके गाँव के

लोग किसी साल अपने खँडहर पर फूस का छप्पर चढ़ा लेते हैं तो फिर कई सालों तक उसको बदलने की नौबत ही नहीं आती। छप्पर सड़-गलकर ऐसा जर्जर हो जाता है कि बरसात मे पानी अगर एक घण्टे बरसता है तो छप्पर सारे दिन अपने मालिक की हालत पर आँसू टपकाता रहता है। रात में अगर पानी बरसा तो ग़रीब किसान चूते हुये झोपडे के एक कोने में दुबककर सारी रात आँखों में काट देता है। कैसी मुसीबत है !

फिर भी वह आदमी की तरह सुनता, समझता और बात करता है और सभ्य लोगों की तरह भले-बुरे कामों की परख रखता है, क्योंकि वह एक बहुत प्राचीन सभ्य जाति का प्रतिनिधि है। सभ्यता उसका स्वभाव बन गई है। क्या यह हृदय को पिघला देनेवाली बात नहीं है कि एक ऊँचे दरजे का स्वभाव रखनेवाला आदमी इस हालत मे रहे !

घरों की बनावट पर विदेशी हुकूमतों का प्रभाव

हिन्दुस्तान इस समय संसार में सब से पुराना आबाद देश है। घर बनाने की कला भी यहाँ की उतनी ही पुरानी है। लेकिन हुकूमत के हज़ारों बरसों के उलट-फेर से कट-छँटकर अब उसने एक खास सूरत पकड़ ली है, जो अब सुखदायक नही, बल्कि दुःखदायक है।

आजकल गाँवों में जो घर बनाये जाते हैं, उन्हे देखकर विदेशी लोग यही समझते होंगे कि यहाँ के लोगों को घर बनाने की विद्या मालूम ही नहीं थी। पर अगर वे हिन्दुस्तान के पिछले कई सौ वर्षों के इतिहास पर ग़ौर करेंगे, तो उनको यह समझने मे देर नहीं लगेगी कि यहाँ के गाँवों के घरों की बनावट पर विदेशियों की हुकूमतों का भी काफी असर पड़ा हुआ है।

हमेशा से यह मुल्क धन-धान्य से ऐसा सम्पन्न था कि लूट-मार के लिये यहाँ लगभग दो हज़ार वर्षों से विदेशियों के हमले बराबर होते रहे

हैं; कुछ विदेशी आकर यहीं बस गये और हुकूमत भी करने लगे थे। उन दिनों चोरों, ठगों और डाकुओं का इतना ज़ोर था कि उनसे बचने के लिये लोगों ने स्वभावतः अपने घरों के आस-पास झाड-झंखाड़, बाँस की कोटें, काँटेदार पौदे और झाड़ियाँ लगाना शुरू कर दिया था।

उस ज़माने में खिडकियों की राह घर के अन्दर ताक-झाँक करके नौजवान लड़कियों को ज़बरदस्ती छीन ले जाने के मामले भी देहातों में आमतौर से होते रहते थे। और उस ज़माने की सरकार भी प्रायः छीनने-वालों ही का, जो उनकी क़ौम के होते थे, पक्ष करती थी। या बदमाशों के डर के मारे उसके पास न्याय के लिए कोई जाता ही न था। इसका नतीजा यह हुआ कि लोगों ने चुपचाप, अपनी खुशी से, अपने घरों को एक ऐसा क़ैदखाना बना लिया, जिसमें गुंडों की नज़र की तो बात ही क्या, हवा और रोशनी के जाने की भी गुंजाइश नहीं रह गई। तभी से उन्होंने बिना खिड़कियों का घर बनाना शुरू कर दिया, और स्त्रियों में परदे की प्रथा जारी कर दी। साथ ही वे डर के मारे ऐसे सिमिटकर बसने लगे कि उनके गाँवों की गलियाँ भी सँकड़ी होती गईं। डाकुओं की पहुँच को रोकने के लिये उन्होंने चौड़ी सड़कें भी काट-कूट डालीं और उन्होंने कोठों के ज़ीने भी इतने सँकड़े कर लिये कि एक आदमी से ज़्यादा उनपर चढ़ ही नहीं सकता; ताकि अगर वह दुश्मन हो तो कोठे पर छिपा हुआ आदमी उसका मुक़ाबला आसानी से कर सके।

अंग्रेज़ी हुकूमत का प्रभाव

डेढ़ सौ बरस से ज्यादा हुये कि हिन्दुस्तान में अँग्रेजी हुकूमत क़ायम हुई, चोरों, ठगों और डाकुओं के गरोह बरबाद कर दिये गये और गुंडों की रोक-थाम के लिये गाँव-गाँव में पुलीस के आदमी तैनात किये गये। तरह-तरह के रोज़गार चले, सड़कें बनीं, रेलें निकलीं, डाकख़ाने खुले, तार

छौड़े और आमद-रफ़्त बेखटके जारी हुई। शहरों मे नये-नये क़िस्म के मकान बनने लगे और अच्छे मकानों में रहने के लाभ भी लोगों की समझ में आने लगे।

पर देहातवालों पर इनका जैसा जल्द असर पड़ना चाहिये था, वैसा नहीं पड़ा। ये लोग अब भी पिछले डरे हुये ज़माने के घर बनाते हैं और वही पुराना दुःख भोगने के आदी बने हुये हैं। अब हुकूमत करनेवाली क़ौम की तरफ से नौजवान लड़कियों को ज़बरदस्ती छीन ले जाने के मामले बिलकुल ही नहीं होते। चोर, डाकू और गुन्डे जेलों मे भर दिये जाते है। पुलीस का इन्तज़ाम पहले की बनिस्बत कही अच्छा हो गया है; सड़के खुली है, लोग सारी रात अकेले चल-फिर सकते हैं। रिआया-पर कोई भी खतरा आया हुआ सुनकर सरकार जल्द से जल्द दौड़कर पहुँच जाती है। रेल और तार से भी काफी मदद ली जाती है। पर गाँववाले अभी इन सुभीतो से बेखबर-जैसे हैं; और न उनपर और न उनके गाँवो और घरो ही पर इसका कुछ असर दिखाई पड़ता है। इसका कारण क्या है?

जहाँ तक समझ मे आता है, एक सबब यह है कि गाँव के लोग अच्छे घरों मे रहने का सुख ही भूल गये है।

दूसरा सबब यह भी हो सकता है कि गाँव के लोग धीरे-धीरे घर बनाने की अपनी पुरानी कला भी भूल गये हैं। पुराने ढर्रे के कारीगरों के बनाये हुये घरों मे आदमी अपनी ही नहीं, बल्कि घर की बनावट के मुताबिक मजबूर होकर रहने लगता है, और दुःख मे, चाहे सुख मे, उन्ही मे अपनी और अपने बच्चों की उम्र बिता देता है।

स्वास्थ्य और स्वभाव पर घर का प्रभाव

लेकिन उन घरों मे रहते-रहते वह अपनी तन्दुरुस्ती ही नहीं, अपना स्वभाव भी खो बैठता है और उसका सुख से रहने का उत्साह मारा

जाता है। धीरे-धीरे वह काहिल और उत्साह-हीन होता जाता है और उसकी माली हालत इतनी कमज़ोर हो जाती है कि वह घर की मरम्मत भी नहीं करा सकता। जानवरों की हालत मे पहुँचकर वह उन्हीं की तरह निराश, अस्त-व्यस्त, बेहिसाब और लड-झगडकर पेट भरने की ज़िन्दगी बिताने का आदी हो जाता है।

अब सोचने की बात यह है कि पुराने मकानों की जगह पर हमेशा नये मकान बनते रहते हैं, इससे अब जो मकान बने, वे कुछ ख़ास बातों को ध्यान मे रखकर, पूरी ख़बरगीरी के साथ क्यों न बनाये जायँ, ताकि कुछ दिनों में गाँव की सूरत बिलकुल बदल जाय।

शास्त्र मे कहा है कि अच्छा घर, सतवन्ती स्त्री और आज्ञाकारी पुत्र गृहस्थ के सच्चे सुख हैं। इनमे घर का नम्बर सबसे पहला है। अतएव घर तो अच्छा होना ही चाहिये।

नये क़िस्म के घर

हम यहाँ नये किस्म के सुखदायक घर बनाने के बारे मे कुछ ख़ास बातें लिखते है। यद्यपि नये प्रकार के घरों में कुछ ख़र्च अधिक बैठ सकता है; पर ऐसे घरों मे रहनेवालों की तन्दुरुस्ती ठीक होगी, वे बीमार कम पडेंगे और वैद्यों और हकीमों की फ़ीस की बचत होगी, वे काम अधिक कर सकेंगे और उसी हिसाब से उनकी आमदनी भी बढ जायगी। हमारा विश्वास है कि सुखदायक घर बनाकर वे कभी घाटे में न रहेंगे।

गाँव के लोग ज्यादातर कच्चा घर बनाते हैं। घर अगर क़ायदे से बनाया जाय तो वह पक्के मकान से ज्यादा टिकाऊ होता है। इसके सिवा वह गरमी मे ठंडा और जाडे मे गरम भी रहता है। यह कच्चे और पक्के मकानों मे रहे हुये तजरबेकार लोग अच्छी तरह जानते हैं। इस गरम मुल्क मे ठंडा घर तन्दुरुस्ती के लिये कितना ज़रूरी है, इस पर बहस की

ज़रूरत ही नहीं है। इससे गाँव में मिट्टी ही के घर बनाये जायँ, यह हमारी ख़ास सलाह है। मिट्टी के घरों की मज़बूती की बात अब दूसरे मुल्कों में भी स्वीकार की जाने लगी है। इसलिये हम गाँववालों को मिट्टी ही के घर बनाने की सलाह देंगे।

घर बनाने का समय

मिट्टी का घर बनाने का सबसे अच्छा समय चैत्र से लेकर जेठ तक है। इन दिनों धूप रोज़-ब-रोज़ तेज़ होती जाती है, जिससे दीवारें जल्द सूखती जाती हैं; और दिन बड़ा होता जाना है, जिससे काम अधिक होता है। और पानी भी शायद ही कभी बरसता है, इससे दीवारों के भींगकर गिर पड़ने का खतरा भी नही रहता।

कुछ लोग जाड़ों में भी मकान बनाते हैं; पर हमारी राय मे बैसाख ही मे मकान बनाना शुरू करना चाहिये। उन दिनों गाँवों के किसान खेती-बारी के कामों से फ़ुरसत पाये रहते हैं और ख़र्च-बर्च के लिये उनके पास अन्न भी रहता है, तथा मज़दूर भी ख़ाली रहते हैं और सस्ते मिलते हैं।

ज़मीन का चुनाव

मिट्टी के घर के लिये जो ज़मीन चुनी जाय, उसके लिए दो बातों पर ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है।—

१—वह आस-पास की ज़मीन से नीची न हो, नही तो उसके आस-पास पानी जमा होकर भीतर-भीतर रसाता रहेगा। इससे घर की नींव तो कमजोर हो ही जायगी, साथ ही घर के अन्दर हमेशा सील भी बनी रहेगी।

२—ज़मीन कड़ी और ठोस हो। बलुवा ज़मीन पर मकान नहीं बनाना चाहिये। गड्ढे पाटकर जो ज़मीन तैयार की जाती है, वह भी कच्चे मकान के लिये ख़तरनाक होती है। अतएव ज़मीन ऊँची, पुरानी और ठोस मिट्टी की होनी चाहिए।

जहाँ घर बनाना हो, उस स्थान पर लगे हुये पेड़-पौधों और झाड़-झंखाड़ को जड़-सहित खोदकर फेंक देना चाहिये और गड्ढों को मिट्टी से भरकर पाट देना चाहिये। बिलों को भी दूरतक खोदकर भर देना चाहिये। गड्ढों और बिलों को कूड़े-करकट से नहीं भरना चाहिये।

तैयारी

घर बनाना शुरू करने के पहले घर के लिये जितनी ज़रूरी चीजें हैं, उन सबको जमा कर लेना चाहिये।

मिट्टी के लिये ऐसी जगह तजवीज करनी चाहिये, जहाँ की मिट्टी में कङ्कड़ न हो और न मिट्टी बलुही हो। चिकनी और लसदार मिट्टी घर के लिये बहुत अच्छी समझी जाती है।

जहाँ से मिट्टी ली जाय, वह जगह घर के पास न हो; क्योंकि वहाँ एक बड़ा गड्ढा बन जायगा, जिसमे बरसात का पानी जमा होकर सड़ता रहेगा और बदबू और बीमारियाँ पैदा करेगा। वह जगह घर से बहुत दूर भी न हो, नहीं तो मिट्टी की ढुलाई में बहुत ख़र्च बैठ जायगा।

अगर कोई पडोसी किसान, जो अपना खेत नीचा करना चाहता है, खेत से मिट्टी लेने दे, तो दोनों ओर लाभ हो सकता है। गहरे खेत मे पैदावार बढ़ जाती है; क्योंकि नीचे की ताज़ा मिट्टी ऊपर आजाती है और चारोंओर के मेड़ों के ऊँचे होने से बरसात में खेत मे डाली हुई खाद भी बाहर बहकर नहीं जाने पाती। यह तो खेतवाले को लाभ हुआ; घर बनानेवाले को मिट्टी की ढुलाई मे किफायत हो जाती है।

घर बनाने के लिये घर की जमीन के पास, जहाँ कुँवा हो मिट्टी जमा कर लेनी चाहिये।

मिट्टी के साथ-साथ बाँस, कड़ियाँ, तरक, धरन, बँड़ेर, दरवाज़ों और खिड़कियों के चौखट, लोहे की कीलें, सीढ़ी, सरपत, सरहरी, मूँज, बाध,

कुँवे से पानी निकालने के सामान, फावड़ा, कुदाल, खुरपा, बाँका और गहदाला आदि भी जमा कर लेना चाहिये। ताकि किसी चीज के लिये दौड़ना न पडे, और न वक्त की हानि हो। चीजों की कमी से मजदूर जितनी देर तक बेकार बैठे रहेंगे, उतनी ही मजदूरी व्यर्थ जायगी और घर बनने में भी देरी लगेगी :

कुँवा

कुँवा भी घर की तैयारी का एक अंग है। पहले से बना हुआ कुँवा अगर दूर हो तो घर का काम शुरू करने से पहले कुँवा खोदवा लेना जरूरी है। देहात में चार-पाँच रुपये मे केवट लोग पानी दिखला देने तक कच्चा कुँवा खोद देते हैं। फिर पाँच-सात रुपये मजदूरी और खर्च करके उसमें चार-पाँच हाथ पानी ओगरवा लेना चाहिये।

घर के पास कुँवा होना बहुत जरूरी है। एक तो घर बनाने में पानी के लिये दूर नही जाना पडेगा और घर बन जाने पर नजदीक होने से घर की स्त्रियाँ भी जरूरत पड़ने पर पानी निकाल लिया करेंगी।

कुँवे के आसपास की जमीन ऊँची और ढालुवाँ होनी चाहिये; ताकि बरसात का और नहाने-धोने का पानी वहाँ न जमा हो; नहीं तो वह सडकर बदबू पैदा करेगा और कई तरह की बीमारियाँ फैला देगा।

कुँवे के मुँह पर ईंटों का एक घेरा, जो हाथ-डेढ-हाथ ऊँचा हो, बना देना चाहिये; ताकि उसमे बच्चे या जानवर गिर न सकें और मैले पानी के छीटे भी अन्दर न जायँ। हो सके तो कुँवे को पक्का ही बनाना चाहिये; क्योंकि कच्चे कुँवे का पानी बहुत शुद्ध नहीं होता। कुँवे के मुँह पर जगत भी बनानी चाहिये। क्योंकि गाँव के लोग फुरसत के वक्त उस पर बैठते, पूजा-पाठ करते और गरमी की रात में सोते भी हैं।

जगत के पास कम से कम तीन फुट चौडा, तीन फुट लम्बा और

एक या डेढ़ फुट ऊँचा एक चबूतरा होना चाहिये। उस पर नहानेवाले नहायेंगे।

जगत और चबूतरा दोनों पर सीमेंट का पलस्तर होना चाहिये।

देहात में अगर खुद पजावा लगाकर उसकी ईंटों से पक्का कुँवा बनवाया जाय तो कुल खर्च मिलाकर दो-ढाई सौ रुपये मे वह बन जायगा।

जबतक पक्का कुँवा बनवाने की सामर्थ्य न हो, तब तक कच्चे ही कुँवे से काम लेना चाहिये।

फुलवाड़ी के अन्दर कुँवा बनवाने से फुलवाड़ी को भी फायदा पहुँचता है।

नक़शा

घर बनाना शुरू करने से पहले उसका नक़शा बना लेना बहुत ज़रूरी है। अक्सर देखा गया है कि घर का नक़शा मजदूरों को ज़बानी समझा दिया जाता है, और वे ज़मीन पर उँगली से लकीरें खींचकर मकान का ढाँचा समझ-समझा लेते हैं। यह गलत तरीका है। घर का नक़शा पेंसिल और रबर की सहायता से, कागज पर बनाकर, उस पर अच्छी तरह गौर करके, तब अपनी मर्जी के मुताबिक घर बनाने का काम कारीगर को सौपना चाहिये।

कौन-सा कमरा कहाँ होगा? जीना किधर से जायगा? नाबदान किधर बनेगा? आँगन बीच में या किनारे कहाँ छोड़ा जायगा? कमरों और आँगन की लम्बाई-चौड़ाई क्या होगी? आदि बातें पहले ही तै कर लेनी चाहियें। सबसे अच्छा तो यह है कि किसी होशियार सब-ओवर-सियर को अपनी ज़रूरत बताकर उससे नक़शा बनवा लेना चाहिये।

घर बार-बार नहीं बनाया जाता, इसलिये इस बात का ध्यान हमेशा रखना चाहिये कि पीछे पछताना न पड़े।

नक़्शा बनाने के लिये बाज़ार मे ख़ानेदार काग़ज मिलता है। चाहे बड़ा पन्ना ले ले, चाहे छोटी कापी, दोनों से काम चल सकता है। एक कापी आने-डेढ़-आने को मिलती है।

घर की नाप हाथ से न करके फ़ुट से करनी चाहिये; क्योंकि हाथ छोटे-बड़े होते हैं, पर फ़ुट की नाप पक्की होती है। हमने इस पुस्तक मे नाप फ़ुटों ही में दी है। बाजार में लकड़ी का फ़ुट, जिसे पटरी कहते हैं, दो पैसे को मिलता है।

सामान और ख़र्च का अन्दाज़ा

जितना बड़ा घर बनाना हो, उसके लिये सब सामान तैयार है, या नहीं, और ख़र्च के लिये ज़रूरत-भर का रुपया है, या नहीं, यह पहले देख लेना बहुत जरूरी है। ख़र्च-भर के लिये रुपया न रहने से घर के पूरे होने में अक्सर देरी हो जाती है और बरसात आजाती है, तब जल्दी करनी पड़ती है; इससे घर का ऊपरी हिस्सा जल्दबाज़ी में, मन के मुताबिक़, अच्छा नहीं बनता, जिसका पछतावा बहुत दिनों तक बना रहता है।

पूरे घर में कितना ख़र्च बैठेगा, इसका मोटा हिसाब तैयार कर लेना चाहिये। ख़र्च के लिये रुपये कम हों, तो जितने के लिये रुपये हों, उतने ही कमरे पहले साल बना लेने चाहिये। बाक़ी अगले सालों मे बनाते रहना चाहिये। पर नक़्शा कुल घर का पहले ही साल बना लेना उचित है।

घर मे जैसा घटिया-बढ़िया सामान लगाया जायगा, उसी के मुताबिक़ ख़र्च भी कम और ज़्यादा लगेगा। हम यहाँ एक साधारण कमरे की तैयारी का मोटा हिसाब देते हैं:—

अगर कोई कमरा भीतर-भीतर १५ फुट लम्बा, ८ फुट चौड़ा और १० फुट ऊँचा हो और खपरैल से छाया जाय तो उसमें सामान और खर्च इतना लगेगा :—

सामान	ब्योरा	दाम
एक बँडेर	१८ फुट लम्बी। अगर इतनी लम्बी मजबूत बँडेर न मिल सके तो दीवारों पर धरन रखकर उसपर लकड़ी के दो टुकड़ों को जोड़कर बँड़ेर लम्बी की जा सक्ती है।	२॥)
एक धरन	१०॥ फुट लंबी।	१।)
६ कड़ियाँ या तरफ	हरएक ६ फुट लम्बी।	२।)
८ टुकड़े बाँस के	हरएक ६ फुट लम्बे।	।=)
७० टुकड़े मूठे के	हरएक १६ फुट लम्बे, मै मज़दूरी।	३)
२ पंसेरी मूँज	मूठे बाँधने के लिये।	॥)
२ बोझ सरपत	मूठों के ऊपर फैलाने के लिये।*	१)
खपड़े		१॥)
नरिया		१॥)
खपड़े की छवाई	ठीके पर	२)
६ बाँस	कमर-बस्ता और मुखाही के लिये।	१॥)
६०० ईंटे	ओलती के खपड़े के नीचे दोहरी क़तार में देने के लिये।	४)

---

* सरपत के बदले अरूसे के डंठल भी बिछा दिये जाते हैं, उनमें दीमक नहीं लगते।

दीवारों की उठवाई	ठीके पर; इसमें मिट्टी की ढुलाई आदि शामिल है।	१०)
बढ़ई और लोहार की मज़दूरी		२)
कील-काँटे वग़ैरह		।)
दो खिडकियाँ, मै पल्ले के		६)
दो दरवाज़े ”		१०)
पलस्तर, गोबरी और लिपाई की मज़दूरी		१)
	कुल ख़र्च	४०॥=)

एक कच्चे कमरे के लिये ४०) कुछ ज़्यादा मालूम होता है। पर इतना ख़र्च तब लगेगा, जब हरएक चीज़ का दाम दिया जायगा। देहात में ८-१० रु० में कोई एक बड़ा पेड़ ख़रीद लेने से लकड़ी का कुल ख़र्च निकल आता है। और सरपत, सरहरी रहठा और मूँज वग़ैरह किसान के घर में रहते ही हैं। कोई चीज़ नहीं होती, तो उसे वह दूसरे किसानों से सस्ते दामों पर पा भी जाता है। सिर्फ़ खपड़ा-नरिया और ईंटे उसे ख़रीदनी पडती हैं। और घर उठाने और छाने तथा खिडकियों और दरवाज़ों की बनवाई की मज़दूरी उसे देनी पडती है। इस हालत में ३० या ३५ रुपये मे एक कमरा बन जायगा।

और जब कई कमरों वाला बडा घर बनाया जायगा, तब ख़र्च का औसत और भी कम पडेगा। क्योंकि तब हरएक कमरे की चारों दीवारें नहीं बनानी पडेगी; और छवाई, पलस्तर और गोबरी के ख़र्च मे भी बचत होगी। अगर ३०) फी कमरा औसत रख लिया जाय तो ८, ६ कमरों वाला घर ढाई सौ रुपये मे तैयार हो सकता है। लेकिन यह तभी मुमकिन है, जब घर बनवाने वाला हरएक चीज़ को किफ़ायत से ख़रीदे और थोक ख़रीदे और मज़दूरों के साथ लगा रहे।

ठीका और अमानी

दीवार की उठवाई ठीके पर हो, तो इस प्रकार ख़र्च बैठेगाः—

शहर के पासवाले देहात में एक रुपये मे चार हाथ लम्बी, सवा हाथ चौड़ी और चार हाथ ऊँची दीवार ठीके मे उठा दी जाती है। इस हिसाब से लगभग १०) में १५ फुट लम्बे और ८ फुट चौडे कमरे की दीवारें उठ जायँगी। शहर से दूरवाले देहात मे एक रुपये मे सात-आठ हाथ लम्बी, सवा हाथ चौड़ी और चार हाथ ऊँची दीवार तक उठा देते हैं। इस हालत मे और भी कम खर्च में दीवारे बन जायँगी।

अगर मज़दूर रखकर अमानी पर दीवारे उठाई जायँगी, तो एक मिट्टी बनानेवाला, एक पानी देनेवाला, दो मिट्टी ढोनेवाले और एक छोपनेवाले को चार आने और बाक़ी मज़दूरों को तीन आने फ़ी मज़दूर मज़दूरी दी जाती है। इससे १) रोज का ख़र्च बैठेगा। इनके सिवा इनसे काम लेनेवाला एक आदमी इनके पास और भी रहना चाहिये, जिसकी मज़दूरी नही बाँधी जाती

अमानी का काम ठीके के काम से मजबूत तो ज़रूर होता है, पर ज़रा महँगा पडता है। अगर चौकसी रखने वाला आदमी होशियार हो, तो जहाँतक हो सके अमानी ही में काम कराना चाहिये। क्योंकि काम घर के मालिक की देख-रेख मे और उसकी रुचि के मुताबिक होता है। और अगर काफ़ी देख-भाल रक्खी जाय तो ठीके से कुछ सस्ता भी पड सकता है।

घर का ढाचा

यह कहा जा चुका है कि घर बनाने की विद्या हिन्दुस्तानियों को बहुत पुराने ज़माने से मालूम है। दुनिया मे सबसे पहले आर्यों ने घर बनाने का तरीक़ा ईजाद किया, और उसको काफ़ी तरक्क़ी पर पहुँचाया

था; जब कि दूसरे मुल्कों के लोग भद्दे-भद्दे झोपड़ों में रहा करते थे।

मत्स्यपुराण में लिखा है कि 'भृगु, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वकर्मा, मय, नारद, नग्नजित्, विशालाक्ष, पुरन्दर, ब्रह्मा, कुमार, नन्दीश्वर, शौनक, गर्ग, वासुदेव, अनिरुद्ध, शुक्र और बृहस्पति, ये अठारह घर बनाने के शास्त्र के आचार्य माने जाते हैं'। इनमें से हरएक का एक-एक ग्रंथ है, जिनमे क़िले, तथा राजा से लेकर ग़रीब तक के महल और झोपड़े और तरह-तरह के छोटे-बड़े घर बनाने के तरीके विस्तार के साथ लिखे गये हैं। अग्नि-पुराण, बृहत्संहिता, गरुड़-पुराण आदि ग्रन्थों मे भी घर बनाने की विद्या का वर्णन किया गया है।

पुराने तजरबों के अनुसार घर के पूर्व मे आने-जाने का दरवाज़ा, घर के सामने मन्दिर, पूर्व मे नहानी, अग्नि-कोण में रसोई-घर, दक्षिण में सोने के घर, पश्चिम में खाने का घर, वायु-कोण में भण्डार-घर, उत्तर मे सामान-घर, वायु-कोण में गोशाला, पश्चिम में पानी-घर, दक्षिण में अतिथि-घर, अग्नि-कोण और पूर्व के बीच मे दही-घर, दक्षिण और नैऋत्य-कोण के बीच में पाख़ाना बनाना चाहिये। सूतिका (ज़च्चा)-घर नैऋत्य-कोण में बनाना चाहिये।

रोदन-घर

पुराने घरों में एक रोदन-घर भी होता था, जिसमें परिवार की किसी स्त्री को कोई कष्ट होता था, तो वह उसमें जा बैठती थी, और घर का मालिक या मालकिन उसके कष्टों को सुनते और उनका उपचार करते थे।

आँगन और दरवाज़े

हमारे आचार्यों का मत है कि:—

जिस घर का आँगन और दरवाज़ा पूरब होता है, उनमें धन की बढ़ती होती है।

जिस घर में किसी तरफ़ आँगन नहीं होता, उसमें सुख बढ़ता है।

जिसमें दक्षिण की ओर आँगन और उसी ओर दरवाज़ा भी होता है, उसमें विजय मिलती है।

जिस घर में पूर्व और दक्षिण दोनों ओर आँगन और दरवाज़े होते हैं, उसमें स्त्री की मृत्यु हो जाती है।

जिस घर में पश्चिम ओर आँगन और उसी ओर दरवाज़ा भी होता है, उसमें धन का नाश होता है।

जिस घर में पूर्व और पश्चिम दोनों ओर दो आँगन और दो दरवाज़े होते हैं, उसमें पुत्र और पौत्र की वृद्धि होती है।

जिस घर में दक्षिण और पश्चिम दो दरवाज़े और दो आँगन होते हैं, उसमें धन बढ़ता है।

जिस घर में पूर्व, पश्चिम और दक्षिण तीनों ओर तीन आँगन और तीन दरवाज़े होते हैं, उसमें भोग की वृद्धि होती है।

जिस घर का दरवाज़ा और आँगन उत्तर होता है, उसमें लड़ाई-झगड़ा बहुत होता है।

जिस घर में पूरब और उत्तर दो दरवाज़े और दो आँगन होते हैं, उसमें रहनेवालों को सब तरह के कष्ट होते हैं।

जिस घर में दक्षिण और उत्तर दो दरवाज़े और दो आँगन होते हैं, उसमें शत्रु का भय रहता है।

जिसमें चारों तरफ़ आँगन और दरवाज़े होते हैं, वह घर सब से अच्छा होता है।

आँगन और दरवाज़ों के बारे में यह पुराना ख़याल है। इसकी सचाई पर हमें तबतक एतबार करना चाहिये, जबतक इसके ख़िलाफ़

कोई बात साबित न हो; क्योंकि अनेक तजरबों के बाद ये राये कायम की गई होंगी।

कमरे

घर में कुल कितने कमरे और वे कितने लम्बे-चौड़े होने चाहिये, यह उस घर में रहनेवाले परिवार की जन-संख्या पर निर्भर है। अगर किसी परिवार में एक गृहस्थ, उसकी स्त्री और उसके माता-पिता ही हैं, तो रसोई-घर, भंडार-घर, नहानी और पाखाने आदि के सिवा रहाइस के लिये उसे केवल दो ही तीन कमरे और चाहिये—एक माता के लिये और दो स्त्री के लिये। घर में एक कमरा स्त्री के अधिकार में अधिक रहना चाहिये; क्योंकि उसकी सन्तान बढ़ेगी तो उसके लिये कम से कम एक कमरा पहले ही से बना रखना चाहिये।

घर के भीतरी ढाँचे के बारे में ध्यान देने योग्य मोटी-मोटी बातें आगे दी जाती हैं।—

देहात में पुरुष लोग घर के अन्दर बहुत ही कम सोते हैं। प्राय किसानों को तो करीब-करीब बारहो महीने खेतों ही में किसी न किसी काम के बहाने बिताने पड़ते है। मज़दूर लोग भी घर के अन्दर सोने में लजाते हैं। इसका एक कारण यह भी है कि देहात के घरों में, उनकी बनावट के कारण, घर के लोगों की आँख बचाकर पुरुष को अपनी स्त्री के के कमरे में जाने के लिये कोई रास्ता ही नहीं होता। घरभर की जानकारी में मर्द बार-बार अपनी स्त्री के कमरे में जाने में लजाता है।

दूसरा कारण यह भी है कि मेहनत-मजूरी करनेवाले मर्द प्रायः स्त्रैण नहीं होते। वे स्त्रियों से बचते रहना भी चाहते हैं। इससे मर्दों के बैठने-उठने के लिये देहात में घर के बाहर अलग बैठक होती है, और वह उचित भी है।

घर एक आँगन से जुडा हुआ हो तो अच्छा। आँगन मे एक तरफ़ रहने के कमरे बनाये जायँ और दूसरी ओर एक कोने मे रसोई-घर और भंडार-घर, और दूसरे कोने मे पाखाना, नहाने का घर और नाबदान बनाना चाहिये।

हरएक कमरे मे ताज़ी हवा के लिये काफ़ी खिडकियाँ होनी चाहिये, और हरएक कमरे मे सूरज की रोशनी किसी न किसी वक्त पहुँचती रहनी चाहिये। यह तभी मुमकिन है, जब घर हवा और रोशनी के आने का ध्यान रखकर बनाया जायगा।

इस सूबे मे प्रायः पूरब और पश्चिम की हवा ज्यादा चला करती है। दक्खिन से शायद ही कभी हवा चलती हो, और उत्तर से भी प्रायः बरसात ही मे कभी-कभी चलती है। अतएव घर उत्तर-दक्खिन लम्बा बनाया जाय, जिससे लम्बाई मे ज्यादा कमरे बिना एक दूसरे की आड मे आये हुये बन सकें, जिनको खिड़कियों की राह ताज़ी हवा और पूरब-पश्चिम की धूप भी मिलती रहे।

सोने के कमरे पूरब और दक्षिण की ओर बनाये जायँ। गरमी के दिनों में दोपहर के बाद जब गरमी बहुत बढ़ जाती है, पूरब के कमरे पश्चिम के कमरों की छाया मे होने से ठण्डे रहते हैं।

रसोई-घर उत्तर और पूर्व के कोने पर होना चाहिये। पाखाना, नहाने का घर, बरतन माँजने की जगह और पेशाब की नाली हमेशा दक्षिण तरफ़ हो; क्योंकि दक्षिण की हवा के न चलने से उनकी बदबू घर के अन्य कमरों में नहीं फैलती।

घर मे आने-जाने के दो दरवाजे होने चाहिये—एक बैठक के पास हो, जो मुख्य द्वार कहलाता है; दूसरा पिछवाड़े की तरफ़ हो, जो वक्त-बे-वक्त या जब बैठक मे मिलने-जुलनेवाले लोग बैठे हों, या घर के अन्दर

अन्न, लकड़ी और दूसरी चीज़ें लाई जाती हों, तब काम आता है। स्त्रियों का निकास भी प्रायः पिछवाड़े ही के दरवाज़े से होता है।

जिनका घर खेत या जङ्गल के पास हो, उनको पाखाना या पेशाब-घर की ज़रूरत नहीं पड़ती। पर गृहस्थ बना सके तो घर के एक कोने में एक पाखाना अवश्य बनवा ले; क्योंकि दिन में किसी वक्त किसी को हाजत हो तो वह उसका इस्तेमाल कर सकता है और जाड़े, धूप और बरसात के वक्त बाहर जाने की दिक्कतों से अपना बचाव कर सकता है।

इसी तरह नहाने का भी एक घर होना चाहिये। इस गर्म मुल्क में लोग प्रायः खुली हवा में नहा लेते हैं, इससे नहाने के घर की ज़्यादा आवश्यकता नहीं पड़ती; पर खुली हवा में नहाने से सरदी लग जाने का डर रहता है और लोग शरीर के सब अंगों को अच्छी तरह खोलकर नहा भी तो नहीं सकते। छोटे बच्चों, बीमारों और स्त्रियों के लिये तो नहाने के अलग घर की बड़ी ही आवश्यकता है। इससे हरएक घर में नहाने का एक कमरा अलग होना बहुत ज़रूरी है।

सोने का कमरा रसोई-घर से दूर बनाना चाहिए; ताकि उसमें धुवाँ न जा सके और रसोई-घर के आस-पास के पानी, मक्खी और मच्छरों से भी उसका बचाव होता रहे।

सोने का कमरा हमेशा उत्तर-दक्खिन लम्बा होना चाहिये, ताकि उसमें पूरब या पश्चिम की ओर सिरहाना रखकर खाट पड सके। सिरहाना उत्तर की तरफ़ करने से नींद कम आती है, खाना ठीक हजम नहीं होता और ख़राब-ख़राब सपने आते हैं, ऐसा बुज़ुर्गों का कहना है।

भण्डार-घर रसोई-घर के पास हो, ताकि रसोई के लिये ज़रूरी चीज़ें नज़दीक ही मिल जायँ और घर के दूसरे कोने तक दौड़-धूप न करनी पड़े।

एक गृहस्थ के घर मे ख़ास खास कमरे कितने और किन-किन ज़रूरतों के लिये होने चाहिये, इसकी एक सूची यहाँ दी जाती है।—

१ बैठक
२ रहने के कमरे
३ भण्डार-घर
४ सामान-घर
५ रसोई-घर और खाना खाने का कमरा
६ प्रसूति (जच्चा)-घर
७ चक्की-घर
८ अतिथि-घर
९ नहानी
१० पाखाना

किसान के घर में गोरू-घर और भूसा-घर भी होने चाहिये।

आगे हरएक घर के अलग-अलग वर्णन दिये जाते हैं।—

बैठक

हरएक घर के साथ बैठक का एक कमरा अलग होना बहुत ज़रूरी है। जगह की कमी हो तो बैठक को असली घर साथ जुड़ा हुआ रखना चाहिये और अगर घर के सामने काफ़ी खुली जगह हो, तो बैठक अलग बनानी चाहिये।

बैठक अगर चारों तरफ़ से खुली बन सके तो बहुत सुन्दर है; नहीं तो दो तरफ तो अवश्य ही खुली रहे, ताकि उसमें हवा के आने-जाने की काफ़ी गुञ्जाइश हो और खिडकियों से उसकी सुन्दरता भी तो बढ़ जाती है।

बैठक को घर से अलग बनाना हो तो घर के असली दरवाज़े के ठीक

सामने उसे कभी न बनाना चाहिये; क्योंकि इससे घर में आने-जानेवालों को असुविधा होती है। उसे एक कोने में बनाना चाहिये, जिससे हवा और रोशनी के लिये रुकावट न पड़े।

बैठक को घर के साथ जुड़ा हुआ रखना हो तो बड़े दरवाज़े के पास का कोई कमरा चुन लेना चाहिये और उसमें बैठक के लिये ज़रूरी सामान रख लेना चाहिये।

बैठक कितनी लंबी-चौड़ी हो, यह उस परिवार और उसके मिलने-जुलनेवालों की संख्या पर निर्भर है।

साधारण बैठक १८ फुट लंबी और १२ फुट चौड़ी ठीक समझी जाती है। लंबाई उत्तर-दक्खिन होनी चाहिये, ताकि बैठक में पूरब और पश्चिम की दीवारों में काफ़ी खिड़कियाँ रक्खी जा सकें और पूरब या पश्चिम तरफ़ सिरहाना करके उसमें कई खाटें भी पड़ सकें।

बैठक की पूरब और पश्चिम की दीवारों में अगल-बगल दो खिड़कियाँ रखकर बीच में एक दरवाजा रखना चाहिये। दो दरवाज़े न रखने हों तो एक दीवार में एक दरवाजे के बदले एक खिड़की और बढ़ा देनी चाहिये।

उत्तर तरफ खुली जगह हो तो एक खिड़की उधर भी दीवार के बीचो-बीच लगा देनी चाहिये।

अगर उत्तर तरफ बैठक का दरवाजा पड़ता है, तो भी कुछ हर्ज की बात नहीं है। उत्तर दरवाजा पड़े तो दक्खिन की दीवार में एक या दो खिड़कियाँ होनी चाहिये। जाड़ों में दक्खिन से घर के अन्दर धूप आती है। ऐसी हालत में बैठक की कोठरी उसकी किसी खाली दीवार से जुड़ी होनी चाहिये।

दक्खिन की दीवार में कोई खिड़की न हो, बल्कि उसके स्थान पर

लोटा, गिलास, कलम-दावात, काग़ज़, किताबें या लालटेन रखने के लिये खुली अलमारियों की तरह के दो दराज़ रखने चाहियें।

बैठक की छाजन फूस की हो तो मोटी तह का छप्पर रखना चाहिये। खपरैल हो तो वह छप्पर से सुन्दर ज़रूर दिखेगा, पर गरमी में वह फूस के छप्पर-जैसा ठण्डा न रहेगा।

बैठक की ओलतीवाली दीवार ८ फुट ऊँची हो तो पाख, जिन पर बड़ेर रक्खी जायगी, १२ फुट ऊँचे पर होने चाहियें।

दक्खिन तरफ़वाली दीवार से मिली हुई एक कोठरी भी होनी चाहिये; जिसमें बैठक में जरूरत पर काम आनेवाले सामान—जैसे दरी, कालीन, टाट, चटाइयाँ, मेज़, कुरसियाँ, पलँग, चौकी, तख्ता, तिपाई, लालटेन तथा गाने-बजाने के सामान, जैसे ढोलक, मजीरा, सितार, तानपूरा और हारमोनियम आदि रक्खे रहें।

बैठक से घर के मालिक की रुचि और उसके वैभव का पता चलता है।

ख़र्च की गुञ्जाइश न हो तो चारोंओर खुली हुई छप्पर की बैठक मिट्टी के खंभों या लकड़ी की थूनों पर बना लेनी चाहिये।

बैठक का फर्श आसपास की ज़मीन से कम से कम एक फुट ऊँचा ज़रूर होना चाहिये।

रहने के कमरे

घर में रहनेवालों की संख्या के मुताबिक़ रहने के कमरे बनाने चाहिये।

एक स्त्री के लिये दो कमरे ज़रूर होने चाहियें। एक सोने और फ़ुरसत के वक्त बैठने-उठने के लिये, दूसरा उसका निजी सामान, जैसे बक्स और पेटारे आदि रखने के लिये।

बक्स आदि रखने की कोठरी बहुत बड़ी न होकर अगर ८ फुट लम्बी और ८ फुट चौड़ी हो तो काम चल जायगा।

सोने और बैठने का कमरा १२ फीट लम्बा और ८ या १० फुट चौडा होना चाहिये। इसमें दो पलँग आसानी से पड़ जायँगे और बीच मे कुछ जगह ख़ाली भी रहेगी। अगर स्त्री के बच्चे हों तो रात मे उनकी खाटे खाली जगह मे बिछा दी जा सकती हैं।

अगर ज़्यादा जगह की गुञ्जाइश न हो तो एक व्यक्ति के लिये १० फुट लम्बा और ८ फुट चौड़ा कमरा भी काफ़ी होता है।

रहने के कमरे रसोई-घर से हटकर होने चाहियें, ताकि उसमें रसोई-घर का धुवाँ न भर सके।

रहने के कमरे घर के कोनों पर होने चाहियें, जिससे हवा और रोशनी उसमें बिना किसी रुकावट के आती-जाती रहे।

रहने के कमरे मे आमने-सामने कम से कम दो, नहीं तो चार खिड़कियाँ ज़रूर होनी चाहियें।

सामान की कोठरी मे एक ही दरवाज़ा रहे, जो रहने के कमरे में खुलता हो। रहने के कमरे को बग़ल के किसी कमरे से जोडना हो तो दो दरवाज़े, नहीं तो एक ही दरवाज़ा रखना चाहिये।

बग़ल के कमरे से कमरा जुदा रखने मे एक दोष यह है कि एक कमरे की बात दरवाज़े की दरार से होकर दूसरे कमरे में सुनाई पड़ती है। और बग़लवाले कमरे मे रहनेवाले को प्रायः यह जानने का शौक़ भी होता है कि दूसरे कमरे में क्या बातें हो रही हैं, और वह बन्द दरवाज़े की आड़ में खड़ा होकर प्रायः सुनता भी रहता है। इससे उसकी आदत ख़राब हो जाती है और कभी-कभी इस सुना-सुनी से घर मे कलह भी पैदा हो जाता है।

बग़ल के कमरे को दरवाज़े से जोड रखने मे एक लाभ भी है, कि कभी ज़रूरत पडी तो दोनों कमरों को एक ही आदमी काम मे ला सकता है।

खिड़कियाँ जहाँतक हो सके पूरब, पश्चिम और उत्तर की दीवारों मे लगाई जायँ। अगर घर के दक्खिन तरफ खुला मैदान या गली हो, तो उधर ही लगा देना चाहिये।

भण्डार-घर

भंडार-घर उस घर को कहते हैं जिसमे किसान अपने सालभर के खाने-पीने का सामान एक जगह जमा करके रखता है। किसान के घर में भंडार-घर बहुत जरूरी घर है। इसे घर के बीच मे बनाना चाहिये। १५ फुट लंबा और १२ फुट चौडा भंडार-घर मामूली तौर पर अच्छा समझा जायगा। इसमे टाँड़ रक्खे जायँ, तो अच्छा। उन पर बोरों में भरकर ग़ल्ले तथा गुड, चीनी, सिरका, अचार और खटाई के मटके रक्खे जा सकते हैं।

भंडार-घर मे एक ही दरवाजा काफी होता है। अगल-बगल खिड़की देने की गुञ्जायश न हो तो, छत के पास आमने-सामने दो छोटे-छोटे रोशनदान ज़रूर देने चाहिये, जिनसे घर के अंदर की हवा और गरमी बाहर निकलती रहे और अँधेरा भी कम रहे।

भंडार-घर अगर बडा हो और आँगन की ओर उसमे बरामदा पडता हो तो उधर एक या दो बड़ी खिडकी ज़रूर रखनी चाहिये। खिड़कियों के पास ही आटा पीसने और दाल दलने की चक्की और धान कूटने के लिये ओखली भी रखनी चाहिये; ताकि भंडार-घर मे बैठकर स्त्रियाँ घर-खर्च के लिये आटा-दाल वग़ैरह ख़ुद तैयार कर लिया करें।

भंडार-घर का फर्श ज़रूर पक्का बनवाना चाहिये। जगह की कमी हो

तो, गल्ला रखने के लिये चार-पाँच फुट गहरा और इतना ही लंबा-चौडा हौज जमीन के अन्दर बनवा लेना चाहिये। उसमें बीज वग़ैरह, जिनकी ज़रूरत साल मे एक ही दो बार पडती हो, रखकर उसे बंद करवा देना चाहिये।

सामान-घर

घर-गिरस्ती के कामों मे कुछ ऐसी भी चीज़े होती है, जिनकी ज़रूरत रोज़ाना नहीं पड़ती; जैसे ब्याह-शादी मे काम आने वाले सामान, रसोईं-घर के फालतू बरतन, दरी, गलीचे, पीढ़े और तख्ते इत्यादि। ये चीज़े इधर-उधर बिखरी हुई न रहे, इसलिये इनका एक घर अलग रखना चाहिये। इससे घर मे सफाई भी रहेगी और कोई चीज़ खोई भी न जायगी।

सामान-घर दो होने चाहिये—एक घरेलू चीज़ों का, दूसरा खेतीबारी के औज़ारों का। खेतीबारी के औज़ारों रोज काम खतम होते ही सामान-घर में रखवा देने चाहिये। सामान-घर मे दो-तीन टाँड़ रखने चाहिये। सामान-घर कम से कम ८ फुट लम्बा-चौडा होना चाहिये।

रसोईं-घर

रसोईं-घर की लम्बाई चौड़ाई से क़रीब-क़रीब दूनी होनी चाहिये, ताकि एक साथ घर के कई लोग बैठकर खा सकें। दिन मे सब लोग अलग-अलग कामों में लगे रहते हैं, इससे कम से कम एक बार तो उनको साथ बैठने का मौका मिलना ही चाहिये; और इसके लिये रसोई-घर सब से अच्छी जगह है। एक साथ सबको खिला-पिलाकर स्त्रियों भी जल्द छुट्टी पा जाती हैं। इससे रसोई-घर मे काफ़ी जगह रखनी चाहिये। १२ फुट लम्बी और ८ फुट चौडी जगह एक साधारण रसोईं-घर के लिये काफ़ी समझी जाती है।

रसोईघर के सामने बरामदा रखना बहुत ज़रूरी है। इसमें भी बैठ कर खाना खाया जा सकता है।

रसोईघर में चूल्हे वाली दीवार में दो, और जिधर खुली जगह हो उधर की दीवार में एक या दो खिड़कियाँ होनी चाहिये। चूल्हे के ऊपर धुवाँ निकलने के लिये चिमनी रखना बहुत ज़रूरी है। यह थोड़े ही ख़र्च से बन जाती है और बहुत आराम देती है। चिमनी दीवार में न बनाई जा सके, तो टीन की बनवा लेनी चाहिये और उसका मुँह दीवार में छेद करके या खपरैल के ऊपर निकाल देना चाहिये।

चूल्हे के पास दो दराज की एक खुली अलमारी दीवार में होनी चाहिये, जिसमे नमक, मसाला, घी, तेल, चटनी या अचार रक्खा जा सके।

चौका ५ फ़ुट लम्बा और ५ फ़ुट चौड़ा काफी होता है।

चौका रसोई-घर की फर्श से कम से कम ६ इञ्च ऊँचा हो और उस पर सीमेंट का पलस्तर हो। चौके के एक या दो ओर पतली नालियाँ हों, जो नाबदान से मिली हों, ताकि चौके का पानी उनसे बाहर निकल जाया करे।

चौके की बग़ल में जो दीवार पड़ती हो, उससे लगकर एक या डेढ फ़ुट ऊँचा, डेढ़ फ़ुट चौड़ा और तीन फ़ुट लम्बा एक चबूतरा बनवा लेना चाहिये, जिस पर रसोई के मँजे हुये बरतन रक्खे जायँ।

जगह हो तो, किसी तरफ़ एक चबूतरा इतना ही लम्बा चौड़ा और ऊँचा पानी रखने के लिये भी बनवा लेना चाहिये।

सभी चबूतरे पक्के पलस्तर किये हुये होने चाहियें।

रसोई-घर में कड़ी से कई छींके लटका रखने चाहिये, जिनमें मिट्टी के बरतनों में भरकर दूध, दही, घी, तेल और अचार आदि रक्खे जा

सकें; और चूहों और बिल्ली की पहुँच से दूर भी रहें। छींके इतनी ऊँचाई पर रहें कि आदमी के सिर से न टकरायें।

रसोई-घर में एक बन्द अलमारी भी किसी दीवार में बनवाई जा सके, तो छींके की चीज़ें, शीशे और चीनी मिट्टी के बरतन तथा पापड़ आदि उसमें बन्द रक्खे जा सकेंगे।

सोने के घर और रसोई-घर की हरएक दीवार में एक-एक ताक बनाना चाहिये, जिन पर ज़रूरत के मुताबिक़ लालटेन या दिये रक्खे जा सकें।

खाना खाने का कमरा

अगर हो सके तो रसोई-घर को छोटा बनाकर उसकी बग़ल में खाना खाने का एक कमरा अलग बना देना चाहिये। और दूसरी जगहों में किफ़ायत करके ऐसा करना ही चाहिये। खाने का कमरा अलग होने से उसमे एक तो धुँआ न रहेगा, दूसरे सफ़ाई रहेगी, तीसरे परदा रहेगा। बाहरी आदमी भी उसमे बैठकर खा सकेगा। ऐसी हालत में रसोई-घर ८ फ़ुट लम्बा, ८ फ़ुट चौड़ा और खाना खाने का कमरा १० फ़ुट लम्बा और ८ फ़ुट चौड़ा रखने से काम चल जायगा।

खाने के कमरे में दो दरवाज़े और पूरब-पश्चिम की दीवारों में दो या चार खिड़कियाँ होनी चाहियें।

रसोईं-घर की कोठरी

रसोईं-घर से जुड़ी हुई एक छोटी-सी कोठरी भी होनी चाहिये। यह ५ फ़ुट चौड़ी और ६-७ फ़ुट लम्बी हो तो काम चल जायगा। इसमें आटा, दाल, चावल, घी, तेल, अचार, गुड़ वग़ैरह थोक रक्खा रहेगा। इसमे एक ही दरवाज़ा हो, जो रसोई-घर में खुले। और जिधर खुला हो, उधर एक खिड़की भी रहे, जिससे कोठरी मे उजाला रहे और ताज़ी हवा आती-जाती रहे।

प्रसूति-घर

हिन्दुओं के घरों में एक प्रसूति-घर अलग बना रखने की परिपाटी बहुत पुरानी है। आजकल तो जरूरत होने पर प्रसूता के लिये कोई एक कोठरी चुन ली जाती है; पर पुराने जमाने में घर में एक कोठरी ख़ास इसी काम के लिये अलग रक्खी जाती थी। हमारी राय में इसकी जरूरत अब भी है।

प्रसूतिघर बीच में न होकर घर के किसी कोने में, जिधर घर के लोगों का आना-जाना कम हो तथा हल्ला-गुल्ला न हो, बनाना चाहिये। प्रसूतिघर हवादार और भीतर से काफी सुन्दर होना चाहिये।

८ फुट लम्बा और ८ फुट चौड़ा प्रसूति-घर एक प्रसूता के लिये काफ़ी होगा। इसमें खिड़की न रखकर छत के पास दो रोशनदान दिये जायँ, तो ठीक होगा। खिड़कियों के खोलने और बन्द करने में लापरवाही करने से बाहर की हवा और सरदी-गरमी का असर बच्चे पर पड़ने का भय रहता है। इससे खिड़की न देकर बड़े रोशनदान ही लगाने चाहियें।

प्रसूति-घर में दीवारों पर सुन्दर-सुन्दर चित्र टाँग रखने चाहिये; और सफेदी में कोई हलका रंग मिलाकर दीवारों की रंगीन पुताई भी करा देनी चाहिये।

चक्की-घर

चक्की गृहस्थ के घर की एक खास चीज है। मसल है:—

जोरू न जाँता

खुदा से नाता

हरएक घर में चक्की-घर अलग होना चाहिये, जिसमें दो चक्कियाँ

रहें—एक आटा पीसने के लिये, दूसरी दाल दलने के लिये। भंडार-घर मे भी चक्कियाँ रक्खी जा सकती हैं।

चक्की से औरते ख़ुद आटा पीस लेंगी। इससे आटा भी उनको मन के मुताबिक़ मिलेगा, पिसाई के पैसे भी बचेंगे और मेहनत करने से उनकी तन्दुरुस्ती भी अच्छी रहेगी।

चक्की बहुत भारी नहीं होनी चाहिये। चक्की के बैठके एक फ़ुट ऊँचे होने चाहियें, इससे मेहनत कम पड़ती है।

अतिथि-घर

हरएक किसान के यहाँ मेहमान आते ही रहते हैं। मेहमान के लिये एक ख़ास कोठरी अलग होनी चाहिये। बैठक कोठरी-नुमा हो तो अलग कोठरी की ज़रूरत नहीं पड़ती, क्योंकि देहात के मेहमान सबके साथ बैठक मे रहना पसन्द करते है, और कभी-कभी बहुत नज़दीकी मेहमान घर के मालिक के साथ टिक जाते हैं। फिर भी अतिथि-घर एक अलग बनाया जा सके तो अच्छा है। सम्बन्धियों के सिवा गाँव मे आये हुये दूसरे भले आदमी जैसे, काँग्रेस के नेता, उपदेशक, कथा-वाचक, सरकारी अफसर आदि भी उसमे ठहर सकते हैं, और यह गृहस्थ के लिये बड़प्पन की बात होगी।

बरामदा

बरामदे घर मे कई होने चाहियें। एक बरामदा तो घर के सामने ही होना चाहिये। यह ७-८ फुट चौड़ा हो, जिससे खाट या पलँग उसमे सीधे-सीधे पड़ सकें। इसकी लम्बाई १२ फुट से कम न होनी चाहिये। अधिक हो तो अच्छा।

अगर आँगन घर के बीच में रखना हो तो उसके चारोंओर बरामदे

रखना अच्छा है। जगह कम हो तो तीन ओर, नहीं तो दो ओर ज़रूर रखने चाहियें।

रहने के घर और रसोई-घर के सामने बरामदे की बडी ज़रूरत होती है। रहने के घर के सामने के बरामदे में सो सकते हैं, बैठ सकते हैं और घर के ज़रूरी काम कर सकते हैं। रसोई-घर के सामने के बरामदे मे बैठकर खाने-पीने की चीज़ें साफ कर सकते है, साग-तरकारी काट सकते हैं और खाना भी खा सकते है। कम से कम ५ फ़ुट चौड़ा बरामदा होना ही चाहिये।

बरामदे का फ़र्श अगर कच्चा रखना हो तो उस पर हफ़्ते मे कम-से-कम एक बार गोबर और मिट्टी मिलाकर लिपवा देना चाहिये।

हरएक बरामदे में दरवाज़ों के अगल-बग़ल और पायों पर ताक़ होने चाहिये, जिन पर ज़रूरत पडने पर लालटेन या दिये रक्खे जा सकें।

नहानी

नहानी को संस्कृत मे स्नानागार और अँग्रेज़ी में बाथ-रूम कहते हैं। देहाती घरों मे नहानी रखने की चाल बहुत कम है। मर्द लोग तालाब मे या कुँवे पर नहा लेते हैं। स्त्रियाँ आँगन मे नाबदान के पास कहीं नहा लेती हैं। इससे वे सारे बदन को खोलकर धो नहीं सकतीं और जल्द से जल्द नहा लेने के लिये उतावली भी रहती हैं। घर के मामूली कपडे धोने के लिये भी उनके पास जगह नहीं होती। इसलिये हरएक घर में नहाने-धोने का एक छोटा कमरा ज़रूर होना चाहिये।

नहानी ५ फ़ुट लम्बी और कम से कम ४ फ़ुट चौड़ी हो, तो भी काम चल सकता है। नहानी की फ़र्श पक्की होनी चाहिये। नहानी का

दरवाज़ा दो .फुट चौड़ा हो तो कोई हर्ज नहीं । दरवाज़ा न लगा सके, तो टाट का परदा लटकाने से भी काम चल जायगा ।

नहानी मे रोशनी और हवा के लिये किसी दीवार में छः .फुट की ऊँचाई पर एक छोटी खिड़की डेढ़ फुट लम्बी एक फुट चौड़ी होनी चाहिये।

पाखाना

पाख़ाने के लिये चार .फुट लम्बी और तीन .फुट चौड़ी जगह काफ़ी होती है । इसे असली घर से अलग रखना चाहिये । घर के पिछवाडे की तरफ़ आँगन हो तो उसके एक कोने मे पाख़ाने का घर बना देना चाहिये।

पाखाने के घर का फ़र्श आँगन की ज़मीन से दो .फुट ऊँचा रखना चाहिये । उसपर चढ़ने के लिये तीन जीने लगा देने चाहिये। पाख़ाने के छेद के नीचे, जहाँ पाख़ाना गिरता है, दो .फुट लम्बी और दो .फुट चौड़ी एक पक्की कोठरी बना देनी चाहिये, जिसकी फ़र्श पर पत्थर जड़ा हो। इस कोठरी का मुँह उधर खुला रखना चाहिये, जिधर से पाख़ाना कमाया जाय ।

आजकल एक नये किस्म का पाख़ाना चला है, उसमे बदबू नहीं होती और न मेहतर ही की जरूरत पड़ती है। उसको 'सेप्टिक टैंक' कहते हैं। पर उसमें कम से कम ४०) का ख़र्च बैठता है, जो साधारण किसान गृहस्थ के लिये बहुत है। पर जो लोग इतना रुपया .ख़र्च कर सकते हैं, उन्हें बनवा लेना चाहिये।

लकड़ी-घर

जलाने की लकडी बरसात मे भीग जाती है, तो रसोई बनानेवाली स्त्रियों को बड़ा कष्ट होता है। अतएव आँगन में किसी दीवार से लगाकर, जिधर जगह हो, फूस का एक छप्पर डलवा लेना चाहिये,

जिसके नीचे लकड़ी का स्टाक रक्खा जा सके। यह जगह ज़रूरत के मुताबिक़ लम्बी-चौड़ी बना लेनी चाहिये।

आँगन

आँगन हमारे पुराने ढङ्ग के घरों मे बीचों बीच होता है और उसके चारोंओर घर के कमरे बना दिये जाते हैं। इसमे कई ख़राबियाँ हैं। पहली तो यह कि आँगन शांति से बैठने-उठने की जगह न होकर हर कमरों मे आने-जाने का एक आम रास्ता हो जाता है; दूसरे, रोज़ाना काम मे आने वाली चीज़े आँगन में बिखरी पड़ी रहती है और हरएक कमरे वालों को उससे तकलीफ़ होती है। तीसरे, ब्याह-शादी या किसी पूजा-पाठ के दिन जब बाहरी आदमी आँगन में आ बैठते हैं, तब घर की स्त्रियाँ अपने-अपने कमरों मे क़ैद हो जाती हैं। और घर के दूसरे काम प्रायः रुक जाते हैं। इससे हमारी सलाह है कि आँगन घर के बीच में न बनाकर किसी एक ओर, जिधर काफ़ी जगह हो, बनाया जाय। इससे घर मे रहने वालों को वे असुविधाये, जो ऊपर बताई गई हैं, न होंगी।

आँगन मकान के आगे न रखकर पीछे रखना अधिक अच्छा है, ताकि स्त्रियाँ उसमे बैठ-उठ और गरमी में सो सकें।

आँगन में पाख़ाना और नहानी भी होंगे, इससे स्त्रियाँ उनका इस्तेमाल आसानी से कर सकेंगी। और शादी-ब्याह और उत्सव के दिनों में आँगन अलग रहने से घर में रहनेवालों को निकलने-पैठने मे दिक्क़त भी न होगी।

जगह हो तो घर के साथ दो आँगन रखना कहीं अच्छा है। ऐसी हालत मे एक आँगन घर के सामने हो, दूसरा पिछवाडे या बग़ल मे। घर के सामने वाले आँगन मे एक कोने पर कुँवा भी बनवाया जा सकता है। और फूलों के दो-चार पौदे और एक फल का पेड भी लगाया जा

सकता है। सामने वाले आँगन मे बैठक भी अलग बनाई जा सकती है।

एक आँगन की लम्बाई-चौड़ाई पूरे मकान की आधी होनी चाहिये।

अहाता

आँगन और अहाते मे फ़र्क है। आँगन घर के अंदर होता है और अहाता बाहर। अहाता चहार-दीवारी से भी घेर दिया जाता है और काँटेदार झाड़ियों, तारों और बाँस और पेड की डालों के घेरे से भी; पर आँगन हमेशा दीवारों ही से घेरा जाता है।

अहाता अगर घर के चारों तरफ़ छूट सके तो घर की शोभा और सुविधा बहुत बढ़ जाती है। नहीं तो घर के आगे या पीछे होना चाहिये। घर के पीछे अगर आँगन हो तो अहाता घर के सामने रखना चाहिये।

अहाते की बड़ाई-छोटाई घर के आसपास की जगह पर निर्भर है। अहाते मे कुँवा, खलिहान, लकडी-घर और भूसा-घर तथा गोरू-घर भी बनाया जा सकता है

चबूतरा

घर मे जगह हो तो चबूतरे भी बनाये जायँ। चबूतरे बैठने-उठने और गरमी की रात मे खाट डालकर सोने के लिये बहुत ही उपयोगी होते हैं।

छोटा चबूतरा बड़े आँगन के बीच में भी बनाया जा सकता है। बैठक के सामने और फुलवाड़ी मे तो एक चबूतरा अलग ज़रूर ही बना लेना चाहिये। बन्द कमरे की अपेक्षा चबूतरे पर खुली हवा में बैठना या सोना स्वास्थ्य के लिये बहुत उपकारी है।

चबूतरा १० फुट लम्बा और ८ फुट चौड़ा हो तो उस पर दो खाटें मज़े मे पड़ सकती हैं।

चबूतरे की ऊँचाई डेढ़ .फुट होनी चाहिये।

चबूतरे के चारोंओर की दीवारें पक्की ईंटों की नौ इञ्च मोटी हों। ईंटों के मुँह पर सीमेंट से 'टीप' करा देनी चाहिये। फिर बीच के हिस्से को मिट्टी से पाटकर, दुरमुट चलाकर .खूब ठोस कर देना चाहिये और उस पर पक्की ईंटें जड़वाकर ऊपर से सीमेंट का पलस्तर या टीप करा देना चाहिये।

नाबदान

नाबदान हरएक घर मे होना चाहिये, जिससे बरसात का पानी निकल जाया करे। नाबदान घर के उस तरफ़ निकालना चाहिये जिधर खेत या बहाव की जगह हो।

नाबदान एक .फुट लम्बा-चौडा और ऊँचा होना चाहिये।

ज़्यादा चौडे नाबदान से कुत्ते बिल्ली या और किसी जानवर के अन्दर घुस आने का अंदेशा हो तो उसमें लोहे की जाली लगवा लेनी चाहिये। जाली बाज़ार में बनी बनाई पाँच-छः आने में मिल जायगी।

नाबदान हमेशा पक्की ईंटों का बनाकर सीमेंट का पलस्तर करा देना चाहिये। नहीं तो आसपास की दीवारों मे पानी समा जायगा और उनमे लोना भी लग जायगा।

नाबदान के मुँह के पास भी दोनों तरफ़ दो .फुट लम्बाई में पक्की ईंटें जड़वा देनी चाहिये।

अगर एक ही नाबदान से बरतन माँजने का पानी भी बाहर जाता हो तो नाबदान के बाहर वाले मुँह के आगे दो .फुट लम्बा-चौड़ा और दो फुट गहरा पक्की ईंटों का एक कुंड बना देना चाहिये, जिसमे पानी जमा हुआ करे और दूसरे-चौथे दिन निकाल दिया जाया करे। या 'सोकेज-पिट'

कुँवा

कुँवे के बारे मे जरूरी बातें इस पुस्तक मे पहले लिख दी गई हैं। यहाँ केवल यह बताना है कि घर के आसपास कुँवा कहाँ पर हो।

अगर घर के साथ फुलवाड़ी भी हो तो एक कुँवा फुलवाड़ी में ज़रूर होना चाहिये।

अगर घर के सामने अहाता हो तो अहाते में किसी कोने पर कुँवा खुदवा लेना चाहिये।

अगर घर के साथ फुलवाड़ी न हो तो घर के लिये एक कुँवा अलग होना चाहिये। वह बैठक के किसी कोने की तरफ़ या अगर आँगन पिछवाड़े हो तो उसमे होना चाहिये।

घर के काम के लिये तीन फ़ुट चौड़ा कुँवा काफ़ी होगा।

कुँवे के पास कोई पेड़ न हो, नहीं तो उसकी पत्तियाँ उसमे गिरकर और सड़कर पानी को गन्दा कर देंगी।

नींव

घर के कुल भागों में नींव का महत्व सबसे अधिक है। नींव की मज़बूती जितनी होगी, उतनी ही ज़्यादा मकान की उम्र होगी। इससे नीव को मजबूत बनाने की ओर सब से अधिक ध्यान देना चाहिये। नींव कमज़ोर होती है तो प्राय: दीवारे फट जाती हैं या उसमे दरारे पड़ जाती हैं।

घर अगर दोमंजिला बनाना हो तो उसकी नींव कम से कम दो हाथ गहरी होनी चाहिये। नींव की चौड़ाई दीवार की चौड़ाई से एक फ़ुट या आधा फ़ुट अधिक होनी चाहिये। इससे नींव में बोझ उठाने की शक्ति बढ़ जाती है।

दो हाथ गहरी और दो हाथ चौड़ी नींव खोदवाकर नींव की सतह पर कंकड़ या ईंट के टुकड़ों की एक फुट मोटी पिटाई करा देनी चाहिये।

ईंट के टुकड़ों से कंकड़ मज़बूत समझा जाता है; क्योंकि जैसे-जैसे मकान की उम्र बढ़ती है, वैसे-वैसे कंकड और मज़बूत बनते जाते हैं। ईंट के टुकडों में इस तरह का कोई परिवर्तन नहीं होता।

कंकड़ या ईंट के टुकड़ों की कुटाई हो जाने पर अगर हो सके तो कच्चे मकान की भी नींव की चुनाई पक्की ईंटों की कराई जाय। ईंटों की चुनाई फर्श की ऊँचाई तक हो। उसके बाद मिट्टी की कच्ची दीवार उठाई जाय। यदि ईंटों का प्रबन्ध न हो सके तो नींव को अच्छी मिट्टी से भरना चाहिये। बलुही मिट्टी नींव मे नही देनी चाहिये।

नींव देने के पहले घर का पूरा नकशा पेंसिल से काग़ज़ पर बना लेना चाहिये। फिर उसी नकशे के मुताबिक 'गुनिया' की सहायता से दिशा की सिधाई ठीक करके कीलें या खूँटियाँ गाड़कर सुतली बाँध देनी चाहिये, और सुतली की सीध में नींव खोदवा देनी चाहिये। सुतली न बाँधने से नींव के टेढी होने का भय रहता है। कभी-कभी लोग कीलों या खूँटियों के बीच में सुतली तानकर उस पर चूने या राख की लकीर खींच देते हैं और सुतली हटा लेते हैं। यह तरीका कम ख़र्चीला है।

नीव से निकली हुई मिट्टी को घर के भीतर के कमरों में डलवा देना चाहिये; जिससे फ़र्श पाटने के लिये बाहर से मिट्टी न ढुलवानी पडे।

फ़र्श या गच

ज़मीन के जिस टुकडे पर घर बनाया जाय, वह आस-पास की ज़मीन से कम से कम एक हाथ या डेढ़ फुट ऊंचा अवश्य रहे। इससे घर के अन्दर सील नहीं रहती और न आँगन मे पानी रुकता है।

दीवार

मिट्टी की दीवार कम से कम डेढ़ हाथ मोटी होनी चाहिये। ख़र्च की तंगी न हो तो नीव पक्के ईंटे की देनी चाहिये। और फ़र्श से एक फ़ुट

की ऊँचाई तक ईंटों ही की दीवार बनवानी चाहिये, जिससे दीवार मे पानी न लगे, और न चूहे बिल बना पायें।

दीवार होशियार कारीगर से सीधी बनवानी चाहिये। कहीं कुछ ऊँचा-नीचा रह जाये तो पलस्तर से उसे ठीक करा लेना चाहिये।

चौखट और दरवाज़े

दरवाज़े देहात मे प्रायः आम की लकड़ी के बनते हैं। कहीं-कहीं महुवे और जामुन की लकड़ी भी लगा ली जाती है। पर इन सबसे मज़बूत और चिकनी साखू की लकड़ी होती है। यह लकड़ी प्रायः शहरों मे बिकती है। यह सड़ती-गलती कम है और इस पर रंदा भी साफ़ आता है।

दरवाज़ों के लिये पहले चौखट तैयार किया जाता है। मिट्टी के घरों मे जो दरवाज़े लगते हैं, उनका नीचे का चौखट कम से कम छः इञ्च चौडा और छः इञ्च ऊँचा होना चाहिये। चौखट के बाकी हिस्से चार इञ्च चौडे और तीन इञ्च ऊँचे भी चल सकते हैं।

चौखट के जो हिस्से दीवार के अन्दर हों, उन पर अलकतरा पोतवा देना चाहिये, जिससे उनमे दीमक न लगे।

दरवाज़े ६ फ़ुट से कम ऊँचे न होने चाहिये। उनकी चौड़ाई भी ३ फ़ुट से कम न हो। नहानी, पाख़ाना और रसोई-घर की कोठरी में दो फ़ुट चौडे दरवाज़े भी काम दे सकते हैं।

खिड़कियाँ

खिड़कियाँ कमरे के पूरब, पश्चिम और उत्तर ही की दीवारों मे लगानी चाहियें; क्योंकि उत्तर हिन्दुस्तान मे हवा का प्रवाह इन्हीं तीन दिशाओं में रहता है। जहाँ दक्खिन की हवा चलती है, वहाँ दक्खिन

की दीवार में खिड़कियाँ लगानी चाहिये। दक्खिन की ओर खिड़की तभी लगानी चाहिये, जब उससे रोशनी आने की गुञ्जाइश हो।

कमरे में खिड़कियाँ हमेशा आमने-सामने होनी चाहिये, जिससे हवा के आने-जाने में रुकावट न पड़े।

खिड़की के चौखट चार इञ्च मोटी और ३ इञ्च चौड़ी लकड़ी के होने चाहिये।

खिड़की की लम्बाई भीतर-भीतर चार फुट और चौड़ाई दो फुट होनी चाहिये। कमरा छोटा हो तो ३ .फुट लम्बी और डेढ़ .फुट चौड़ी खिड़की भी काफी हो सकती है।

अलमारियाँ

बैठक, सोने के कमरे, खाने के कमरे, भंडार-घर और रसोई-घर की दीवारों में खुली और बन्द ये दो तरह की अलमारियाँ ज़रूर होनी चाहिये। बन्द अलमारियों में कीमती चीज़ें बन्द करके रक्खी जा सकती हैं। रसोई-घर की अलमारी में घी, चीनी, अचार, मुरब्बा, दूध आदि बन्द करके रक्खा जा सकता है।

नहाने के घर में खुली अलमारी होनी चाहिये; जिसमें तेल, साबुन, कंघी, शीशा आदि रक्खा जा सके। बैठक में एक बन्द और एक खुली अलमारी का होना ज़रूरी है। खुली अलमारी में पुस्तकें सजाकर रक्खी जा सकती हैं।

बन्द अलमारियों का सब खर्च खिड़की और दरवाजे के बीच का पड़ता है। अलमारी खिड़की से बड़ी और दरवाज़े से छोटी होती है।

बन्द अलमारी भीतर-भीतर पाँच .फुट लम्बी और तीन .फुट चौड़ी हो तो देखने में सुन्दर लगती है। खुली अलमारी ज़रूरत के मुताबिक छोटी-बड़ी कैसी-भी बनाई जा सकती है।

खुली अलमारी मे दराज अलगाने के लिये पत्थर की पटियाँ या लकड़ी के तख़्ते दिये जाते हैं। पर आजकल सीमेंट की मदद से ईंटों को भी पटिया की तरह जड देते है, जो काफ़ी मज़बूत होते हैं।

खूँटियों का होना हरएक कमरे मे बहुत ज़रूरी है। बनी-बनाई, रँगी-रँगाई खूँटियाँ शहरों मे बिकती हैं। लकडी और लोहे, दोनों की खूँटियाँ मिलती हैं। लोहे की खूँटियाँ सस्ती पड़ती हैं, पर मिट्टी की दीवार मे वे मज़बूती से गाडी नही जा सकती।

एक लकड़ी पर,, जो एक इंच मोटी, तीन या चार इंच चौडी और एक या डेढ़ फ़ुट लम्बी हो, लोहे की खूँटिया चार-चार इंच के फ़ासले पर पेंचदार कीलों से कसवा लेनी चाहिये। फिर लकड़ी के दोनों सिरों पर, किनारों से एक-एक इंच छोडकर, एक-एक मोटा छेद करा लेना चाहिये। और उन छेदों मे लम्बी कीले डालकर उन्हें दीवार मे ठोंक देना चाहिये।

खूँटियाँ फर्श से लगभग छः फ़ुट की ऊँचाई पर गाडनी चाहिये। खूँटियों की ऐसी पंक्तियाँ कमरे की हरएक दीवार मे लगाई जा सकती है; पर जितनी ज़रूरत हो, उतनी ही लगानी चाहिये।

टाँड़

सामान की कोठरी और रहने के कमरों मे टाँडों का होना भी ज़रूरी है।

कच्चे घरों मे टाँड़ कड़ियाँ रखकर बनाये जा सकते हैं। टाँड़ किसी दीवार के साथ, फ़र्श से कम से कम छः-सात फ़ुट की ऊँचाई पर बनाये जायँ। टाँड़ की चौड़ाई दो फ़ुट से अधिक न हो और उसे आम या चीड़ के पटरों से पाट देना चाहिये।

सामान की कोठरी मे दो दीवारों के साथ टाँड़ बनाना चाहिये और रहने के कमरे मे एक। कमरे की फ़र्श पर बिखरी हुई गैर ज़रूरी चीज़ें

टाँड़ पर रख देनी चाहियें। इससे कमरे मे सफ़ाई रहेगी और चीज़ों के खो जाने का डर भी कम रहेगा।

भरसा या मेहराब

सायबान या ओसारे के खुले दरवाज़ों पर देहात मे मोटी और मज़बूत लकड़ी का भरसा रखकर ऊपर से छाजन करने का रवाज है। पर उतने ही खर्चे मे पक्की ईंटों का मेहराब भी बन जाता है, जो सुन्दर भी होता है और उसके सड़ने-गलने का डर भी नहीं रहता।

थोड़ा पैसा और ख़र्च करके मेहराब की जगह लिंटल लगाना ज़्यादा अच्छा है। इससे घर की शोभा बढ़ जाती है। लिंटल मे सीमेंट ही का ख़र्च ज़्यादा पड़ता है, बाकी ख़र्च मेहराब के बराबर ही लगता है।

अगर मेहराब लगाने का प्रबंध न हो सके तो साफ़ चिरे हुये तीन इंच मोटे दो तख्तों का भरसा रखना चाहिये। तख्ते एक फ़ुट चौड़े हों।

कोठा

कोठा हरएक लम्बे कमरे में बनाया जा सकता है, ताकि लम्बाई की दीवार से लगकर कोठे पर जाने का ज़ीना रक्खा जाय।

कोठा फ़र्श से ८ फ़ुट की ऊँचाई पर रखना चाहिये। दीवार पर एक-एक फ़ुट या हाथ के फ़ासले पर ४ इंच मोटी और ४ इंच चौड़ी कड़ियाँ बिछाकर उस पर मूँठें बिछा देनी चाहियें। मूठों पर मिट्टी पाटकर चौरस करा देना चाहिये और गोबर और मिट्टी मिलाकर लिपाई करा देनी चाहिये।

कोठे पर जिधर खुली जगह हो, उधर की दीवारों में खिड़कियाँ ज़रूर रखनी चाहियें। कोठे के सामने बरामदे की छत पड़ती हो तो उसपर सीमेंट का पलस्तर कराके सोने-बैठने के लिये खुली जगह बना लेनी चाहिये।

कोठे पर अगर ग़ल्ला वगैरह रखना हो तो उसमें एक ही छोटी खिडकी रखनी चाहिये।

ज़ीना

ज़ीने की जगह घर का नकशा बनाने के साथ ही तै कर लेनी चाहिये। लोग ज़ीने के बारे में बहुत लापरवाही दिखलाते हैं। नतीजा यह होता है कि ज़ीना किसी गन्दी या सँकड़ी जगह मे बनाया जाता है, जिससे चढने-उतरने मे बड़ी तकलीफ़ होती है।

मिट्टी के मकानों में ज़ीने की ज़रूरत तब पडती है, जब किसी कमरे मे कोठा बनाया जाता है। पुराने ज़माने मे डाकुओं या दुश्मनों से अपना माल और जान बचाने के लिये देहात के लोग प्रायः कोठे पर जा छिपते थे। इसीसे ज़ीने छिपी जगह में और सँकडे बनाने की चाल पड़ गई। ताकि पहले तो दुश्मन देख न सके और देखे भी तो एक आदमी से ज़्यादा चढ़ न सके, जिसका मुकाबला कोठे पर का आदमी आसानी से कर सके। पर अब गवर्नमेंट का प्रबंध इतना अच्छा है कि डाकुओं और बाहरी दुश्मनों का भय पहले से अत्यन्त कम हो गया है। अतएव ज़ीने पर भी इसका असर पड़ना चाहिये।

ज़ीना जहाँ तक हो सके, कोठे की फ़र्श तक सीधा जाना चाहिये। ज़ीने की चौड़ाई डेढ़ हाथ से कम न होनी चाहिये। हर एक ज़ीने की ऊँचाई ६-७ इंच तक हो तो चढ़ने मे थकान नहीं मालूम होती और बुड्ढे, बीमार और बच्चे भी उस पर आसानी से चढ सकते हैं। प्रत्येक सीढ़ी की चौड़ाई कम से कम ६ इंच की होनी चाहिये।

अगर कोई कोठा ६ फुट की ऊँचाई पर हो तो सात इंच ऊँची १५ सीढ़ियाँ लगेंगी।

रोशनदान

कमरों के लिये रोशनदान बहुत ज़रूरी है। हरएक कमरे मे आमने-सामने की दीवारों मे लकड़ी के एक फुट लम्बे-चौड़े दो रोशनदान होने चाहियें और उनमें लोहे की सींके लगी हों, ताकि चिड़ियाँ अन्दर न घुस सकें।

रसोई-घर में चूल्हे के ऊपर रोशनदान होना बहुत ज़रूरी है। नहानी और पाख़ाने मे खिड़की न लगाकर एक-एक रोशनदान लगाना ज़्यादा अच्छा है।

छाजन

छाजन का काम ज़रा होशियारी का है। मामूली जानकार से नहीं कराना चाहिये। सबसे पहले बँडेर बैठाने के लिये पाख तै करने चाहियें। पाख इस ढङ्ग से उठाने चाहियें कि एक कमरे की ओलती दूसरे कमरे की ओलती से न मिलने पावे।

अगर बड़े बँडेर न मिलें या एक पाख से दूसरे पाख की दूरी बहुत ज़्यादा हो, और लम्बे बँडेर के कमज़ोर पड़ने का डर हो तो कमरे के बीचो-बीच फ़र्श से ८ फुट की ऊँचाई पर धरन रखकर उससे बँडेर को टेक दे देना चाहिये।

फिर दीवार पर एक-एक हाथ की दूरी पर कड़ियाँ या तरक रखना चाहिये। कड़ियाँ चार इंच मोटी और तीन इंच चौड़ी हों। कड़ियाँ कम हों तो डेढ़ हाथ की दूरी पर कड़ियाँ देकर दो कड़ियों के बीच मे बाँस की एक तरक दे देनी चाहिये। कड़ियाँ जमाकर उसपर मूठे, जो पहले ही से तैयार करा के रक्खे हों, बिछा दिये जायँ। मूठों को एक दूसरे के

साथ बाध या लोहे के पतले तार से सिउर देना चाहिये। लोहे के पतले पतले तार बाज़ार मे सस्ते दामों पर मिलते है।

गरीब कुम्हार

(दूसरे के छप्परों के लिये खपड़े बनाता है, ख़ुद सडे-गले छप्पर में रहता है।)

मूठे बिछाकर फिर उनपर सरपत फैला देना चाहिये और सरपत पर गीली मिट्टी की तह चढ़ाकर ऊपर से खपडे और नरिये की छाजन कर देनी चाहिये।

देहात में अच्छे खपडे छानेवाले काफ़ी मिलते हैं। इससे यहाँ उसके बारे में विशेष लिखने की ज़रूरत नही मालूम होती।

पाख जहाँ तक मुमकिन हो, घर के सामने वाली दीवार पर न पडे।

घर के सामने तो छाजन की ढाल ही सुन्दर लगती है। बरामदे का ढलाव हमेशा घर के सामने की ओर होना चाहिये।

कमरे के अन्दर की छाजन को सुन्दर बनाने के लिये लोग बाँस की पट्टियों का जालीदार टट्टर या सिरकी बनवाकर कड़ियों पर बिछा देते हैं, तब उसपर मूठे या सरपत की तह रखकर खपडा छा देते हैं।

लकड़ी

घर के लिये किस पेड़ की लकडी काम की होती है, इसकी भी जानकारी ज़रूरी है। पुराने तजरबों के अनुसार जिन पेड़ों से दूध या गोंद पैदा होता है, जिन पेडों पर चिड़ियाँ घोंसले रखती हैं, जिन पर बिजली गिरी हो, तथा कदम्ब, नीम, बडेड़ा, बबूल, बरगद, पीपल, कटहल, सेमल और टाक की लकडी घर के काम में नही लगाई जाती।

आम, शीशम, सागौन, साखू और चीड़ की लकडी घर बनाने के काम मे लेनी चाहिये। कच्ची लकड़ी किसी पेड की नही लगानी चाहिये।

महुवे और जामुन की लकड़ी भी अब देहात मे घर के काम मे लाई जाने लगी है।

चूना

देहात मे चूना कंकड को जलाकर बनाया जाता है। चूने का काम मिट्टी के घरों में केवल आँगन, नाबदान और फ़र्श मे पडता है। देहात में सात-आठ रुपये में १०० मन चूना मिल सकता है। छोटे घर के लिये १०) का चूना काफ़ी होगा।

सीमेंट

सीमेंट का इस्तेमाल आज कल गाँवों में भी होने लगा है। यह चूने से कहीं मजबूत चीज़ है।

मेहराब और लिंटल के लिये तीन हिस्सा छर्रेवाली बालू मे एक

हिस्सा सीमेंट ख़ूब मिला लेना चाहिये। फिर उसे पानी में सानकर काम में लाना चाहिये।

फ़र्श के लिये चार या पाँच गुने बालू में एक गुना सीमेंट मिलाने से भी पलस्तर तैयार किया जा सकता है।

साना हुआ सीमेंट सूखने न पावे। उसमें पानी डालते रहना चाहिये। और जितनी ज़रूरत हो, उतना ही सानना भी चाहिये।

सीमेंट आजकल १॥।=) मन के भाव से बिक रहा है। एक मन की एक बोरी होती है। सीमेंट की बोरी को सील या पानी लगनेवाली जगह मे नहीं रखना चाहिये; नहीं तो बोरी के नीचे वाले हिस्से में सीमेंट की पपड़ी बन जाती है।

सीमेंट मे जो बालू मिलाई जाय, उसे पहले लोहे की जाली वाले छन्ने मे छान लेना चाहिये। बारीक बालू सीमेंट में नहीं मिलाई जाती। मोटे दानेवाली बालू ही सीमेंट मे मिलकर उसे मज़बूत बनाती है। जहाँ बालू न मिले, वहाँ एंजिन की राख भी काम देती है।

लिटल हमेशा सीमेंट ही से लगवाना चाहिये।

सीमेंट का इस्तेमाल आजकल छत बनाने के काम में भी होने लगा है। इसे स्लैब लगाना कहते हैं। स्लैब की छतें चपटी होती हैं और देखने में सुन्दर लगती हैं। ख़र्चीली ज़रूर होती हैं। मिट्टी के घरों में स्लैब की ज़रूरत शायद ही पड़े।

फर्श

फ़र्श जहाँ तक हो सके, पक्का ही बनाना चाहिये। पक्का फर्श बनाने से सफ़ाई भी ज़्यादा रहती है और घर सुन्दर भी लगता है।

फ़र्श पर मिट्टी बिछवाकर उसे दुरमुट से ख़ूब पीट देना चाहिये। फिर उस पर खडंजा लगवाकर सीमेंट से टीप करा देनी चाहिये।

हरएक कमरे मे पानी निकलने की एक नाली रखनी चाहिये, ताकि कभी फ़र्श धोया जाय तो नाली के रास्ते पानी बाहर निकल जाय। नाली के मुँह पर जाली होनी चाहिये, जिससे कोई जानवर कमरे में न घुस सके।

फर्श का ढलाव नाली की तरफ़ रखना चाहिये।

१२ फुट लम्बे और ८ फुट चौडे कमरे मे दो इंच का ढलाव काफ़ी होता है।

पलस्तर

दीवार पर पलस्तर कराना बहुत ज़रूरी है। इससे दीवार का दोष भी ढक जाता है और सफ़ाई और सुन्दरता भी बढ जाती है। पलस्तर पर सफ़ेदी करा देने से दीवार पक्की-सी मालूम देने लगती है।

पलस्तर के लिये अच्छी चिकनी मिट्टी को, जिसमें कंकड़ न हों, पानी से भिगो देना चाहिये। उसमें अंदाज़ से भूसा और गोबर मिला देना चाहिये, और फिर उसे एक सप्ताह भर सड़ने देना चाहिये। पानी सुख जाय तो फिर डालते रहना चाहिये। बीच-बीच मे फावड़े या कुदाल से खोदकर मिट्टी को मिलाते रहना चाहिये। इस मिट्टी का पलस्तर बहुत मज़बूत होता है और उसमे दरारें नही पड़तीं।

पलस्तर होशियार मिस्त्री से कराना चाहिये।

गोबरी

घर तैयार हो जाने पर उसकी दीवारों पर पलस्तर कराने के बाद गोबरी की जाती है। दो हिस्सा गोबर और एक हिस्सा चिकनी मिट्टी मिलाकर, पानी से पतला करके, उसे दीवारों पर हलके हाथ पोतवा देना चाहिये। इससे पलस्तर की दरारे भर जाती हैं और इसके बाद सफ़ेदी की जाती है तो वह खिल उठती है।

सफ़ेदी

सफेदी बाज़ार मे मिलती है। उसका बाज़ार-भाव दस-बारह आने मन होता है। एक मन सफेदी से चार-पॉच कमरे पोते जा सकते हैं।

एक नॉद मे पानी डालकर सफेदी को उसमे भिगो देना चाहिये। अच्छी तरह गल जाने पर उसे किसी बाल्टी वा दूसरी नॉद मे कपडे से छान लेना चाहिये और हॉड़ी मे भरकर कूँची से दीवार पर हलके हाथ पोतना चाहिये।

पोताई दो बार करनी चाहिये, जिससे सफ़ेदी खिल उठे।

सफ़ेदी लगी हुई दीवार पर पानी का असर कम होता है, और उसकी उम्र बढ जाती है, घर भी सुन्दर लगने लगता है और सफ़ाई रहती है। इससे मिट्टी के घर मे सफेदी कराना बहुत ज़रूरी है।

रसोई-घर को सफ़ेदी में पीली मिट्टी, जो बाज़ार मे एक आने सेर मिलती है, मिलाकर पोतवाना चाहिये।

लिपाई

कमरे की फ़र्श और ऑगन अगर कच्चे हों तो हफ़्ते में एक बार गोबर से उन्हें लिपवा देना चाहिये।

गोबर में कीड़ों के मारने की बड़ी शक्ति है। गोबर की कई तहें जब ज़मीन पर चढ़ जाती हैं, तब ज़मीन मजबूत हो जाती है और उस पर पानी का भी असर कम होता है और फ़र्श खुरदरी नहीं होने पाती।

मोथे आदि घास की जड़ों को भी गोबर जला डालता है; इससे गोबर की लिपाई कराने से उस ज़मीन मे घास नहीं उगती।

दीवार की रक्षा

युक्तप्रांत में बरसात का पानी प्रायः पूरब, पश्चिम और कभी-कभी उत्तर से आता है। इससे इन तीन दिशाओं में घर की बाहरी दीवार को अरहर या अडूसे की टट्टियों से असाढ मे ढक दिया जाता है। टट्टियाँ दीवाली के नज़दीक, जब घर की सफाई होने को होती है, हटा ली जाती हैं। टट्टियाँ लगाने से बरसात का पानी दीवार पर नहीं पहुँच पाता और दीवार गलने से बची रहती है।

लोना

घर बनाने के लिये जिस जगह की मिट्टी ली जाती है, अगर वहाँ की मिट्टी मे रेह या नमक का अंश ज़्यादा रहेगा तो उससे बनी हुई दीवार मे लोना लग जायगा।

जो मिट्टी पानी ज़्यादा सोखती है, उसमे भी लोना लग जाता है। इससे घर की बाहरी दीवार के सहारे चिकनी मिट्टी का ६ इञ्च ऊँचा चढ़ा-उतार चबूतरा चारों तरफ़ बना देना चाहिये, जिससे बरसात का पानी दीवार मे न सोखने पाये।

नाबदान की गन्दगी से भी लोना लगना शुरू हो जाता है। इससे नाबदान काफी ढालुवाँ और पक्का बनवाना चाहिये, जिससे दीवार के आसपास पानी न जमा होने पाये।

दरवाज़ों और खिड़कियों के पल्ले दो तरह के होते हैं—दिलहेदार और सादे। दिलहेदार पल्ले महँगे पडते हैं, और मज़बूत भी कम होते हैं; पर देखने मे सुन्दर लगते हैं। दिलहेदार पल्ले मे बीच-बीच मे तीन या चार इञ्च चौडी लकडी की पट्टियाँ देकर दो, तीन या चार ख़ाने बना लिये जाते हैं; जिनके बीच की जगहे लोहे की चद्दरों के टुकड़ों से भर दी जाती हैं। दिलहेदार पल्लों के लिये साखू की लकडी ही सबसे

सस्ती लकडी है। आम और जामुन की लकडी मे दिलहे मज़बूती के साथ नहीं बैठ सकते ।

सादे पल्ले बहुत मज़बूत होते हैं। डेढ़ इञ्च मोटे और १० या बारह इञ्च चौड़े तथा साढे छः फुट लम्बे तख्ते चिरवाकर उनसे दरवाजों की लम्बाई-चौडाई के अनुसार पल्ले बनवाने चाहिये। तख्तों का जोड रंदे से आड़ा-तिरछा कटाकर ऐसा मिलवा देना चाहिये, जिससे दरार न दिखाई पडे। तख्तों का मुँह कीलों से जोडना चाहिये, जो बाहर दिखाई न पडें। पल्ले के पीछे, जिधर वह दीवार से सटता है, ऊपर, नीचे और बीच मे दो इञ्च चौडे लकडी के तीन कमरबन्द पेच से कसवा देने चाहियें, जिससे पल्ला कभी टेढ़ा न हो ।

पल्ले के जोडों पर बाँस की कीले लगवानी चाहिये। वे काठ के रंग मे मिल भी जाती हैं और मजबूत भी होती हैं ।

पल्ले चौखट मे क़ब्ज़ों से जोडे जाते हैं। सादे पल्ले भारी होते हैं, इससे एक पल्ले में तीन कब्ज़े, जिनमे हरएक में चार-चार पेंचवाले कीले लगे, ज़रूर लगवाने चाहिये। दो क़ब्ज़े कमज़ोर पड़ते हैं।

देहात मे चौखट और पल्ले के नीचे और ऊपर लोहे की दो मुँदरियों से भी जोड देते है। पर मुँदरियोंवाले पल्ले उतना साफ़ नही खुलते, जितना क़ब्ज़े लगे हुये पल्ले खुलते है ।

पल्लों की रँगाई

गाँव के लोग दरवाज़ों और खिडकियों के पल्लों को प्रायः अलकतरे से रँगकर काला कर लेते हैं। यद्यपि इससे उनमे घुन नहीं लगते, पर काला रंग बहुत सुहावना नहीं लगता। हमारी राय में हरे, गुलाबी, नीले, किरमिज़ी, भूरे या बैंगनी रंगों मे से किसी एक रंग से पल्लों को रँगाना अच्छा होगा। शहरों मे रँगाई के सब सामान बेंचनेवाले दूकानदार होते

हैं। उनसे एक बड़ा टिन बैल तेल (Boiled oil), एक टिन सफ़ेदा और एक टिन अपनी पसंद के रंग का ले लेना चाहिये। रँगाई के सामान के साथ डेढ़ या दो इञ्च चौड़ा ब्रुश भी ख़रीद लेना चाहिये। टिन की एक प्याली में, जो कनस्तर का एक टुकड़ा काटकर और उसे गहरा करके बना ली जा सकती है, तेल डालकर उसमें अन्दाज़ से सफ़ेदा मिलाकर गरम कर लेना चाहिये। फिर उसमे रंग डालकर और सबको ख़ूब फेंटकर एकदिल करके ब्रुश से लकड़ी पर लगाना चाहिये।

रँगने से पहले पल्लों और चौखटों की दरारों को पोटीन से भरकर, फिर गोंद और खरिया मिट्टी को पानी में मिलाकर, आग पर गरम करके उसका अस्तर उन पर कपड़े की लुगदी से चढ़ा देना चाहिये। अस्तर के सूख जाने पर ब्रश से धीरे-धीरे रंग चढ़ाना चाहिये। रंग का तीन, नहीं तो दो कोट ज़रूर देना चाहिये। रँगाई से एक तो सुन्दरता आ जाती है, दूसरे लकड़ी की उम्र बढ़ जाती है। उस पर मौसम का असर कम पड़ता है।

चूल्हा

चूल्हा पक्की ईंटों से बनाना चाहिये। यह रसोई-घर मे, चौके के ऊपर, किसी दीवार से सटाकर, बनाया जाय। चूल्हे के ऊपर धुआँ निकलने के लिये चिमनी का होना बहुत ज़रूरी है। चिमनी के लिये पक्की ईंटें इस्तेमाल करनी चाहिये। टिन की भी चिमनी बन सकती है।

चूल्हा तीन मुँह का होना चाहिये। एक मुँह तवा रखकर रोटी सेंकने के लिये और बाक़ी दो दाल-भात की बटलोइयों के लिये। इससे थोड़ी ही लकड़ी से काम चल जायगा, और समय की भी बचत होगी। आजकल लोहे के छः-सात मुँहवाले बने-बनाये चूल्हे भी बिकते हैं। पर वे महँगे पड़ेंगे। किसान को मिट्टी ही के चूल्हे को अधिक उपयोगी बना लेना चाहिये।

चरखा

चक्की, चूल्हा और चरखा, ये तीनों चकार गृहस्थी की जान हैं। जिस घर मे ये तीनों रहते है, उस घर मे ग़रीबी नहीं आ सकती।

चरखे से घर की स्त्रियाँ फ़ुरसत के वक्त इतना सूत कात सकती हैं कि उनसे घरभर के लिये सालभर का कपड़े का ख़र्च निकल सकता है। मर्द भी चरखा चला सकते है। किसान को साल मे कई महीने बिना काम के बिताने पड़ते है, चरखा चलाकर वह अपने फ़ुरसत के वक्त को कीमती बना सकता है। चरखे के लिये किसी ख़ास घर की ज़रूरत भी नहीं; वह बरामदे मे, कमरे मे, बैठक मे, आँगन में कहीं भी रखकर चलाया जा सकता है।

घर के आसपास पेड़

घर के आसपास छायादार पेड भी होने चाहियें। उनकी छाया में गरमी के दिनों में बैठने का आराम तो मिलता ही है, और रात में घर के लोग ताज़ी हवा मे उनके नीचे सोते भी है।

थका हुआ किसान छाया में सुस्ता रहा है और बच्चे खेल रहे हैं।

गोरू भी गरमी की रात मे और जाडे के दिनों में उनके नीचे बाँधे जाते हैं। पेडों के नीचे बरात टिकाई जा सकती है और मामूली सभा-पंचायत भी हुआ करती है। ज़रूरत पर पेडों से लकडी भी ली जा सकती है। पेडों की हवा का असर घरवालों की तन्दुरुस्ती पर भी पडता है।

इसलिये हरएक किसान को अपने घर के आसपास पेड़ लगा रखने चाहिये।

कौन-से पेड तन्दुरुस्ती के लिये उपयोगी हैं, यह हज़ारों बरसों के तजरबों से जाना जा चुका है।

नीम का पेड़ तो आमतौर से साबित हो चुका है कि वह ठण्डी छाया, साफ़ हवा और न घुननेवाली लकड़ी के कारण किसानों का बड़ा दोस्त है। इससे नीम का एक या दो पेड़, जैसी जगह हो, घर के आस-पास लगा ही लेना चाहिये।

हिन्दुओं के पुराने तजरबों के अनुसार घर के पूरब पीपल, दक्खिन में पाकर, ईशान (पूर्वोत्तर) कोन में लाल फूलवाला, आग्नेय (पूर्व-दक्षिण) कोन मे दूधवाला पेड़, जैसे गूलर, बरगद आदि न लगाने चाहियें। पूरब ओर बरगद, दक्खिन ओर गूलर, पश्चिम ओर पीपल, और उत्तर में पाकर या गूलर का पेड़ शुभ माना गया है।

घर जितना ऊँचा हो, उससे दूनी दूरी पर पेड़ लगाने चाहियें।

फुलवाड़ी

फुलवाड़ी बैठक के साथ हो तो ज़्यादा अच्छा है। क्योंकि उसकी देख-रेख भी अच्छी तरह की जा सकती है और बैठक के लोग उसकी सुन्दरता से ख़ुश भी हो सकते हैं।

फुलवाडी मे अगर जगह काफी हो तो किनारे-किनारे कुछ तो ख़ुशबूदार फूलोंवाले पेड लगाने चाहिये। जैसे, हरसिंगार, नेवारी, मौलसिरी, कामिनी और चम्पा। दो-एक पेड़ अनार, दो-चार पेड पपीते और एक-दो पेड़ काग़ज़ी नीबू के भी हों। एक पेड़ अमरूद, एक पेड़ कटहल, एक पेड़ फ़ालसा, एक पेड़ केला और एक पेड़ शहतूत या

शरीफे का भी लगाना अच्छा है। कटहल और पपीते के पेड़ों से किसान को आमदनी भी होती है।

दीवारों पर बारहो महीने हरी रहनेवाली लतायें चढ़ा देनी चाहिये। लाल, गुलाबी और पीले कनेरों तथा गुलेचीन के भी एक-दो पेड़ दीवार के किनारे लगा देने चाहिये। मेहदी के भी कुछ पौदे एक कतार में लगा देने चाहिये।

पेड़ों से जो जगह बचे, उसे छोटी-छोटी क्यारियों में बाँट देना चाहिये। कुछ क्यारियों में गुलाब, चमेली, बेला, गेंदा और जूही आदि लगाकर बाक़ी क्यारियों में फ़सली तरकारियाँ बोते रहना चाहिये। तरकारियों में कुम्हड़ा, लौकी, करेला, तरोई, भिन्डी, बैंगन, आलू, गाजर और सकरकन्द आदि हैं। लौकी तो छप्पर या खपरैल पर भी चढ़ाई जा सकती है।

एक क्यारी में लहसुन, प्याज, धनिया और मरचे के भी कुछ पौधे लगा देने चाहिये। फुलवाड़ी मे कुँवा हो तो उसके पास, जहाँ पानी गिरता हो, पुदीना लगा देना चाहिये।

क्यारियों के बीच-बीच में नालियाँ या बरहे इस तरकीब से बनाये जायँ कि कुँवे के पास नहाने या कपड़ा धोने से जो फालतू पानी गिरा करता है, वह क्यारियों में चला जाया करे।

बैठक के आसपास फुलवाड़ी के लिये जगह न हो तो फुलवाड़ी को घर के साथ, जिधर जगह हो, जोड़ देनी चाहिये। फुलवाड़ी घर के साथ ज़रूर होनी चाहिये।

अगर फुलवाड़ी के लिये जगह काफ़ी न हो, तो जितनी जगह हो, उसमें तरकारियाँ बोनी चाहिये और फूलों का मोह छोड़ देना चाहिये। गृहस्थ के लिये तरकारियाँ फूलों की बनिस्बत ज़्यादा ज़रूरी हैं।

पालतू पशु-पक्षी

एक सम्पन्न गृहस्थ के घर मे गायें, बैल और भैंसें तो रहती ही हैं। ये जानवर उसके लिये जीविका पैदा करने मे उसके पूरे मददगार होते हैं। पर कुछ जानवर उसे दिल-बहलाने के लिये भी रखने पड़ते हैं। जैसे घोड़ा, कबूतर, मुर्ग़ा, मोर, तोता, मैना और कुत्ता वग़ैरह।

अगर दिल बहलाने के लिये वह जानवरों से मदद न लेगा तो दिन-रात की मेहनत वाली उसकी ज़िन्दगी उसे बहुत भारी लगने लगेगी।

घोड़ा किसान के शौक की चीज़ है। किसान घोड़े पर चढ़कर बरात करता है, सुबह शाम हवाख़ोरी को निकलता है, घर के बच्चों को घोड़े की सवारी करना सिखाता और उनमे सिपहगिरी का अभ्यास बढाता है। घोड़े की लीद से खाद का काम निकालता है।

कबूतरों का एक साथ उड़ना, एक साथ चारा चुगना बहुत प्यारा लगता है। मुर्ग़े कीड़े-मकोड़े और थूक आदि खाकर सफ़ाई करते रहते हैं। इनके अंडे बेंचकर किसान कुछ पैसे भी पैदा कर सकता है।

मोर देखने मे बहुत सुन्दर होता है। उसका नाचना, पेड़ों की डालियों और घर के मुँडेरों पर पूँछ फैलाकर बैठना और ज़ोर से बोलना बच्चों को बहुत प्यारा लगता है।

तोता और मैना पालने की चाल बहुत पुरानी है। ये प्रायः घर के अन्दर पिजड़ों में बन्द करके रक्खे जाते हैं। ये आदमी की-सी बोली बोलना जल्द सीख लेते हैं। स्त्रियों का मन-बहलाव प्रायः इन्हीं से होता है।

चिड़ियाँ घर मे आनेवाली बीमारियों का भी पता देती हैं।

गौरैया बिना बुलाये ही घर मे घुसकर घोंसला बना लेती है। घर के अन्दर के कीड़े-मकोड़ों को कम करने में वह मदद देती रहती है।

कुत्ता बड़ा ज़रूरी जानवर है। यह घर और खलियान का पहरा देता है। बच्चों के साथ खेलता है और बड़ों के दिलों में उनके आश्रितों के लिये दया और प्रेम जगाता रहता है।

गोरू-घर

अगर किसी किसान के दो हल की खेती होती हो, तो उसके लिये कितना बड़ा गोरू-घर चाहिये, उसका नक्शा यहाँ दिया जाता है —
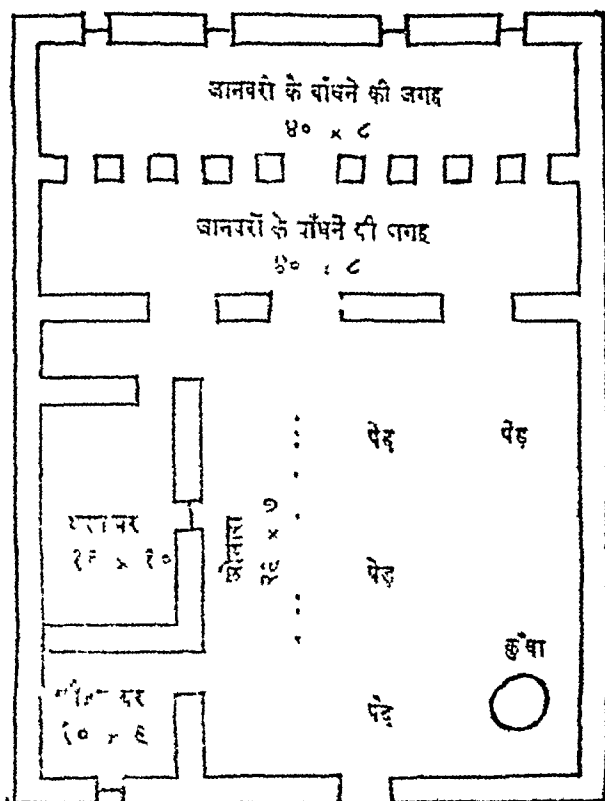
यह घर अहाता-सहित बाहर-बाहर ५७ फुट लम्बा और ४४ फुट चौड़ा है। जगह हो तो अहाता और भी बड़ा कर लेना चाहिये। चार बैल, एक गाय, एक भैंस और उनके बच्चे कुल मिलाकर आठ जानवरों के लिये बाहर-बाहर ४४ फुट लम्बे २२ फुट चौडे और एक फुट ऊँचे चबूतरे पर एक खपरैल या छप्पर खड़ा कर लेना चाहिये।

हरएक जानवर को, अगर वे एक ही कतार मे बाँधे जायँ तो, चार फुट चौड़ी और ८ फुट लम्बी जगह दी गई है। आमने-सामने दो क़तारों मे बाँधने से उनको इससे ज़्यादा जगह मिल जायगी।

चबूतरे पर चार-चार फुट के फ़ासले पर दो-दो फुट के मोटे पाये और हरएक दरवाज़ों पर भरसे रखकर ऊपर छप्पर या खपरैल की छाजन कर देनी चाहिये। पाये ६ फुट ऊँचे होने चाहिये।

चबूतरे पर लम्बाई की तरफ बीचो-बीच दो फुट ऊँची और दो फुट चौडी दीवार उठाकर उस पर दो-दो फुट के फ़ासले पर नाँदें जड़ देनी चाहिये। इस तरह नाँदे गाड़ने से जानवर दोनों तरफ़ से खा सकते हैं, और चारा डालनेवाले को भी आसानी होती है।

इस दीवार के बीच में चार फुट का एक, और ज़रूरत हो तो इसके दोनों सिरों पर दो-दो फुट के दो, रास्ते जानवरों को इधर से उधर ले जाने के लिये बनाने चाहियें।

गोरू-घर को अगर चारोंओर से खुला रखना हो तो जाड़ों में उसे अरहर और सरपत की टट्टियों से घेर देना चाहिये। गरमी मे केवल पश्चिम तरफ घेरना चाहिये, जिधर से लू आती है। गरमी में जानवर प्रायः रात में बाहर खुले मैदान में या खेत में बाँधे जाते हैं, जहाँ उनके पेशाब और गोबर से खाद बनती है।

ज़्यादा अच्छा यह होगा कि चबूतरे के पश्चिमी सिरे पर कुल लम्बाई पर एक दीवार उठा दी जाय और उसमें तीन या चार खिड़कियाँ हवा और रोशनी के लिये खोल दी जायँ।

खिड़कियाँ लकड़ी की न बनवाकर ईंटों की बनाई जायँ या दीवार में एक फ़ुट चौड़े गोल सूराख़ कर दिये जायँ। बाकी तीन ओर खुले रहें और जाड़ों में टट्टियों से ढक दिये जाया करें।

भूसा-घर

भूसा-घर गोरू-घर के बिलकुल पास होना चाहिये। आधे बरसात से आधे जाड़े तक जानवरों को हरा चारा मिल सकता है। सिर्फ़ बाक़ी छः या सात महीनों के लिये भूसा जमा करना पड़ता है। २०० मन भूसा ८ जानवरों के लिये, जिनमें दो बच्चे होंगे, काफ़ी होगा। और इतना भूसा १६ फ़ुट लम्बी, १० फ़ुट चौड़ी और १० फ़ुट ऊँची कोठरी में रक्खा जा सकता है।

भूसा-घर पर छप्पर भी रक्खा जा सकता है और खपरैल भी। पर खपरैल रखना अच्छा है, ताकि आग का ख़तरा कम रहे।

भूसा-घर के बगल में एक कोठरी खेती के औज़ारों के लिये या चौकसी रखनेवाले एक नौकर के लिये है। इसके सामने एक लम्बा ओसारा है, जिसमें हरा चारा काटने की जगह बनाई जा सकती है।

जानवरों के बैठने-उठने के लिये चार छायादार पेड़ों की भी जगह बना दी गई है! एक कोने पर कुँवा है। कुँवे के पास जानवरों के पानी पीने का एक कुण्ड बनाया जा सकता है।

भूसा-घर की किसी दीवार से, जो अहाते के अन्दर पड़ती हो, एक ओसारा हरा चारा काटने के लिये लटका लेना चाहिये। उसमें चारा काटने की मशीन भी रक्खी जा सकती है।

घरों के नक्शे

घर नं० १

बैठक
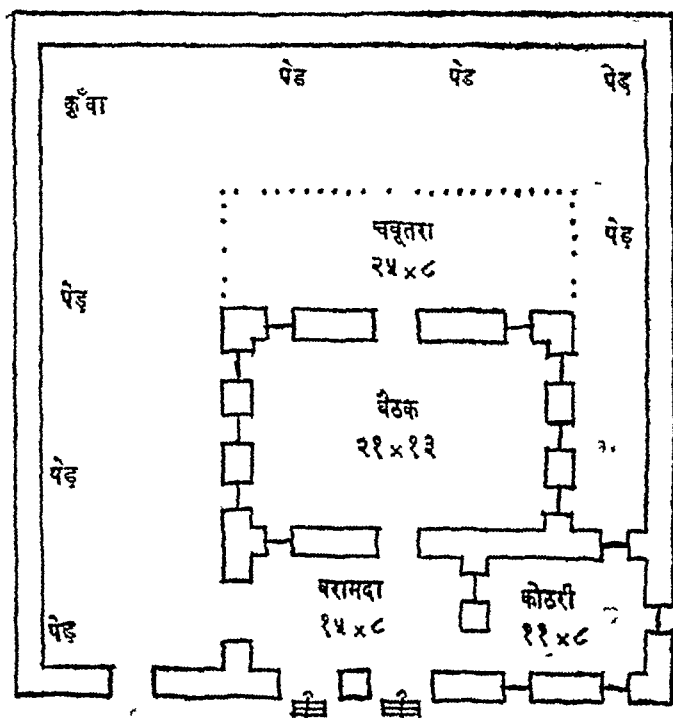
यह बैठक बाहर-बाहर ४७ फुट लम्बे और इतने ही चौडे अहाते के एक कोने में बनी है। जगह हो तो अहाता इससे बडा भी रक्खा जा सकता है। बैठक के पीछे एक खुला चबूतरा है, जिसपर गरमियों में लोग सो सकते हैं और जाड़ों में धूप ले सकते हैं। कोठरी में मेहमान भी टिकाये जा सकते हैं और सामान भी रक्खा जा सकता है।

अहाते की खुली जगह में पेड़ और फूल लगाये जाने चाहिये।

घर नं० २
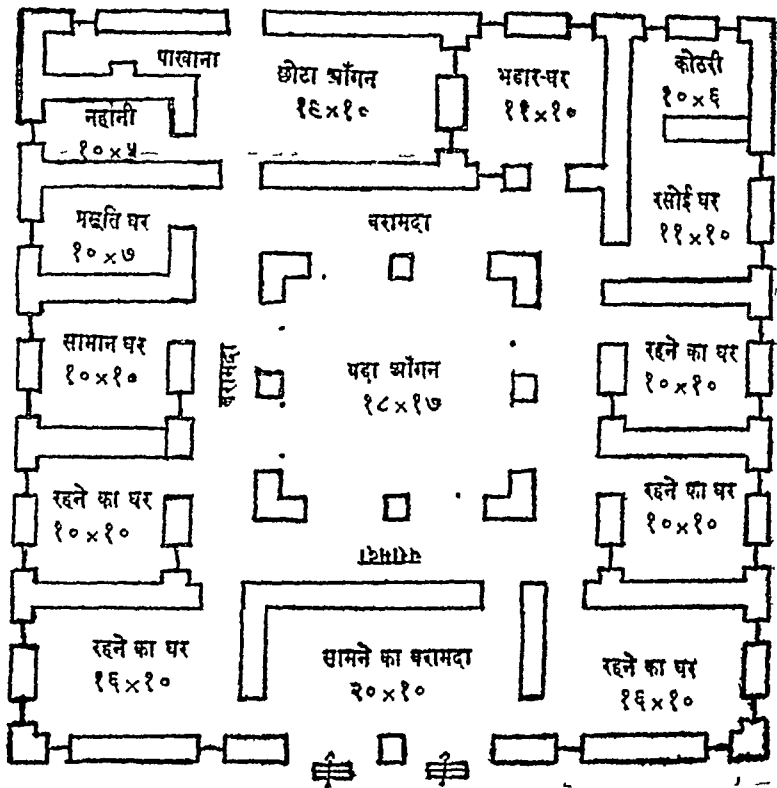
यह घर बाहर-बाहर ६० फुट लम्बी और ५६ फुट चौडी ज़मीन पर बना है। चार हल की खेती करने वाले किसान के लिये, जिसके एक स्त्री, दो बेटे, दो बहुयें और चार पोते हों, यह बडा सुखदायक घर है। इसमें दो आँगन हैं। पिछवाडे के आँगन में नहानी और पाख़ाना और बाहर आने-जाने का दरवाज़ा भी है। दोस्त और मेहमान भी उस रास्ते से नहानी और पाख़ाने का इस्तेमाल कर सकते हैं। पिछवाडे के आँगन में भंडार-घर की दीवार से लगकर लकडी रखने के लिये एक छप्पर डाला जा सकता है। बडे आँगन के बीचो-बीच तुलसी का चौरा होगा।

घर नं० २
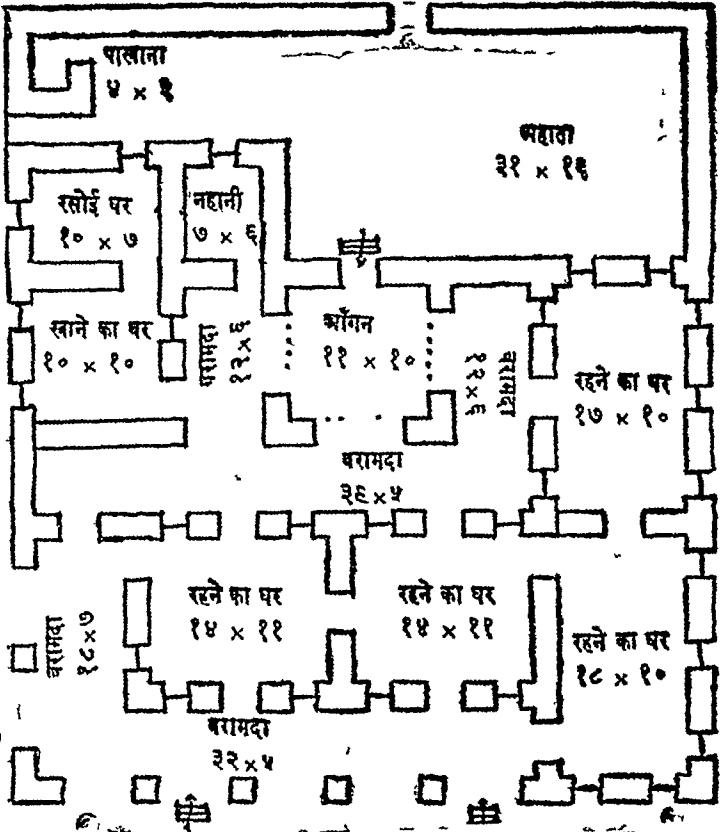
यह घर बाहर-बाहर ६० फुट लम्बा और ४५ फुट चौड़ा है। इस घर मे रहने के चार बड़े-बडे कमरे हैं। दो तरफ बरामदा है। एक छोटा-सा आँगन है, जिसके तीन ओर बरामदे हैं। रसोई-घर के साथ खाना खाने का कमरा और नहानी है। सामने के बरामदे में से अन्दर जाने का रास्ता है। घर के पिछवाडे वाले अहाते में पाखाना है। अहाते से बाहर जाने का रास्ता है। अहाता काफ़ी बडा है।

घर न० ४
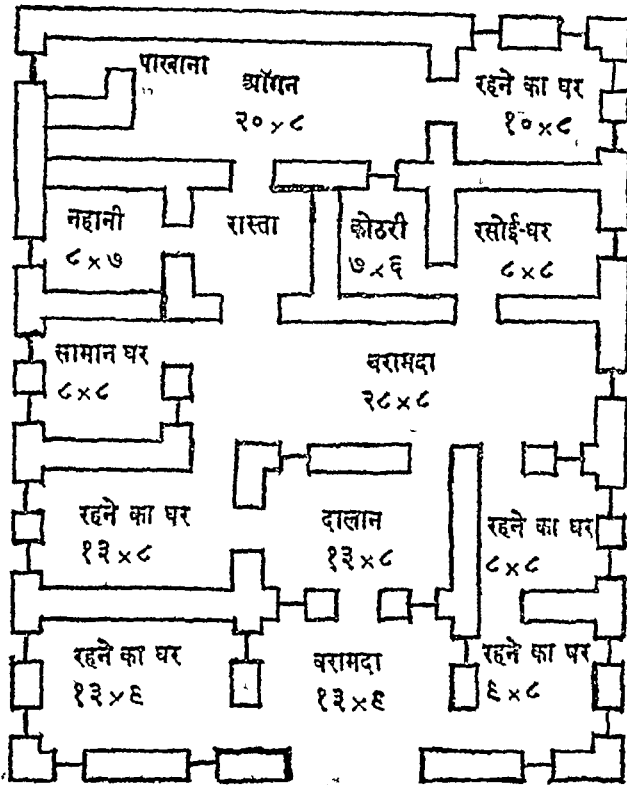
यह घर बाहर-बाहर ५२ फुट लम्बा और ४२ फुट चौड़ा है। आँगन इस घर मे बिलकुल पिछवाडे रक्खा गया है। आँगन के एक कोने में रहने का एक घर और भी है। बीच के लम्बे बरामदे में काफ़ी जगह रक्खी गई है। बाहर के बरामदे से घर के अन्दर जाने का रास्ता वैसाही रक्खा गया है, जैसा देहाती घरों मे होता है। लेकिन बाकी कमरों में काफ़ी सुधार कर दिया गया है।

घर नं० ५
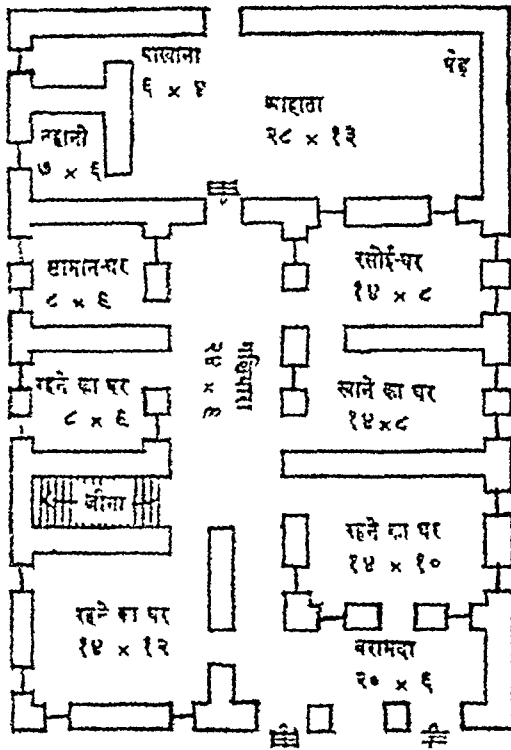
यह घर बाहर-बाहर ६७ फुट लम्बा और ४० फुट चौड़ा है। इस घर मे सामने एक बरामदा, तीन रहने के कमरे, एक सामान-घर, एक रसोई-घर और एक खाना खाने का कमरा है। नहानी और पाखाना घर के पिछवाड़े वाले आँगन मे हैं। बीच में एक काफ़ी लम्बा-चौड़ा गलियारा है। गलियारे मे से कोठे पर जाने का ज़ीना है। कोठा कोने वाले कमरे पर बनाया जा सकता है, और उसके सामने बरामदे पर खुली छत हो सकती है।

घर नं० ६
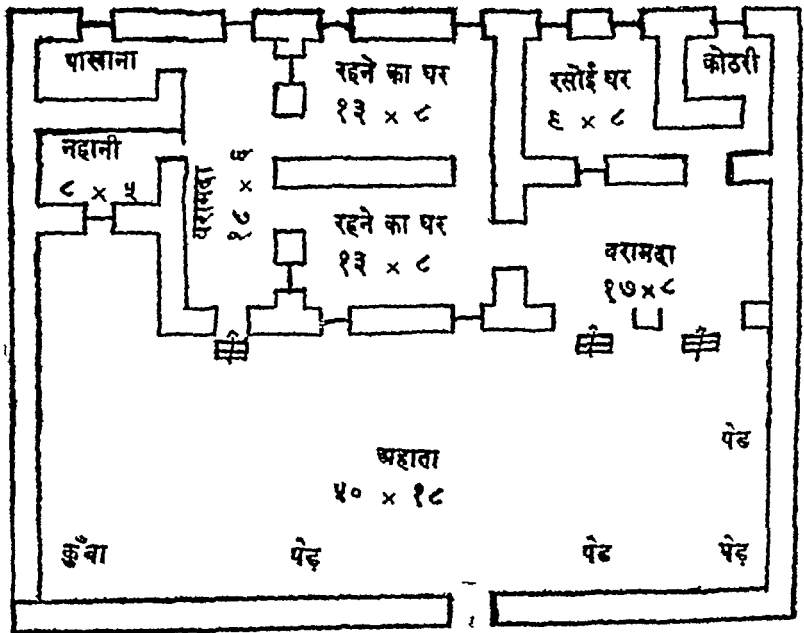
यह घर बाहर-बाहर ५४ फुट लम्बे और ४२ फुट चौड़े अहाते के एक किनारे बना है। इसमे अहाता घर के सामने है।

इसमें सामने एक बरामदा, बरामदे से मिला हुआ रसोई-घर और पानी-घर है। पानी-घर को भंडार-घर भी बनाया जा सकता है। दूसरी ओर दो कमरे है, एक बैठने-उठने के लिये, एक सोने के लिये। दोनों कमरों से मिला हुआ एक बरामदा और है, जिसमे नहानी और पाखाना हैं। इस बरामदे से भी बाहर जाने का एक रास्ता है। अहाते मे एक कुँवा खोदाया जा सकता है और तीन-चार छायादार पेड़ भी लगाये जा सकते हैं।

घर नं० ७
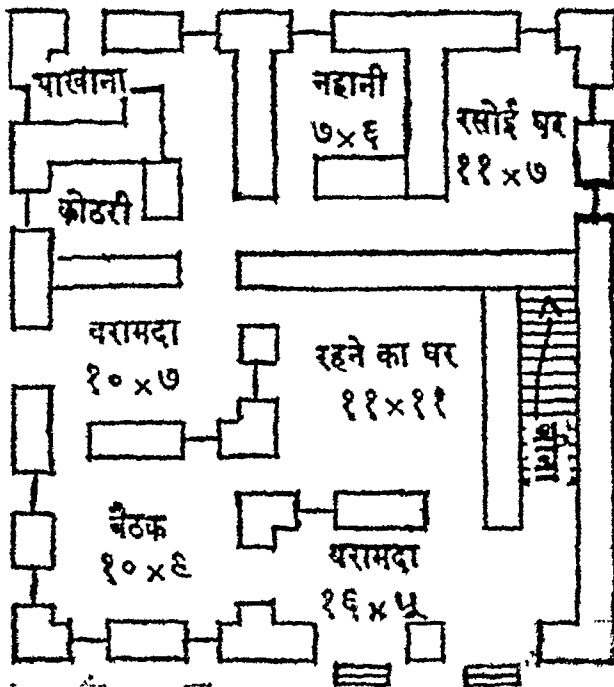
यह घर बाहर-बाहर २८ फुट लंबा और ३२ फुट चौड़ा है। इसके बीचवाले कमरे पर एक कोठा भी बनाया जा सकता है, जिसके लिये बरामदे में से जीना ऊपर गया है। बरामदे से जीना ऊपर ले जाने में घर के रहनेवालों को बड़ा सुभीता होता है। बीचवाले कमरे के सामने जो बरामदा है, उस पर खुली छत भी रक्खी जा सकती है।

नमूने के घर

घर नं० १
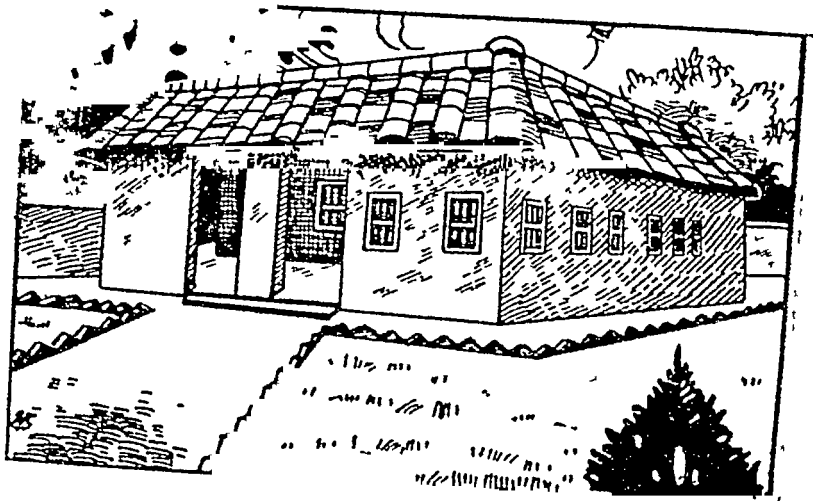
घर नं० २
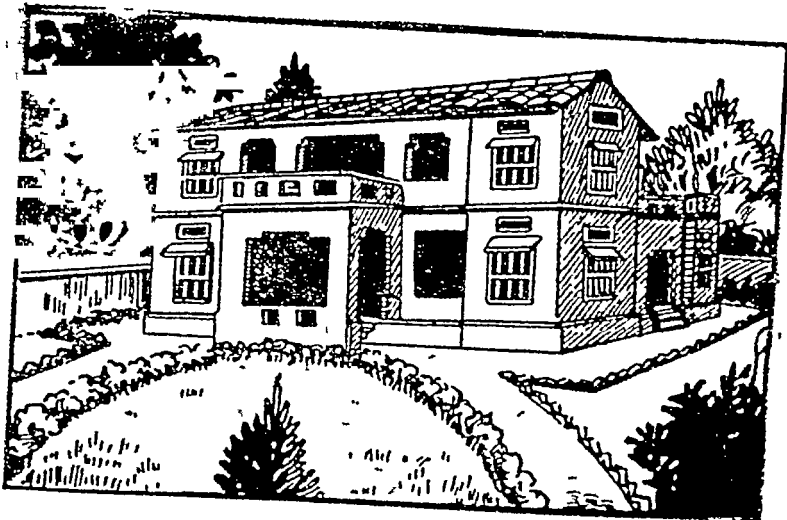
पंचायत-घर का नया नक़्शा

सरकारी नक़्शा

युक्तप्रान्त के रूरल डेवलपमेंट डिपार्टमेंट ने १९३८ में पंचायत-घर का एक नक़्शा और उसके बनाने के ख़र्च का तख़मीना प्रकाशित किया है। उसके अनुसार २० फ़ुट लम्बा और १४ फ़ुट चौडा पंचायत-घर, उसके साथ हरएक १२ फ़ुट लम्बे और ८ फ़ुट चौडे दो छोटे कमरे, पंचायत-घर के सामने २० फ़ुट लम्बा और १० फ़ुट चौड़ा एक बरामदा और बरामदे के सामने १० फ़ुट चौड़ा एक चबूतरा बनाया जाना चाहिये।

इस इमारत के सामने १५० फ़ुट और बाकी तीन तरफ़ फूलों और छायादार पेडों के लिये ५०-५० फ़ुट का अहाता रखने की भी सलाह दी गई है.

दो छोटे कमरों में, एक में सीड-स्टोर और दूसरे में ग्राम-पुस्तकालय, दवा के बक्स और दूसरी फुटकर चीज़ें रखने के लिये कहा गया है। नक़्शे मे दोनों कमरे पचायत-घर के दाहिने-बाये बरामदे से जोडे हुये हैं।

इस नकशे मे तरमीम की बड़ी गुञ्जाइश मालूम होती है। देहात मे पंचायत-घर मे आनेवालों की तादाद इतनी ज़्यादा होगी कि उनके लिये पंचायत-घर का बरामदा छोटा पडेगा। और पुस्तकालय के लिये जो कोठरी दी गई है, वह तो बहुत छोटी पड़ेगी। वह भी दूसरी कई चीज़ों के साथ एक भंडार-घर (Store-Room) सी बन जायगी।

पुस्तकालय बिलकुल स्वतन्त्र होना चाहिये, जिसमें केवल पुस्तकों और अख़बारों के पढ़नेवालों ही की भीड अँट सके। फ़ुटकर चीज़ों के रखने के लिये एक कोठरी अलग होनी चाहिये।

सीड-स्टोर का कमरा भी छोटा है और बीज लेने और देनेवालों के लिये उसके सामने का बरामदा भी छोटा पड़ेगा ।

एक और बड़ी कमी इस नक़्शे में यह है कि ग्राम-सेवक (Organiser) या पंचायत-घर के रखवाले के रहने के लिये इसमे कोई जगह नहीं दी गई । नक़्शे मे पाखाना और कुँवे का भी अभाव है । पंचायत-घर के साथ इन दोनों की बहुत ज़रूरत है ।

नया नक़्शा

हमने पंचायत-घर का एक नया नक़्शा बनाया है, जो यहाँ दिया जाता है :—
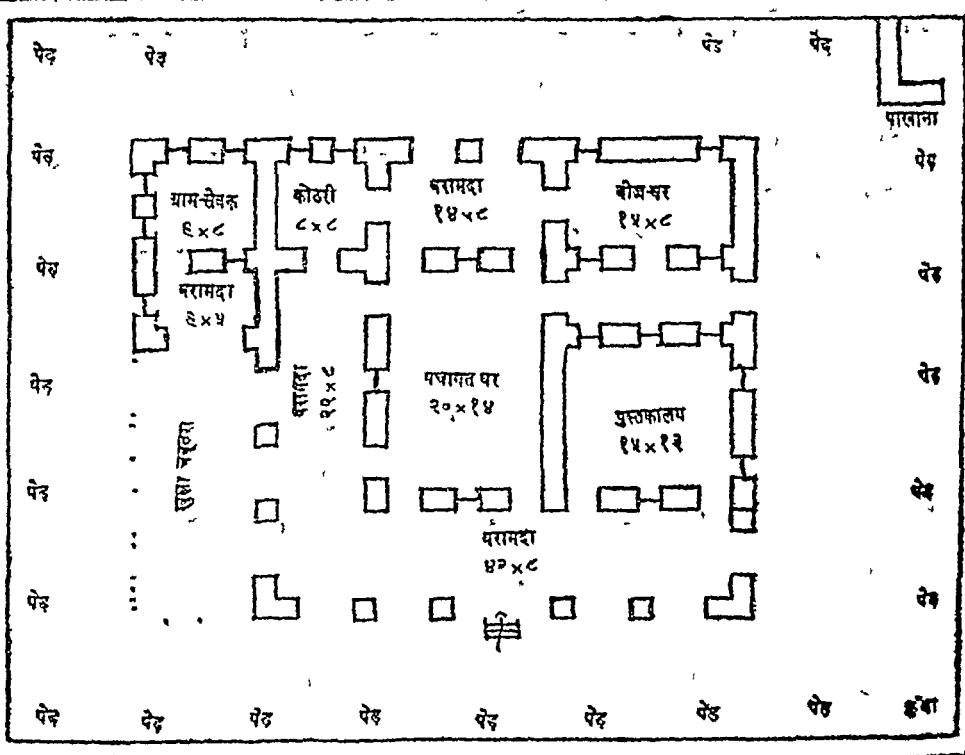
पंचायत-घर का नया नकशा

इस पंचायत-घर का मुँह पूरब तरफ़ और पिछवाड़ा पश्चिम तरफ़ रक्खा गया है। अहाते के बीच में पंचायत-घर है, जो उतना ही बड़ा है, जितना वह सरकारी नक़शे में है। उसके उत्तर तरफ़ पुस्तकालय का कमरा है, जो १५ फुट लम्बा और १२ फुट चौड़ा है। उसके पीछे सरकारी सीड-स्टोर से बड़ा एक बीज घर है। बीज-घर के सामने फुटकर चीज़ों के लिये ८ फुट लम्बी और ८ फुट चौड़ी एक कोठरी है। दोनों के बीच में एक बरामदा है और कोठरी से मिला हुआ उससे कुछ बड़ा एक कमरा और बरामदा ग्राम-सेवक (Organiser) के लिये हैं। उसके पूरब काफ़ी लम्बा-चौड़ा एक खुला चबूतरा है।

पंचायत-घर और पुस्तकालय के सामने एक लम्बा, और पंचायत-घर के दक्खिन एक छोटा, दो बरामदे हैं। सरकारी नक़शे में पंचायत-घर की चौड़ाई और हमारे नक़शे में उसकी लम्बाई सामने पड़ती है। सभा के लिये लम्बाई वाला कमरा ही ज़्यादा सहूलियत का माना जाता है।

अहाता यद्यपि हमारे नक़शे में छोटा दिखाया गया है, पर जगह हो तो वह चाहे जितना बड़ा बनाया जा सकता है। अहाते के एक कोने पर कुँवा और दूसरे कोने पर पाख़ाना है।

इन विशेषताओं के कारण हमारा नक़शा सरकारी नक़शे से ज़्यादा काम का है।

सरकारी हिसाब से पंचायत-घर की कुल तैयारी में ५००) के लगभग ख़र्च बैठेगा। हमारा अन्दाज है कि हमारे नक़शे की इमारत की दीवारें अगर फ़र्श से तीन फुट की ऊँचाई तक एक-एक पक्के ईंटे की तह देकर और बाक़ी सब मिट्टी की या कच्चे ईंटों की बनाई जायँ और लकड़ियाँ भी नीम, जामुन, महुवा या आम ही की लगाई जायँ, जो देहात में बहुत सस्ती मिलती हैं, और छाजन में बाँस भी दिये जायँ तो सरकारी तख़मीने से कम ख़र्च बैठेगा। एक कुँवे का ख़र्च ज़रूर अधिक है, लेकिन

वह अनिवार्य है। बाँस पक्के हों तो साल की बल्लियों से वे ज़्यादा टिकाऊ होंगे।

पंचायत-घरों में गाँव में मिलनेवाला ही सामान लगाना चाहिये, जिससे गाँववाले उसकी नक़ल आसानी से कर सकें।

घरों के नक़शों के बारे में जरूरी हिदायतें

१—पूरब ओर सामना मानकर घरों के नक़शे बनाये गये हैं। पर जिधर खुली जगह हो, उधर सामना कर लेना चाहिये।

२—नकशों मे घरों की जो नाप दी गई है, वह फुटों में भीतर-भीतर है।

३—हरएक दीवार की मोटाई दो फुट की है।

४—दरवाजे प्रायः तीन फुट चौड़े और खिड़कियाँ दो फुट चौड़ी हैं। नहानी और पाखाने के दरवाज़े दो फुट चौड़े हैं। दरवाज़ों की लम्बाई भीतर-भीतर छः फुट से कम न होनी चाहिये। दो फुट चौड़ी खिड़की की लम्बाई तीन फुट की होनी चाहिये। खिड़की १॥ फुट चौड़ी और २॥ या ३ फुट की लम्बी भी की जा सकती है।

५—ऐसे |_| निशान बरामदे के पायों के हैं।

६—दीवार में जहाँ खुली जगह है, वह दरवाज़ा है।

७—H निशान खिड़की का है।

८—ज़रूरत के मुताबिक कोई भी कमरा छोटा-बड़ा किया जा सकता है।

९—ज्यादातर बरामदे ७ फुट चौड़े रक्खे गये हैं। आँगन के इर्द-गिर्द के बरामदे कहीं ५ फुट और कहीं ६ फुट चौड़े हैं।

१०—खिड़कियाँ जिन-जिन जगहों पर होनी चाहियें, वहाँ बना दी गई हैं। पर इच्छानुसार खिड़कियाँ कम भी की जा सकती हैं, और उनकी जगह भी बदली जा सकती है।

झोपड़े

हरएक प्राणी को अपना घर प्यारा होता है, चाहे वह झोपड़ा हो या गुफा। एक झोपड़ेवाले ने पेड़ पर बनाये हुए अपने प्यारे घर की प्रशंसा में यह कविता कही है।—
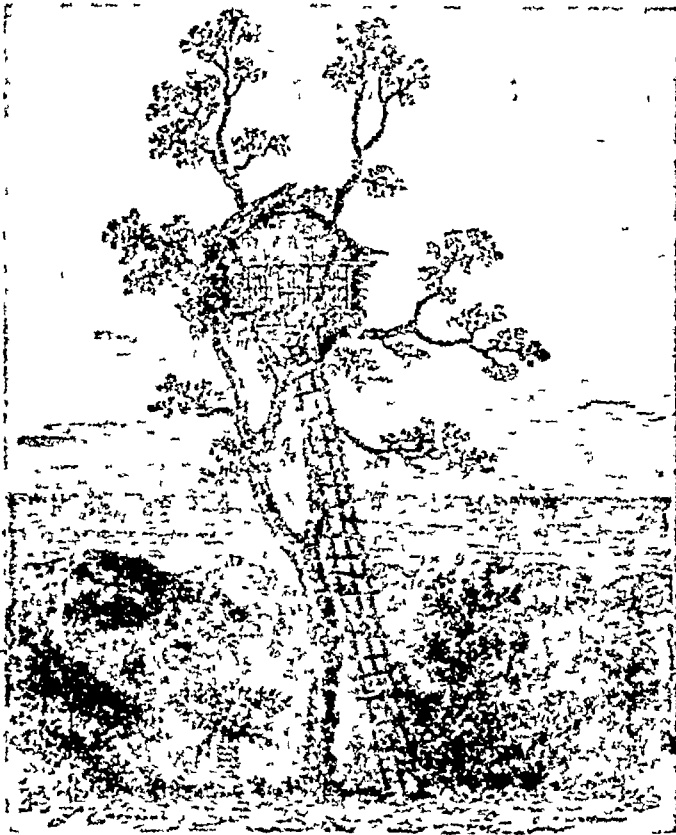
औरों का सोने का घर, मेरा है टूटा छप्पर।

पर सोने से भी बढ़कर, प्यारा लगता है छप्पर।
क्योंकि वही है मेरा घर॥
खुली हवा में डालों पर, रक्खा है मेरा छप्पर।
महलों से भी है सुन्दर, रहता है मेरे अन्दर।
जग में सबसे प्यारा घर॥

अपने झोपड़े का सुख एक किसान की स्त्री ने भी अनुभव किया था—

टूटि खाट, घर टपकत, टटियउ टूटि।
पिय कै बाँह सिर्हनवाँ सुख कै लूटि॥

सच है, सुख न महलों की चीज़ है न झोपड़ों की, वह तो हृदय की चीज़ है।

झोपड़ा मनुष्य के हाथ की सबसे पहली कारीगरी है। जबसे आदमी पैदा हुआ है, तभी से वह झोपड़ों में रहता आरहा है। लकड़ी, पत्थर, ईंट, लोहे और सीमेंन्ट के मकान तो बहुत बाद में बनने लगे हैं।

अगर आग लगने का डर न हो तो मनुष्य के लिये झोपड़ों से बढ़-कर पवित्र और सात्विक भाव उत्पन्न करने वाला कोई दूसरा घर नहीं हो सकता। हमारे ही ऋषि-मुनि नहीं, संसार के प्रायः सभी संत-महात्मा झोपड़े मे रहना पसन्द करते थे।

इस समय संसार के सर्वश्रेष्ठ पुरुष महात्मा गाँधी भी झोपड़े में रहते हैं और अपने झोपड़े मे वे बड़े-बड़े महलों से अधिक सुख अनुभव

करते हैं। उनके झोपड़े का चित्र इस पुस्तक के ऊपरी पृष्ठ पर दिया गया है।

जङ्गली जानवरों के डर से आदमी पहले पेड़ों पर मचान बनाकर रहता था। अब भी कहीं-कहीं जङ्गली लोग मचान-नुमा झोपड़ों ही में रहते हैं। वे रोज सीढ़ी से झोपड़े मे चढ़ते और उतरते हैं।

कहीं-कहीं पानी में भी मचान-नुमा झोपड़े बनाकर आदमी उनमें रहता है।

झोपड़ों की हजारों सूरतें होंगी। हरएक किस्म के झोपड़े में आदमी की बुद्धि ने कुछ-न-कुछ नये चमत्कार दिखलाये हैं।

हिन्दुस्तान के अलग-अलग हिस्सों में अलग-अलग किस्म के झोपड़े देखने को मिलते हैं। उनमें कई झोपड़े बहुत सुन्दर ढङ्ग से बने होते हैं।

संसार के कई मुल्कों और टापुओं के झोपड़ों के कुछ चित्र इस पुस्तक में दिये गये है। उनमे हरएक की बनावट में अलग अलग सौन्दर्य है।

गाँवों के जो ग़रीब मिट्टी के भी घर नहीं बना सकते, वे सुंदर-सुंदर झोपड़े ही बनाकर उसमे रहे, तो उनका जीवन बहुत अंशों में सुखमय हो सकता है। कम-से-कम उनके मन पर उदासी तो न रहेगी।

झोपड़े पर फूलदार लताये, लौकी या दूसरी तरकारियों की बेलें चढ़ाकर वे उसे सुन्दर तो बना ही सकते हैं, तरकारियाँ भी मुफ़्त में पा सकते हैं।

झोपड़े का ठाट अगर बाँस की फट्टियों का बनाकर उसपर रहठे या दूसरे पौधों और नाजों के डंठलों की टट्टियों खड़ी कर दी जायँ और ऊपर से फूस का छप्पर रख दिया जाय तो झोपड़े के भीतर अधिक सफ़ाई रह सकती है।

झोपड़े का फ़र्श आसपास की ज़मीन से एक फुट ऊँचा ज़रूर होना चाहिये; ताकि उसमें बरसात का पानी न जा सके और सील भी न रहे।

झोपड़े में भी खिड़कियाँ बनाई जा सकती हैं। जंगलियों के झोपड़ों के चित्र देखिये, उनमें खिड़कियाँ रक्खी गई हैं।

ग़रीब मज़दूर

बकरियों को रस्सी से बाँधकर छप्पर पर चढ़ा दिया है, ताकि दिन भर की भूखी-प्यासी वे पत्तियाँ चर लें, और कहीं भागें न। बेचारा दिनभर की मेहनत से थका-माँदा शाम का खाना पकाने बैठा है।
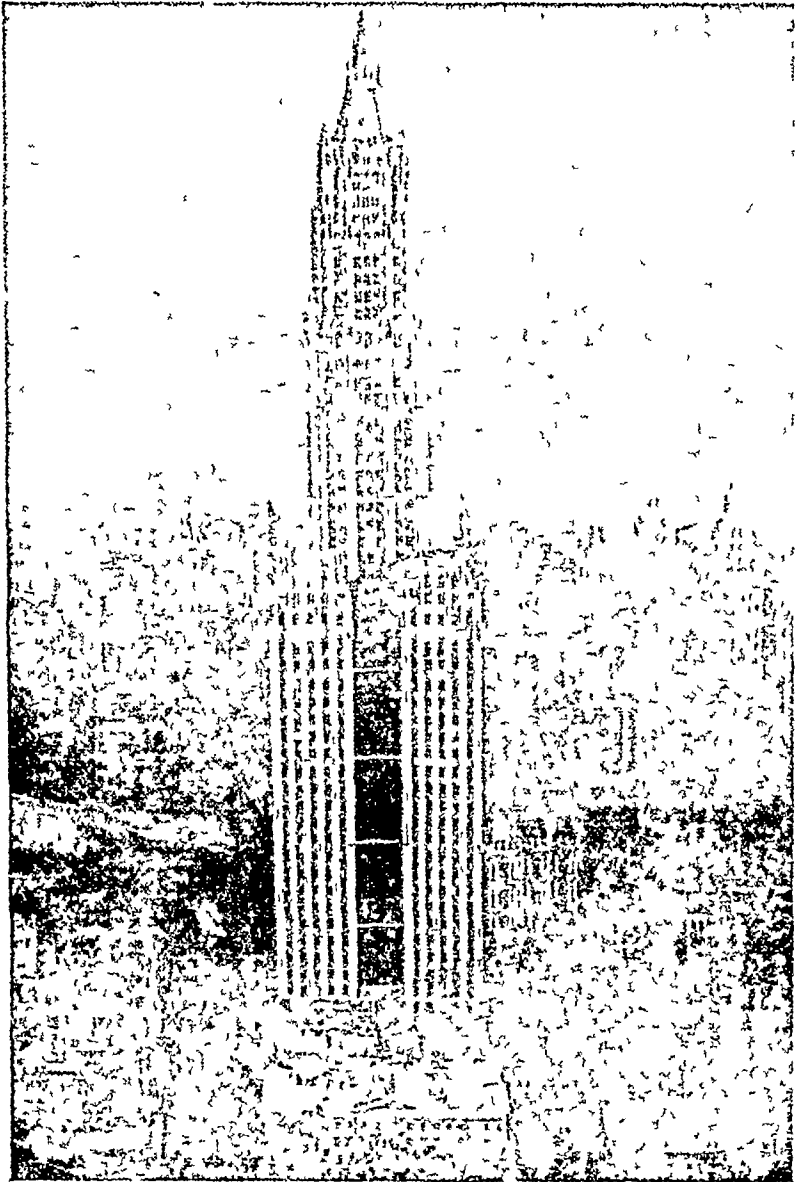
अमेरिका की एक इमारत

यह इमारत ३०० फुट ऊँची और ५५ मंज़िलोंवाली है।

अमेरिका की एक दूसरी इमारत
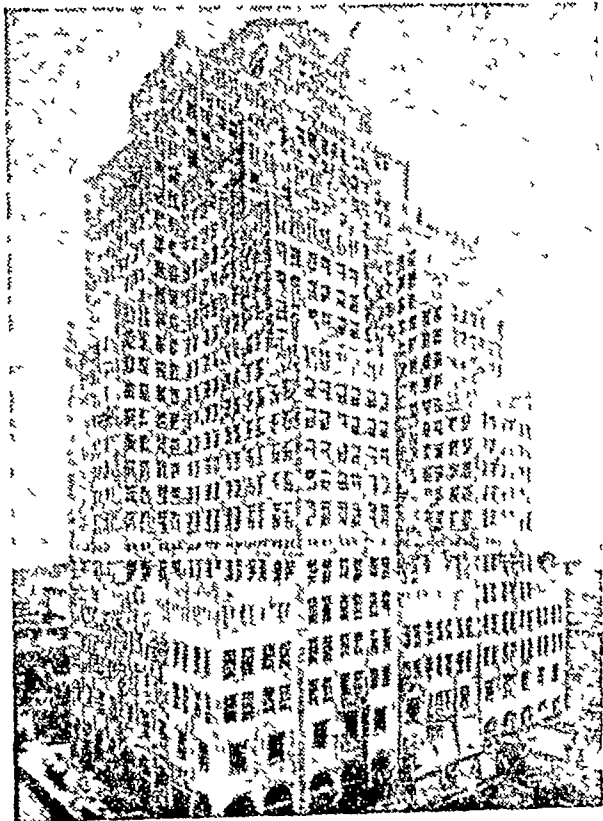
इसे आदमियों का पिंजडा कहना चाहिये। इसके हरएक कमरे पहुँचने के लिए लिफ्ट (बिजली से चलनेवाले कमरे) लगे हुए हैं

जर्मनी के झोपड़े

पुराने ज़माने मे जर्मन लोग दुश्मनो के डर के मारे झील के पानी मे इस तरह के झोपड़े बनाकर उनमे रहते थे। अब उनके मुल्क में इस तरह के झोपड़े केवल इतिहास की पुस्तकों ही में मिलते हैं।

इंगलैंड के एक गाँव का सुन्दर घर

मिट्टी की दीवारों पर फूस का छप्पर कितना सुन्दर लग रहा है। क्या हम इस नमूने के घर नहीं बना सकते ?

दक्षिणी अमेरिका के बोलीविया प्रांत का एक झोपड़ा

बाँस की फट्टियों और बेत आदि का ढाँचा बनाकर और ऊपर चिकनी मिट्टी का लेप चढ़ाकर झोपड़ा तैयार किया गया है।

अनाम के मोई (जंगली) लोगों का झोपड़ा

जगली जानवरों के डर से झोपडा ज़मीन से काफी ऊँचाई पर, मचान की तरह बनाया गया है । जगली होने पर भी मोई लोग काफ़ी सुदर झोंपड़े तैयार करते हैं ।

आस्ट्रेलिया की एक जंगली जाति का झोपड़ा
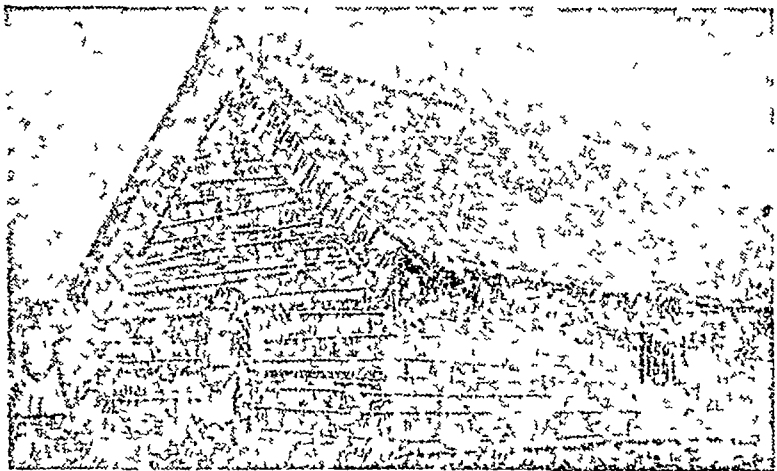
झोपडे के हरएक हिस्से पर छाने वाले की सुरुचि दिखाई पड रही है। यह झोपडा ताड़ के पत्तों और बाँस की फट्टियों से बनाया गया है। सजावट के लिये ताड के पत्ते तरह-तरह के रंगों मे रँग भी लिये जाते हैं।

दक्षिण अफरीका के जूलू लोगों का झोपड़ा
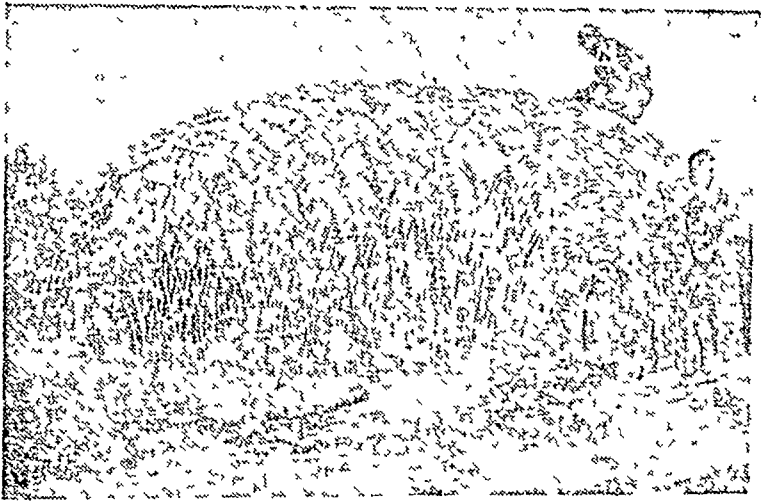
जूलू लोग, जो असभ्य गिने जाते हैं, कितनी सुन्दरता और कारीगरी से झोपड़ा तैयार कर रहे हैं।

योरप के एक जंगली आदमी का घर
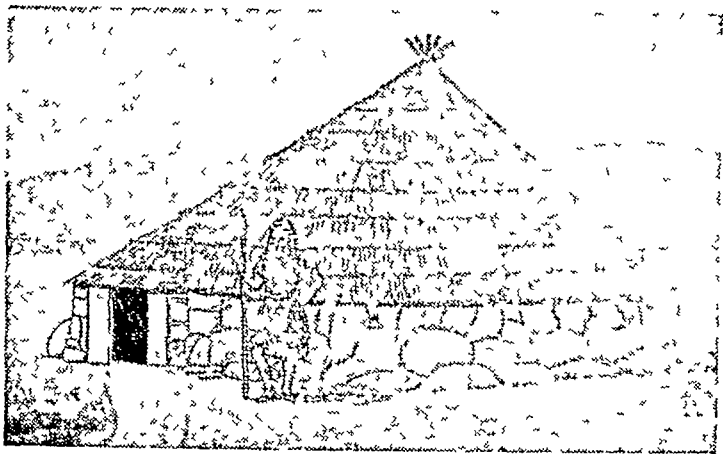
हमारे गाँवों में इतनी सफाई से बने हुये सुन्दर झोपड़े शायद ही कहीं देखने को मिले। घर तक जाने का रास्ता भी कैसा साफ है।

अफ़रीका की एक असभ्य जाति का झोपड़ा

अफरीका के असभ्य लोग अपका सुदर झोपडा तैयार कर रहे हैं। चारों ओर बरामदा है, बीच मे मिट्टी की दीवारो का घर।

मलाया टापू के झोपड़े
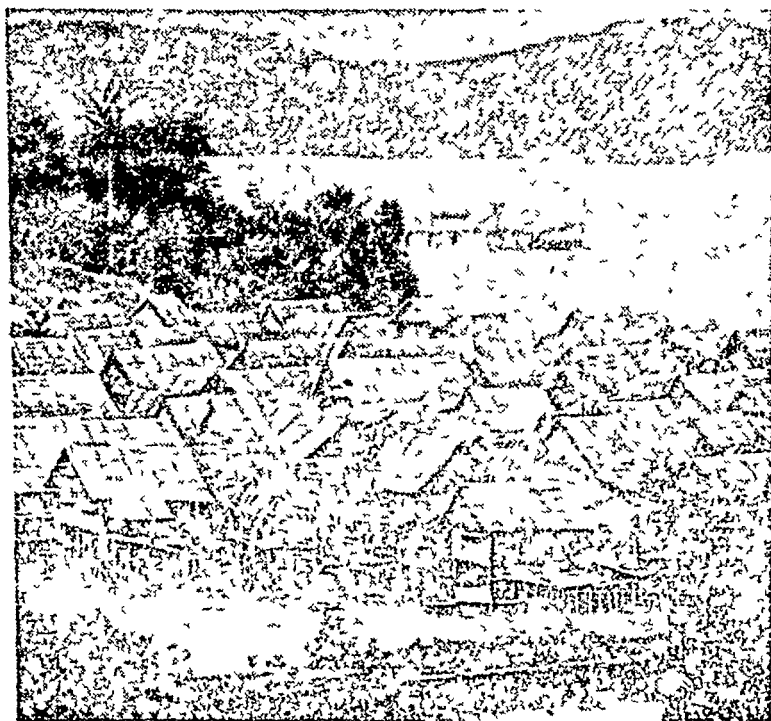
ये सुन्दर-सुन्दर झोपड़े मलाया टापू के लोग पानी मे बनाते हैं, ताकि सवेरे उठते ही उन्हे कलेवे के लिये मछलियाँ मिल जायँ।

कोलम्बिया के एक गाँव का एक सुन्दर घर
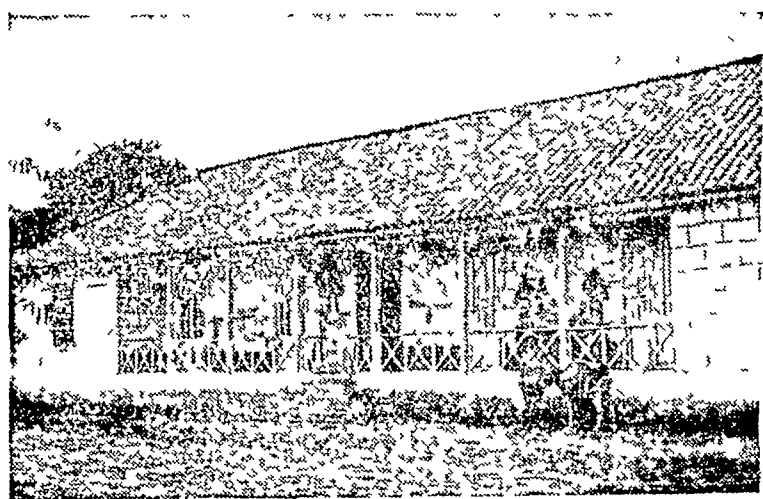
यद्यपि इस घर की दीवारे पक्की हैं, पर कच्ची दीवारों का भी ऐसा ही सुन्दर और सुखदायक घर बन सकता है।

घर की सजावट

घर की सबसे बड़ी सजावट तो सफाई है। जहाँ चीज़ें व्यर्थ इधर-उधर बिखरी न हों, हरएक चीज़ कायदे से रक्खी हो, दीवारों पर थूका न हो, फर्श झाड़ा बुहारा साफ़ हो, वह जगह यों ही प्यारी लगती है। उसे बाहरी चीज़ों से सजाने की ज़रूरत ही नहीं होती।
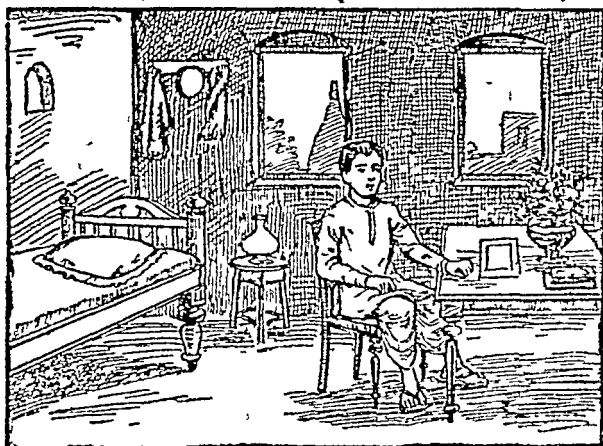
सुन्दर सजा हुआ कमरा

पर मिलने-जुलनेवालों के स्वागत-सत्कार के लिये गृहस्थ को बैठने-बैठाने का कुछ प्रबन्ध तो रखना ही पड़ता है। मिलनेवाले लोग सिर्फ़ घर की सफ़ाई देखने नहीं आते। देहात में उनके लिये लोग आमतौर से बैठक मे खाट या पलँग बिछा रखते हैं, और उन्हीं पर वे बैठते-बैठाते हैं।

किसी-किसी की बैठक में एक तख्ता भी पड़ा रहता है, वह भी बैठने के काम आता है।

पर आजकल कुरसी और मेज का चलन बढ़ गया है। इनसे एक बड़ा सुभीता यह है कि इनको जहाँ चाहे वहाँ आसानी से उठाकर रक्खा जा सकता है तथा हरएक आदमी अलग-अलग बैठ सकता है। मेज़ यों भी एक ज़रूरी चीज़ है। उस पर लिखने-पढ़ने का सामान, लोटा, गिलास या जलपान का सामान रखने में सुभीता होता है।

अतएव बैठक में एक पलँग, एक चौकी, एक मेज़, चार कुरसियाँ और रात के वक्त लालटेन रखने के लिये एक-दो तिपाइयाँ हों तो बैठक की सजावट पूरी हो जाती है।

मिट्टी के घर में दरी, कालीन और गद्देदार कुरसियों का तो प्रश्न ही लाना व्यर्थ है।

सफेदी में कोई हलका रंग, जो आँखों को प्रिय लगे, मिलाकर पोताई कराने से भी कमरे की शोभा बढ़ जाती है।

गरमी के दिनों के लिये हाथ से खींचे जानेवाले पंखे भी धरन या कड़ियों से लटका रखने चाहियें।

बहुत-सी चीज़ें अब बाँस की बनने लगी हैं, जो बहुत सस्ती पड़ती हैं। बाँस की चीज़ें उठाने-रखने में भी हलकी होती हैं और सँभालकर रक्खी जायँ तो टिकाऊ भी होती हैं। गाँव की बैठक में उन्हीं को रखना चाहिये। आगे बाँस की बनी हुई चीज़ों के कुछ चित्र दिये जाते हैं। गाँव के घरकार को दिखलाकर ये चीज़ें गाँव ही में बनवा ली जा सकती हैं :—

बाँस के बने फर्निचर

मेज़—

(१)

(२)

(३)

फल रखने की मेज़

(४)

शृङ्गार करने की मेज़

(५)

(६)

कुर्सियाँ—

(१)

(२)

(२)

(३)
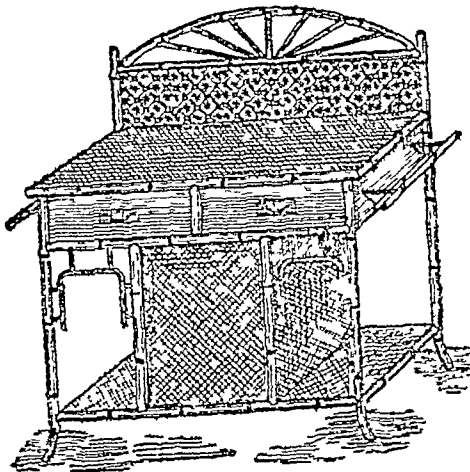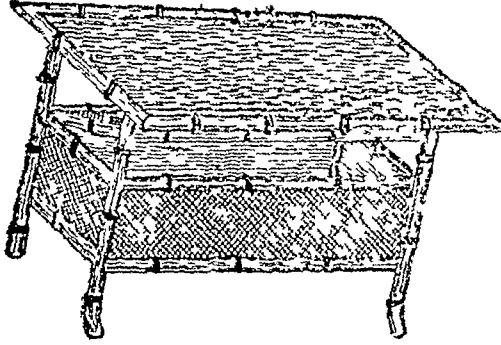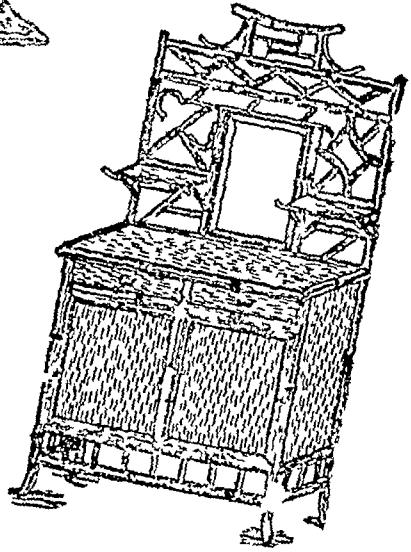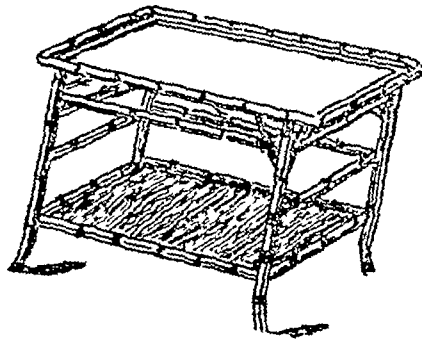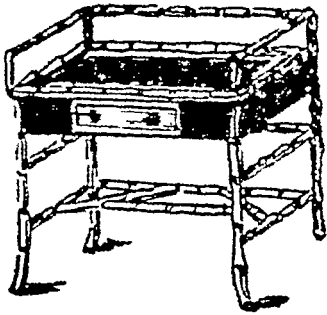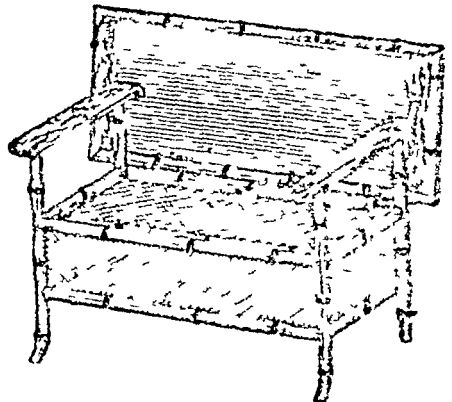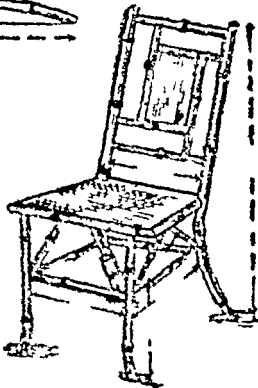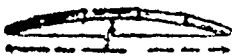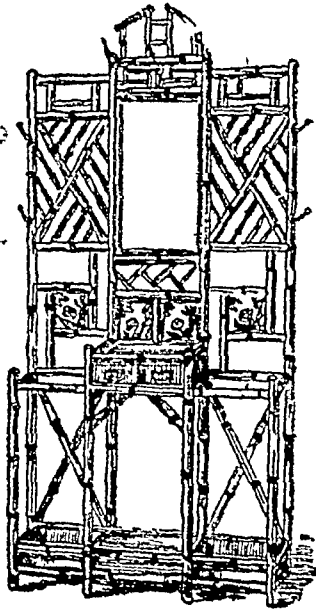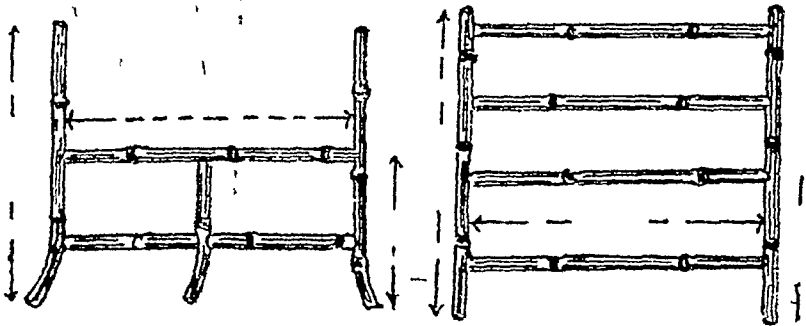
धोती अँगोछा रखने का स्टैंड

तसवीरें

चित्रों से घर की शोभा तो बढ़ ही जाती है, मनुष्य के हृदय पर भी उनका प्रभाव पड़ता रहता है।

सोने के घर मे सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों, जैसे समुद्र-तट, जंगल, झरना, संध्या और सूर्योदय आदि के चित्र टाँगने चाहिये, जिनसे सोने और जागने के समय मन को शान्ति मालूम हो।

स्त्रियों के कमरों में राम-सीता, सावित्री-सत्यवान, उत्तरा-अभिमन्यु, कृष्ण और यशोदा आदि के चित्र टाँगने चाहियें।

बैठक में ऐतिहासिक स्त्री पुरुषों के चित्र टाँगने चाहियें, ताकि बैठक में बैठे हुये लोगों को बात करने का एक अच्छा विषय मिले।

चित्र फ़र्श से ७ या ८ फ़ुट की ऊँचाई पर टाँगने चाहियें।

खाट, पलँग और तख़्ता

खाट छः फ़ुट तक लम्बी और तीन फ़ुट चौड़ी ज़रूर होनी चाहिये। छोटी खाट बड़ी दुखदाई होती है। घाघ ने कहा है।—

नसकट खटिया बतकट जोय।
जो पहिलौंठी बिटिया होय॥
पातर कृषी बौरहा भाय।
घाघ कहैं दुख कहाँ समाय॥

घर में जितने प्राणी हों, सबके लिये एक-एक खाट अवश्य होनी चाहिये। इसके सिवा दो-तीन खाटें आये-गये के लिये फ़ालतू भी रखनी चाहियें।

पलँग तो एक जगह पडे रहने की चीज़ है। इसे सोने के कमरे ही

में पड़े रखना चाहिये। पलँग चार फ़ुट चौड़े और ६॥ फ़ुट लम्बे होने चाहियें।

तख़्ता आम के पल्लों का बनाया जाता है। पल्ले १॥ इंच मोटे, ७ ८ फ़ुट लम्बे और एक फुट चौड़े चुनकर उनसे चार फुट चौड़ा और ७-८ फुट लम्बा तख्ता बनवाना चाहिये। तख्ते की ऊँचाई दो फुट से ज़्यादा न हो।

मेज़, कुरसी और चौकी

मेज़ अगर रखना हो तो उसकी ज़रूरत सिर्फ़ बैठक में पड़ेगी। बैठक के लिये २॥ फुट ऊँची २॥ फुट चौड़ी और ३॥ फुट लम्बी मेज़ ठीक होगी। बाँस की मेज़ इससे ज़रा छोटी होगी।

कुरसियाँ काठ की न खरीदी जा सकें तो बाँस की रखनी चाहियें। मोढे भी देहात में बनते हैं और कुरसी का काम दे सकते हैं।

बैठक में ३ फुट लम्बी, ३ फुट चौड़ी और ६ इञ्च ऊँची एक चौकी भी रखनी चाहिये। बहुत से लोग खाट या पलँग पर नहीं बैठते, वे चौकी पर बैठ सकते हैं।

चौकी नहाने और खाना खाने के काम में भी आती है।

आदर्श किसान कौन है ?

नमूने के गाँव और मिट्टी के घरों के बारे मे हमें जो ख़ास-ख़ास बातें कहनी थीं, उन्हे हम पहले लिख चुके है। अब एक यह दलील सामने है कि सिर्फ खेती की पैदावार से कोई किसान इतने रुपये कैसे बचा सकता है कि वह एक अच्छा घर बना सके। इसी पर हमें विचार करना है।

दस-पाँच बीघे का किसान तो सचमुच कुछ नहीं बचा सकता; बल्कि हरसाल कर्जदार होता जाता है। पर एक औसत दर्जे का किसान अगर समझ-बूझ से चले और घर के आमद-खर्च का हिसाब रक्खे तो वह इतना रुपया बचा सकता है कि चाहे तो वह हरसाल एक नया मकान बनवाता रहे।

४० बीघे खेत जिसके पास हो, हम उसे औसत दर्जे का किसान कहेंगे। मान लीजिये कि उसके परिवार में कुल दस आदमी हैं—उसके माता-पिता, वह खुद, उसकी स्त्री, उसका एक भाई और उसकी स्त्री तथा दोनों भाइयों के चार बच्चे। जानवरों में आठ बैल, एक गाय, एक बछड़ा, एक भैंस, एक पँड़िया और एक घोड़ा, कुल मिलाकर १३ जानवर हैं। इन सब पर पाँच नौकर भी हैं, जो नकद तनख़्वाह के सिवा किसान के घर से दोनों वक्त खाना और कपड़ा भी पाते हैं। किसान यह चाहता है कि वह आदर्श किसान कहाये, इससे वह ख़र्च की काफ़ी मदें रखता है। हमें यह देखना है कि ४० बीघे खेत में वह किस तरह इतनी आमदनी करे कि सालभर का सब ख़र्च बाद देने पर उसे कुछ बच भी जाय।

आगे हम उसके ख़र्च और आमद का एक ब्योरा अंदाज़ से देते हैं।

इसके मुताबिक़ अगर वह अपनी गिरस्ती चला लेता है तो हम उसे आदर्श किसान कहेंगे।

सालभर का नक़द खर्च

उक्त किसान का सालभर का अधिक से अधिक नक़द खर्च इस प्रकार हो सकता है:—

५० बीघे की मालगुजारी ४) फी बीघा	२००)
५ नौकरों का वेतन, फी नौकर ३॥) माहवारी	२१०)
नौकरों के लिये कपडे	२०)
घर के लिये कपड़े	७५)
घी	५०)
दूध ज़ायद	५०)
नमक, घर-खर्च और जानवरों के लिये	१०)
मेला-तमाशा	१०)
लडके-लड़की के विवाह के लिये बैंक मे जमा	५०)
नये बैलों के लिये "	४०)
घर की मरम्मत और सफ़ाई	१०)
बरतन	१०)
लोहार	५)
धोबी	१२)
नाई	१२)
जूते	३०)
दान-पुण्य	१०)
तीर्थ-यात्रा	२०)
गहने	५०)

खाद	५०)
लड़कों की शिक्षा	१०)
पुस्तकें	१०)
अखबार	५)
फुटकर	५)
	६५४)

इस ख़र्च को पाटने के लिये उसे ५० बीघे खेत की उपज में से घर-ख़र्च निकालकर, बाक़ी पैदावार को बाज़ार-भाव से बेंचकर इस प्रकार आमदनी करनी चाहिये :—

सालभर की नकद आमदनी

जिन्स	खेत	उपज	घर-ख़र्च	बचत	दाम
	बीघा	मन	मन	मन	रु०
गेहूँ	१२	१२०	१२०	×	×
जौ-मटर	१०	१००	६०	४०	१२०)
दाल	५	६०	२५	३५	१४०)
धान	५	५०	२०	३०	७५)
सरसों	१	१५	८	७	४२)
चना	५	६०	३६	२४	६०)
गन्ना	१	५० गुड़	१०	४०	२५०)
आलु	१	२०	१५	५	१५)
तमाखू	१	३०	×	३०	२४०)
मसाले	१	५	१	४	४०)
मूँगफली	१	२०	५	१५	३०)
ज्वार, चरी	७				
	५० बीघा	५३० मन	३०० मन	२३० मन	१०१२)

इस हिसाब से काफ़ी खर्च करने पर भी किसान को ५८) साल की बचत हुई। इस रुपये को भी अगर वह बैंक में जमा करता जाय तो १० वर्ष में ब्याज-सहित सवाया से अधिक जमा हो जायगा; जिससे वह अपने बढे हुये परिवार के लिये एक नया घर बनवा सकता है, या जमीन खरीद सकता है, या कोई रोजगार चला सकता है।

मुक़दमे-बाज़ी का ख़र्च नहीं जोड़ा गया है। मुकदमे से तो किसान को बचना ही चाहिये।

ऊपर के हिसाब मे किसान की तरफ़ से एक यह बात उठाई जा सकती है कि आमदनी में दस मन फ़ी बीघा गेहूँ की उपज हमने ज़्यादा आँक ली है। इसके जवाब में हमें यह कहना है कि आदर्श किसान को इतना ही नहीं, इससे अधिक उपज करके दिखलाना पड़ेगा। अमेरिका में फ़ी एकड़ पचास मन तक गेहूँ पैदा किया जाता है। २५--३० मन तक तो कानपुर के सरकारी खेतों मे पैदा करके दिखाया गया है। आदर्श किसान को खेती और ग्राम-सुधार के सरकारी महक़मों से पैदावार बढ़ाने के तरीक़े सीखने चाहियें। गेहूँ आदि की उपज जो घट रही है, उसका कारण किसान की लापरवाही है; न कि भाग्य का दोष, जैसा कि वह समझता है।

खेती ही से आमदनी बढ़ाने के लिये अगर वह एक बीघे में पपीते की खेती करे तो उसे कम से कम २००) साल की आमदनी और हो सकती है। १ बीघे में पपीते के २०० पेड़ लगते हैं। फी पेड़ एक रुपये की दर से भी वह बेच दे तो २००) बिना मेहनत के मिल जायेंगे। पपीते के पेड़ ६ महीने ही से फलने लगते हैं और तीन-चार साल तक फलते रहते हैं।

एक बीघे में काग़ज़ी नीबू के पेड़ लगाकर भी वह अच्छी आमदनी कर सकता है।

घर-खर्च में मनों की जो तादाद लिखी गई है, वह अधिक से अधिक है। जैसे, गेहूँ फ़ी आदमी तीन पाव, गुड़ १ छटाँक और तेल १ छटाँक के हिसाब से रक्खा गया है। वास्तव मे इतना ख़र्च नहीं होता। बच्चे और स्त्रियाँ इतना नहीं खा सकेंगे। इसके सिवा मेहमान आदि के लिये कुछ मन और भी जोड दिये गये हैं। इसी प्रकार जानवरों के लिये फी जानवर १ सेर रोजाना जौ-मटर, एक छटाँक नमक और घोडे के लिये चार सेर रोजाना चने का सालभर मे जो जोड़ होता है, उससे कुछ ज़्यादा ही लिखा गया है। दूसरे खर्च भी कुछ बढ़ाकर ही लिखे गये हैं। सालभर तक मनमाना खर्च करके भी होशियार किसान कुछ गल्ला बचा लेगा। अगर वह चर्खा चलाकर सालभर के कपडे का खर्च निकाल सके तो ७५) साल की बचत और हो सकती है।

हमारे हिसाब से ५० बीघे के किसान को बहुत खुशहाल रहना चाहिये। अगर वह कर्ज़दार और दुःखी है तो वह लापरवाह और मूर्ख है।

पर छोटे क़िसानों की हालत कैसे सुधारी जाय? यह प्रश्न ज़रा टेढ़ा है। इसमें एक बार कानूनी मदद की ज़रूरत पड़ेगी। सरकार को दो बातों के लिये तैयार करना होगा। एक तो खेतों की चकबंदी करना, जिससे किसान के खर्च मे किफायत हो। दूसरे, जिनकी जीविका केवल खेती ही पर निर्भर है, उनके परिवार के फी आदमी पीछे कम से कम ५ बीघे खेत का प्रबन्ध करना। यह तभी मुमकिन है, जब उन लोगों से खेत निकाल लिये जायँ जो दूसरे जरीयों से अपनी रोजी चलाते हैं। जैसे ज़मींदार, बजाज, सोनार, हलवाई वग़ैरह। और ५ बीघे फी आदमी शरह से वे खेत उन किसान-परिवारों को दे दिये जायँ, जो सिर्फ खेती ही पर गुज़र करते हैं।

सरकार चकबंदी को तो शायद स्वीकार भी कर ले, पर दूसरी बात

को सहज में मानने को वह तैयार न होगा। इसके लिये किसानों के ज़बरदस्त आन्दोलन की ज़रूरत है। ऐसी व्यवस्था होने से औसत दर्जे के किसानों की तादाद बढ़ जायगी और देहात की बढ़ी हुई ग़रीबी बहुत अंशों में कम हो जायगी।

ग़रीबी घटने पर अच्छे गाँव बसने और बसाने में तथा सुन्दर सुखदायक घर बनाने में किसी को ज्यादा मग़ज़-पच्ची न करनी पड़ेगी। धन सबसे बड़ा उपदेशक है।

आओ और जाओ की कहानी

दो भाई थे। आपस में अनबन हो जाने के कारण दोनों अलग हो गये। उन्होंने घर का सब माल-असबाब और धन-दौलत आधा-आधा बाँट लिया।

बड़ा भाई बडा आलसी था। वह सबेरे देर तक सोकर उठता था। फिर नहा-धोकर और खा-पीकर अपने निकम्मे साथियों के साथ हँसी-दिल्लगी मे लग जाता था और इसी तरह दिन बिता देता था। घर का काम-काज नौकरों के भरोसे छोडकर वह निश्चिन्त होकर सोया करता था। थोडे दिनों मे वह ग़रीब हो गया।

छोटा भाई बड़ा मेहनती था। वह रोज़ सूरज निकलने से पहले उठता और नौकरों से पहले ही काम पर डट जाता था। नौकर भी उसका काम बडी मुस्तैदी से करते थे और कभी देर करके नहीं आते थे। थोडे ही दिनो मे उसका धन पहले से दूना-तिगुना होगया।

एक दिन दोनों भाई मिले। बात-चीत करते-करते बड़े भाई ने पूछा—हम दोनों को बराबर-बराबर धन मिला था; क्या कारण है कि मैं थोड़े ही दिनों में गरीब होगया और तुमने उतने ही दिनों में दूना-तिगुना धन इकट्ठा कर लिया।

छोटे भाई ने कहा—कोई बड़ा कारण नहीं। एक छोटी-सी बात है, जिससे मेरा धन बढ़ गया और आपका धन घट गया।

बड़े भाई ने पूछा—वह बात क्या है?

छोटे भाई ने उत्तर दिया—आप अपने नौकरों को कहते हैं—
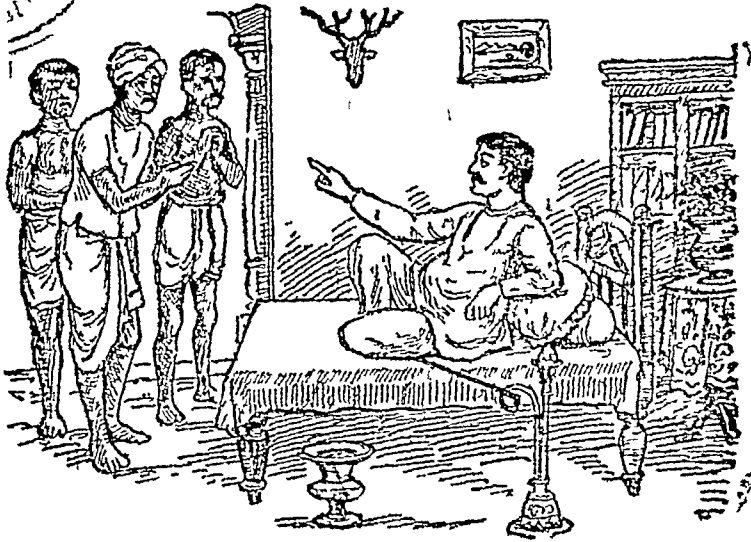
जाओ, काम करो

'जाओ, काम करो'; और मैं अपने नौकरों को कहता हूँ—'आओ,

आओ, काम करो

करो।' आप अपने काम की सँभाल नहीं करते, इसलिये नौकर

जी लगाकर काम नहीं करते। वे देर करके काम पर आते हैं और समय पूरा होने के पहले ही चले जाते हैं।

मैं नौकरों से पहले काम में लग जाता हूँ, इसलिये मेरे नौकर कभी देर करके नहीं आते। और मैं साथ-साथ काम करता हूँ, इसलिये समय से पहले वे कभी काम बन्द नहीं करते। काम के समय वे जी लगाकर मेहनत करते हैं। मैं 'आओ, काम करो' कहता हूँ तो धन आगया। आप 'जाओ, काम करो' कहते हैं, तो धन चला गया। धन तो काम के पीछे है।